राष्ट्र वंदना

क्रमांक	गीत	पान नं
१	वाणी विनय	८
२	राष्ट्र गीत	८
३	(मातृस्तवन) वन्दे त्वां भूदेवीं आर्य मातरम्	९
४	जननी जन्मभूमि तू मेरी	९
५	मम प्राण समा, रमणीय रमा	१०
६	जननी ज्ञान दे, आत्मभान दे	१०
७	जन्मभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि वन्दना	१०
८	जय भारती, जय भारती	११
९	जय हे ! जय हे ! जय हे तेरी	११
१०	जय हो ! जय हो !! जय हो !!	१२
११	जीवन के शक्ति के दाता	१२
१२	दर्शनीय पूजनीय मातृ शत-शत वन्दना	१२
१३	भारत जननी जय !	१३
१४	भारत पुनित भारत विशाल	१३
१५	भारती जय-विजय करे	१४
१६	मातृ मंदिर के पुजारी	१४
१७	माँ तेरी पावन पूजा में	१४
१८	यह देश मेरा, धरा मेरी	१५
१९	यह मातृभूमि मेरी	१५
२०	वन्दे जननी भारत धरणी	१६
२१	वन्दौ श्री भरत भूमि	१६
२२	हे जन्मभूमि भारत	१७
२३	जय जननी जय राष्ट्र भारती	१७
२४	विश्व में गूँजे हमारी भारती	१७
२५	जय सुख करणी सब दुःख हरणी	१८
२६	जननी तुम ही शक्ती हमारी	१८
२७	ममतामयी माँ	१९
२८	कितने ही युग से हे जननी	१९
२९	जय मातृभूमि जीवन भर	१९
३०	जब सारी दुनियां भूली थी	२०
३१	जय भारत वन्दे मातरम्	२०
३२	वन्दना है तत्वदर्शी महर्षियों की भू	२०
३३	जननी स्वर्गादपि गरीयसी	२१

३४	वन्दे राष्ट्र जननि भयहारिणी	२१
३५	जय स्वदेश जय संस्कृति माता	२२
३६	मातृभूमि यह अखण्ड	२३
३७	मातृ-भू की मूर्ति मेरे हृदय मंदिर में विराजे	२३
३८	कोटि स्वर वंदन निरत ओ	२३
३९	जय जय कोटि भुजस्विनी माता	२४
४०	जय जय जय भव भूषण	२४
४१	जय महा मंगले, जय सदा वत्सले	२४
४२	मातृभूमि मनभावन वन्दे	२५
४३	मेरी मातृभूमि मंदिर है	२५
४४	वन-उपवन अनुराग मंजरित	२५
४५	प्रार्थना के स्वर हमारे	२६
४६	**(राष्ट्रार्चन)** कोटि शीर्ष जय कोटि नयन जय	२६
४७	जय हे जगती के प्रथम राष्ट्र	२७
४८	सबसे ऊंची विजय पताका	२७
४९	हम करें राष्ट्र-आराधन	२८
५०	हमको है अभिमान देश का	२८
५१	हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष अमित-शक्ति धारी	२९
५२	राष्ट्रभक्ति ले हृदय में	२९
५३	एक राष्ट्र का चिन्तन मन में	३०
५४	अमरत्व के पुजारी हम पुत्र इस धरा के	३०
५५	गुरू वंद्य महान	३१
५६	नमो नमस्ते, नमो नमो	३२
५७	उन्नत मस्तक नील गगन में	३२
५८	**(ध्वज वन्दन)** जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान	३२
५९	जय ! जय ! जय ! राष्ट्रीय पताके	३३
६०	प्राची के मुख की अरूण ज्योति	३३
६१	राष्ट्र के आधार केतु	३४
६२	वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा	३४
६३	विश्व गुरू तव अर्चना में	३४
६४	हे महान् ! हे चिर महान्	३५
६५	जय जय जय हे ! भगवा ध्वज हे !	३५
६६	भगवा ध्वज है अखिल राष्ट्र गुरू शत-शत इसे प्रणाम	३५
६७	यह भगवा राष्ट्र निशान	३६
६८	विजय ध्वजा फहरे	३६
६९	**(केशव अर्चना)** उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम	३७

७०	केशव ! तुम्हे प्रणाम ! !	३७
७१	घनघोर गर्जना घन समूह	३७
७२	चिरकाल रखें उर में	३८
७३	जलते जीवन के प्रकाश में	३८
७४	देवता तुम राष्ट्र के	३८
७५	धन्य तुम्हारा जीवनदान	३९
७६	पूर्ण करेंगे हम सब केशव	३९
७७	राष्ट्र पुरूष हे युग पुरूष हे	३९
७८	ले नमस्ते ओ उपेक्षित	४०
७९	लो श्रध्दांजली राष्ट्र पुरूष	४०
८०	शून्य पथ पर बढ रही थी	४१
८१	स्मरे राष्ट्र सारा भरे प्रेम से जो	४१
८२	संघ मन्त्र के हे उद्गाता	४१
८३	हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब सा बन जाय	४२
८४	हमें वीर केशव मिले आप जब से	४२
८५	हे भारतीय पथ के प्रदीप	४३
८६	ध्येय देव की दिशा में	४३
८७	लक्ष्य तुम्हारा प्राप्त किये बिन	४३
८८	हे युग द्रष्टा हे महायति	४४
८९	तुमने सोता देश जगाया	४४
९०	मौन नमन हे मौन तपस्वी	४५
९१	दीजिए आशिष अपना	४५
९२	झुक रहे मस्तक चरण में	४६
९३	हर स्वयं सेवक हृदय में	४६
९४	कण कण भी यदि अणु में	४६
९५	ध्येय मंदिर की दिशा में	४७
९६	शत नमन माधव चरण में	४७
९७	**(ध्येय चिंतन)** आज तन-मन और जीवन	४८
९८	एकता आज्ञांकिता का मन्त्र	४८
९९	कण्टक पथ अपनाना सीखें	४९
१००	केसरी बाना सजाये	४९
१०१	जननी जगन्मात की	५०
१०२	जीवन दीप जले !	५०
१०३	तपकर नंदन करें धरा को	५१
१०४	दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी	५२
१०५	देव ! यह आशीष शुभ दो	५२

१०६	ध्येय साधना अमर रहे !	५३
१०७	ध्येय-पथ पर बढ रहे हैं	५३
१०८	निज हृदय का स्नेह कण-कण	५३
१०९	पूत ध्येय का दीप प्रलय की	५४
११०	प्रबल झंजावात में तू	५४
१११	भारत राष्ट्र महान्	५५
११२	मंगल दीप न बुझने पाए	५५
११३	मन समर्पित तन समर्पित	५५
११४	माँ बस यह वरदान चाहिए	५६
११५	मुक्त प्राणों में हमारे	५६
११६	मैं मधु से अनभिज्ञ आज भी	५७
११७	साधना का एक क्षण हूँ	५७
११८	हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही	५८
११९	है अमित सामर्थ्य मुझमें	५८
१२०	है देह विश्व, आत्मा है भारत-माता	५९
१२१	जहाँ दिव्यता ही जीवन है	५९
१२२	ध्येय ने बलिदान के पथ	६०
१२३	प्रश्न बहुत से उत्तर एक	६०
१२४	भावी युग के निर्माता	६१
१२५	राष्ट्रभक्ति के जीवन रस से	६१
१२६	राष्ट्र में नव-तेज जागा	६१
१२७	आज प्राण के दीप जलेंगे	६२
१२८	बाधाओं से भय न हमें	६२
१२९	चल पडे पैर जिस ओर पथिक	६२
१३०	लक्ष्य तक पहुँचे बिना	६३
१३१	**(आकांक्षा)** मातृ मन्दिर का समर्पित दीप मैं	६३
१३२	यातनाओं से किसी की भावनाएँ कब मिटी हैं	६४
१३३	किस रज से बनते कर्मवीर	६५
१३४	चरण कमल पर माता तेरे	६५
१३५	यह कंकड-पत्थर-रेत नही !	६६
१३६	स्वेद, शोणित और आँसू	६६
१३७	तंत्र है नूतन भले ही	६६
१३८	निर्माणों के पावन युग में	६७
१३९	हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक	६७
१४०	ज्योतिर्मय कर दो	६८
१४१	युग युग से स्वप्न संजोये जो	६८

१४२	गहन रात बीती मिटा घन अँधेरा	६८
१४३	उगा सूर्य कैसा ?	६९
१४४	हो गये है स्वप्न सब साकार	६९
१४५	जल उठी अखण्डित ज्योति	७०
१४६	मैं बिपिन का फूल मुझको	७०
१४७	एक नया इतिहास रचें हम	७१
१४८	पथिक अनथक जा रहा	७१
१४९	शुध्द सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है	७२
१५०	हम केशव के अनुयायी है	७२
१५१	पथ का अन्तिम लक्ष्य नही है	७३
१५२	(उद्‌बोधन) अब तक सुमनों पर चलते थे	७३
१५३	अरे साधक ! साधना कर !	७४
१५४	उठो वीर अब सिंहनाद कर	७४
१५५	कर रहा हिमवान फिर आह्‌वान	७५
१५६	चल रहे हैं चरण अगणित	७५
१५७	जन–जन के मन का तर्पण हो	७५
१५८	जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान	७६
१५९	जाग हिन्दुस्थान सोये	७६
१६०	जिसने मरना सीख लिया है	७७
१६१	जीवन दीप वर्तिका तन की	७७
१६२	तरूण वीर देश के	७८
१६३	देश प्रेम के मतवालों को	७८
१६४	ध्येय मार्ग पर चले वीर तो	७८
१६५	पंथ स्वयं आयेगा	७९
१६६	पूज्य माँ की अर्चना का	७९
१६७	बढ रहे हैं हम निरन्तर	७९
१६८	मेरी चिर–साध सफल करदे	८०
१६९	विजय के गीत गाता चल	८१
१७०	विश्व–गगन में युवक प्रवर हे !	८१
१७१	साधना के देश में	८२
१७२	साधना पथ पर बढे हम	८२
१७३	सोता देश जगा दे	८२
१७४	हम आज प्रगति की ओर चलें	८३
१७५	हम नवयुग का आहवान करें	८३
१७६	हिन्दु युवको ! आज का युगधर्म	८४
१७७	साधना का पथ अगम है	८४

१७८	प्रेरणा की यह घडी !	८५
१७९	जीवन बन तू दीप समान	८५
१८०	तन अर्पित है तो मन्दिर	८६
१८१	दे रही माँ रण निमंत्रण	८६
१८२	एक-एक पग बढते जायें	८६
१८३	ये उथल पुथल, उत्ताल लहर	८७
१८४	दसों दिशा में जायें	८७
१८५	हम शीत गया है बीत	८८
१८६	आज यही युग धर्म हमारा	८८
१८७	माँग रही है माँ बलिदान	८९
१८८	राष्ट्र भक्ति के अमर सिपाही	८९
१८९	माता ने हमें पुकारा है	९०
१९०	न हो साथ कोई	९०
१९१	एक बार करवट तो बदलें	९१
१९२	प्रलय की कर गर्जना	९२
१९३	सतंत्रता को सार्थक करने	९२
१९४	प्रगति-पथ पर रे तरूण	९२
१९५	**(प्रासंगिक)** शपथ लेना तो सरल है	९३
१९६	अभिनन्दन ! जन-मन रञ्जन	९३
१९७	आज कैसी शुभ घडी है	९४
१९८	आज पूजा की घडी है	९४
१९९	आज मनाएँ रक्षाबन्धन	९५
२००	राष्ट्र की ध्वजा के आधार स्तम्भ रे !	९५
२०१	ओ विजय के पर्व !	९५
२०२	चिर विजय की कामना ही	९६
२०३	पावन हिन्दु साम्राज्य-दिवस	९६
२०४	विजय का यह पर्व आया	९६
२०५	संगठन सूत्र में मचल-मचल	९७
२०६	संघ शक्ति दिव्य रूप	९७
२०७	दुर्दम्य होंगी जब आशा आकांक्षा	९८
२०८	राष्ट्र की जय चेतना	९८
२०९	विजिगीषा को गन्ध लेकर	९९
२१०	बन्धनकारी पाश नही यह	९९
२११	स्वागत है शिवराज ! तुम्हारा	१००
२१२	बन्धु ! रूक मत जाना	१००
२१३	**(संचलन-गान)** ओ नौजवान ! देश के उठो	१०१

२१४	पंथ है प्रशस्त, शूर साहसी	१०२
२१५	नवीन पर्व के लिये	१०२
२१६	हिन्दुभूमि ये वन्दनीय है	१०२
२१७	हिमाद्री तुङग–श्रुङग से	१०३
२१८	ज्योति जला निज प्राण की	१०३
२१९	ज्योति ये जले	१०३
२२०	बढे चलो, बढे चलो,	१०४
२२१	पुकारता तुम्हें वतन	१०५
२२२	मातृभूमि गान से गूँजता रहे गगन	१०५
२२३	अनेकता में एकता	१०६
२२४	जल रही युगों से जो	१०६
२२५	बढ चलो जवान	१०६
२२६	विस्तृत भारत सारा	१०७
२२७	चन्दन है इस देश की माटी	१०७
२२८	मुक्त हो गगन सदा	१०८
२२९	संघ चाहता, कि व्यक्ति	१०८
२३०	अरूणोदय हो चुका वीर अब	१०८
२३१	अनेकता में ऐक्य मंत्र	१०९
२३२	लोकमन संस्कार करना	१०९
२३३	हम आजादी के रखवाले	११०
२३४	सदियों के पश्चात आज फिर	११०
२३५	**(नवीन गीत)** हे जन्म भूमि तेरे	१११
२३६	मातृ चरणों में समर्पित	१११
२३७	हम भारत माँ की सन्तान	११२
२३८	हम कंचन हैं काँच नही है	११२
२३९	संस्कृति सब की एक चिरंतन	११२
२४०	भारत एक हमारा	११३
२४१	राष्ट्र देव का ध्यान धरें	११४
२४२	हिन्दु हम सब एक	११४
२४३	इसी देश से हमको प्यार	११५
२४४	लक्ष्य लक्ष्य बढते चरणोंके	११५
२४५	हिन्दु जगे तो विश्व जगेगा	११६
२४६	जय घोष संस्कृतिका	११६
२४७	यहीं मंत्र है यही साधना	११७
२४८	राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम	११७
२४९	चलें चलें ! चलें चलें हम निशि दिन अविरत	११७

२५०	व्यक्ति व्यक्ति में जगाये राष्ट्र चेतना	११८
२५१	इस धरती को जिसने माना	११८
२५२	चल तू अपनी राह पथिक चल	११९
२५३	आराधना, आराधना	११९
२५४	हो जाओ तैयार साथियों हो जाओ तैयार	११९
२५५	हर–हर बम बम, हिन्दु बाकुरें हैं हम	१२०
२५६	भारती के चिरविजय का नाद नभ में भर रहा	१२०

१) वाणी विनय

वीणा वादिनी वर दे ।
प्रिय स्वतन्त्र रथ, अमृत मन्त्र नव, भारत में भर दे ॥ वीणा ...
काट अंध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्भर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे ॥
वीणा वादिनी वर दे ।
नव गति नव लय, ताल छंद नव, नवल कंठ, नव जलद, मंद्र रव ।
नव नभ के नव विहंग वृंद को. नव नभ के नव पर नव स्वर दे, वर दे ॥
वीणा वादिनी वर दे ॥

२) राष्ट्रगीत

वन्दे मातरम। ।
सजलां सुफलां मलयज शीतलां , सस्य शामलां, मातरम। ॥ वन्दे...
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी, फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुर भाषिणीम्, सुखदां, वरदां मातरम् ॥ वन्दे मातरम्
कोटी कोटी कंठ कलकलनिनद कराले, कोटि कोटि भुजै धृत कर वाले
के बोले माँ तुम अबले, बहुबल धारिणीं, नामामि तारिणीं, रिपुदल वारिणीं, मातरम् ॥ वन्दे...
तुमि विदया तुमी धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म, त्वंहि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि माँ शक्ति, हृदये तुमि माँ भक्ति
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे मातरम॥ वन्दे मातरम्
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणीं, कमलां कमलदल विहारिणीं
वाणी विदया दायिनीं, नमामि त्वां, नमामि कमला अमलां अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम् ॥ वन्दे मातरम्
श्यामलां, सरलां, सुस्मितां भूषितां, धरिणीं भरणीं मातरम् ॥ वन्दे मातरम्

मातृ-स्तवन

३) वंदे त्वां भूदेवी

वन्दे त्वां भूदेवी आर्यं. मातरम । जयतु भवतु पद-युगलं ते निरन्तरम् ॥
शुभ्रशरच्चन्द्रयुक्त-कुसुम-मृदुल-दाम शोभिनीम। ।
मन्दस्मितयुक्त-वदन मधुर भाषिणीम् । सुजलां, सुफलां, सरलाम्, शिववरदां, चिरसुखदाम,
मुकुलरदां, आर्यमातरम। ॥ वन्दे ॥ १ ॥
हिमनगजां, स्वाभिमान-बुध्दीदायिनीम्, सहपृतनां, अमित-भुजां, तनय-तारिणीम।
कमलां, अमलां अतुलाम्, बलकरणीं, रिपुहरणीम। मददमनीं, आर्यमातरम। ॥ वन्दे ॥ २ ॥
धमस्त्वं, शर्म त्वं यशोबलम्, शक्तिस्त्वं, भक्तिस्त्वं, कर्म चाखिलम,
प्रति सदनं प्रतिमाते, त्वं महाफलम्, धरणीं, भरणीं जननींम, कवि प्रतिभां मति सुलभाम्,
जगदम्बां, राष्ट्रमातरम् ॥ वन्दे ॥ ३ ॥

४) जननी जन्मभूमि तू मेरी

जननी जन्मभूमि तू मेरी, प्राणोंसे भी प्यारी है ॥
रत्नाकर चरणोदक लेकर. सदा शान्ति बरसाता है ।
अचल हिमालय खडा स्वर्ग तक, अटल भक्ति दर्शाता है ।
आकर के वसंत चरणों में, अपनी भेंट चढाता है ।
एक-एक रज कण भी तेरा, गौरव पाठ पढाता है । तेरी कीर्ति कथा कहने में ।
सदा शारदा हारी है ॥ जननी
मञ्जु मलय मारूत के झोंके, स्वर्गभूमि से आते है ।
पुण्यप्रसु ! तेरे दर्शन का, सुख सहर्ष ले जाते है ।
प्रेमाकुल से शरदश्याम घन, उमड-उमड कर आते है ।
सुभगे ! तव पद कमलों में ही, शान्ती अन्त में पाते है ।
अधिक कहें क्या तेरी शोभा, स्वर्गलोक से न्यारी है ॥ जननी
सुरभीपूर्ण तव दिव्य तपोवन, किसका मन न चुराते है ।
भांती-भांती के गान भक्तिमय, विहग वृन्द सब गाते है ।
तब फिर नन्दन वन सजता है, और देवगण गाते है ।
जय-जय भारत भूमि जयति जय, कह कर मोद मनाते है ।
रीम झीम कर निशानाथ ने, तव आरती उतारी है ॥ जननी
तेरी ही गोदी में आकर, हरि ने गीता ज्ञान कहा ।
तेरी ही गोदी में माता, प्रथम सभ्यता स्त्रोत बहा ।
तेरी ही गोद में माता, वीर विक्रमी हुए महा ।
तेरी ही गोद में खेले, रण-बांके रणधीर यहाँ ।
मेरा रोम रोम है माता, तेरा ही आभारी है ॥ जननी

५) मम प्राण समा रमणीय रमा

मम प्राण समा, रमणीय रमा । देश जननी मोहिनी । प्रणमामित्वां, विशालां, विमलां,
गंगा हिमगिरी, गंगा हिमगिरी शोभिनी ॥
विश्व शिक्षिका, निस्व रक्षिका, शिष्य पूर्ण तपोवना, वेद वन्दिता मन्त्र मंद्रिता
ऋषि पाद-रेणु रमणा ॥ १ ॥
शोक भंजिनी, लोक रंजिनी, धरणी प्राण नंदिनी, जलधिं सिंचिनी, त्रिदिव गंजिनी,
पुण्यामृत स्पंदिनी ॥ २ ॥
कल्याण करा, कलुष हरा, साम्य मंत्री मधुघना, हृत पराजया, धृत वराभया,
महामातृ सधिधना ॥ ३ ॥

६) जननी ज्ञान दे, आत्मभान दे

जननी ज्ञान दे, आत्मभान दे, तेरी नित रहे तान, वही गान दे ॥ धृ ॥
तन में बल, मन निश्चल, सगुण सकल, यत्न सफल,
अटल, सुदृढ निश्चय दे, पुण्य प्राण दे ॥ १ ॥
स्वाभिमान हम न तजें, तदपि निरभिमान रहें,
त्याग, तप, सहिष्णुता, बलिदान दे ॥ २ ॥
भाव दीजिये गंभीर, बने सकल धीर वीर !
तेरी अनुरक्ति, भक्ति, विमल ध्यान दे ॥ ३ ॥
चरणों में शीश घरें, मन में नित ध्यान करें,
तेरे हित जियें मरें, विजय दान दे ॥ ४ ॥

७) जन्मभूमि, मातृभूमि, पितृ भूमि वंदना

जन्मभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि वन्दना
रामभूमि, त्यागभूमि, भाग्यभूमि अर्चना ॥ धृ ॥
विश्व में उठा हिमाद्री का विशाल भाल है, सिंधु, ब्रह्म-पुत्र गंगधार कंठ-माल है
है समुद्र धो रहा, सदैव पांव चूमता, फूल है चढा सुगंध पा समीर झुमता,
चांदनी हँसी मिली, वायु प्राण सी खिली, है तुझे निहार स्वर्ग की, समस्त कल्पना ॥ १ ॥
धाम, मेंहधार शीत और हेमवन्त है, पत्र, झाड, फूल गूँथता हुआ वसन्त है
है गंम्भीर गर्जना, कभी सरस फुहार है, वंचला चमक, कभी सुरम्य इन्द्रहार है,
आरती उतारती, वेश को संवारती, मूर्तिमान हो गई, जहाँ स्वरूप कामना ॥ २ ॥
देश में अनेक वर्ग-वर्ण जाति, धर्म है, भाव है अनेक बोल हैं अनेक कर्म है
कोटि-कोटि रूप में, परन्तु एक प्राण है, मान एक ज्ञान एक, ध्यान एक, गान है
आज एक शक्ति है, एक भाव भक्ति है, कोटी-कोटी प्राण की, अभिन्न आज भावना ॥ ३ ॥
आज लक्ष-लक्ष का जिसे बाहुबल मिला, कौन कह रहा कि वीर भूमि ाज निर्बला
आज जागरण हुआ कि हम सदा स्वतन्त्र है, आज लोक के स्वीकार तंत्र-मंत्र-यंत्र है
आज एक कल्पना, आज एक चिन्तना, आज अर्चना यही, समस्त सिध्दी साधना ॥ ४ ॥

८) जय भारती, जय भारती

जय भारती, जय भारती
स्वर्ग ने थी जिस तपोवनकी उतारी आरती ॥ धृ ॥
ज्ञान-रवि किरणें जहाँ फूटी प्रथम विस्तृत भुवन में,
साम्य सेवा भावना सरसिज खिला प्रत्येक मन में,
मृत्यू को भी जो अमर गीता गिरा ललकारती ॥ १ ॥
ध्यान में तन्मय जहाँ, योगस्थ शिव सा है हिमालय
कर रही झंकार पारावार वीणा, दिव्य अव्यय
कोटि जन्मों के अधों को जान्हवी है तारती ॥ २ ॥
कंस-सूदन का सुदर्शन, राम के शर, भीम भैरव
त्याग राणा का, शिवा की नीति, बंदा का समर रव
ज्वाल जौहर की शिखा, जिसकी विजय उच्चारती ॥ ३ ॥
असुर-वंश-विनाशिनी, तू खंग खप्पर धारणी 'माँ'
ताण्डवी उस रूद्र की तू अटट्हास विहारिणी 'माँ'
शत्रु-दल की मृत्यु वेला आज तुझको पुकारती ॥ ४ ॥

९) जय हे ! जय हे ! जय हे तेरी

जय हे ! जय हे ! जय हे तेरी । सुन्दर सुभग सुहागन माँ ।
शुभ्र मुकुट हिम माथे शोभित, सागर लहरे नित पग धोवत,
गंगा यमुना सिन्धु नर्मदा, जयमाला बन मन को माहित,
शस्य शामला षट्ऋतु वाली, हरा भरा तब कानन माँ ॥ १ ॥
आदि पुरूष मनु के पुत्रों की, वेदों की वरदानी वाणी,
अष्ट-सिध्द नव-निधियों वाली, अन्नपूर्णा जग कल्याणी
नीलम नयना, उज्जवल वसना, शीरद् ज्योत्स्ना आनन माँ ॥ २ ॥
शीश अनेकों झुके चरण में, आशिष माँगे पडे शरण में,
तेरी कीर्ति पताका माता, ऊंची फहरे नील गगन में,
तेरा मंगलमय शुभ मंदिर, हो जग-वन्दित भारत माँ ॥ ३ ॥
तन-मन-धन और निज जीवन से, निशि-दिन के क्षण-क्षण चिन्तन से
अक्षय दीप जलाएँ अगणित, विकसित नव जीवन यौवन से
ज्योतित कर दे, आशा भर दे, कण-कण में अति पावन माँ ॥ ४ ॥

१०) जय हो ! जय हो !! जय हो !!!

जय हो ! जय हो !! जय हो !!!
प्राचीन देश तेरे स्वरूप में, हम सबका लय हो, जय हो, जय हो, जय हो ॥ धृ ॥
गंगा की यह पावन धारा, विन्ध्य हिमालय पर्वत माला,
जन-जन के हर सुप्त हृदय में, अमर ग्यान का अभ्युदय हो ॥ १ ॥
शंकर, राम, विवेक की माता, वेद, उपनिषद् की तू दाता,
वही दिशा, वही राह अब, जन-जन का तीर्थ-स्थल हो ॥ २ ॥
जब तक धरती के आँचल में, मानव की एक याद रहेगी;
अमर रहेगी तेरी स्मृतियाँ, अमर रहेंगी समर रहेगी,
काल चक्र की सीमित गति के, जागे तेरा क्रम हो ॥ ३ ॥

११) जीवन के शक्ति के दाता

जीवन के शक्ति के दाता, तोरे हूँ मैं यश गाता । जय जय जय भारत माता ॥
सिर पर मुकुट हिमालय, चरणों में सोने की लंका, कंठ में नदियों की माला ॥
तेरे मंदिर सुहाने, और खण्डहर पुराने, याद दिलाते है हमको, राम-राज्य के जमाने ।
भगवा ध्वज है गुरू हमारा, था संसार में लहराता ॥ जीवन के शक्ति के दाता
मातृभूमि तू हमारी, पुण्यभूमि ती हमारी, तेरे मंदिर के मैय्या, चालीस करोड है पुजारी।
तभी ये देश वीरों का, हिन्दुस्थान है कहाता ॥ जीवन के शक्ति के दाता
तन-मन-प्राण ये हमारे, आवें काम में तिहारे, गुरूगोविन्द शिवा की भांती हो,
बलिदान तुझ पर सारे, यह वरदान दो विधाता, हो समृध्द मेरी माता ॥

१२) दर्शनीय पूजनीय मातृ शत-शत वन्दना

दर्शनीय पूजनीय मातृ शत-शत वन्दना ॥ कोटि कंठों से सुनो, समवेत जननी प्रार्थना ॥
मानसर योगी-शिला से, ब्रह्म-नद से सिन्धु तक,
कोटि क्षेत्रों से जुटाये, पत्र फल और पुष्प-जल, भक्ति नवधा सूत्र में, बाँधी सुमन आराधना ॥
धवल हिमगिरि के शिखर से, नीलगिरि की श्यामता,
सिन्धु के सिकता कणों से, दीप्त मणिपुर की प्रभा, सप्त रंगों से सँवारी,
इन्द्रधनु की कल्पना ॥
धूल का अंधड उडाता, ग्रीष्म क्रूराबेग से, कडकडाते पश्चिमी झोंके तनों को वेधते,
सावनी रिमझिम बसंती राग की संयोजना ॥
विविधता से एकता का, पुष्ट 'माँ' आधार तुम, भक्ति विव्हल वीर-जन की,
इष्ट 'माँ' साकार तुम, चर्तुवर्णों के फलो की मूल की 'माँ' साधना ॥

१३) भारत जननी जय

भारत जननी जय । भारत जननी जय ।
तेरे आँचल मे पलते है, अंग–अंग के वासी,
जयति उर्वरे, अन्नपूर्णा शक्तिदायिनी जय, भारत जननी जय ॥ १ ॥
हिमकिरिट तव हरित कंठ पर शोभित विंध्याचल माला,
सागर स्वतन्त्र हो मतवाला, वन्दन शत–शत वन्दन भारत
जननी जय जय जय, भारत जननी जय ॥ २ ॥
गंगा यमुना, महानदी, कृष्णा, सिन्धु कावेरी,
शिखर तीर्थ काशी तक गाती
पावन महिमा तेरी, हरा–भरा वक्षःस्थल तेरा,
जननी जय जय जय, भारत जननी जय ॥ ३ ॥

१४) भारत पुनित भारत विशाल

भारत पुनित भारत विशाल, उत्तर में है धलल हिमांचल, निर्भर चन्चल,
गंगा का जल, यमुना का जल, गौरी शंकर धर विश्व मुकुट खडा घर,
है चँवर दुलाती मेघमाल ॥ १ ॥
दक्षिण में है भारत पदतल, नील जलोत्पल, लंका का स्थल,
लंका का जल, शुध्द चरण तल, हरता कालिमल, निशिदिन पलपल,
संसार झुकाता जिसे भाल ॥ २ ॥
पूर्व दिशा में ब्रह्मा प्रान्तर, कानन सुन्दर, प्रातः उठकर हँसे दिवाकर
मित्र बन्धुवर खडे दवार पर, उनसे मिलकर भुज बन्धन भर
युग–युग से जग में है निहाल, ॥ ३ ॥
पश्चिम में है सिन्धु सुमंगल, स्निग्ध सिंधु जल, करता कल–कल,
भरता छल छल, जहाँ दिवाकर, जल अंजुली भर,
हो उठता आनन लाल–लाल ॥ ४ ॥
भीतर आंगन भरा फूल से, स्वर्ण–धूल से, नदी कूल से वन दुकुल से
जहाँ राम थे, मधुर श्याम थे, पूर्ण काम थे शक्ति धाम थे,
ठरता था जिनसे महाकाल ॥ ५ ॥
ऊपर नभ में नील गगनतल, रवि–शशि उज्जवल, है तारक–दल
नीली चादर फहरे उडकर, गिरिवर तरू पर सूखे मरू पर,
फैला दिशि–दिशि सौंदर्य जाल ॥ ६ ॥
भारत वासी जहाँ कोटि जन, जिनका यौवन जिनका जीवन
सब कुछ अर्पण स्वतंत्रता पर, दिये जलाकर तेरे घर–घर
माँ ! वन्दन करते वृध्द बाल ॥ ७ ॥
मातृभूमि यह पितृभूमि यह, अमर भूमि यह समर भूमि यह
जिसका जन–जन जिसका कण–कण
जग को अर्पण दृढवती सदा से नोनिहाल ॥ ८ ॥

१५) भारती जय-विजय करे

भारती जय-विजय करे, कनक शस्य कमल घरे । भारत जय-विजय करे ॥ धृ ॥
लंका पदतल शतदल, गोर्जितोमिं सागर लल, धोता शुचि चरणयुगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे, भारत जय-विजय करे ॥ १ ॥
तरू तृण बन लता वसन, अंतर में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्ज्जर्वल कण, धवल-धार हार गले, भारती जय विजय करे ॥ २॥
मुकुट शुभ्र हिम तुषार, प्राण प्रणव ॐकार,
ध्वनित दिशायें उदार, शतमुख शतरव बिखरे, भारती जय विजय करे ॥ ३ ॥

१६) मातृ मंदिर के पुजारी, वन्दना किस विधि करे

मातृ मंदिर के पुजारी, वन्दना किस विधि करे ।
ध्येय प्रतिमा को हृदय में, आज हम किस विधि घरें ॥
धवल हिम मय भाल तेरा, साधना का है बसेरा,
मौन हो निज को गलाकर , भूमि पर अमृत बिखेरा,
बन ब्रह्मपुत्र और सिन्धु गंगा, नर्मदा कावेरी माँ, ॥ १ ॥
शस्य श्यामल वक्ष तेरा , मौन सेवा का बसेरा
वत्सले तूने युगों से, अन्न निज घर-घर बिखेरा
लक्ष्मी रूपें अन्नपूर्णे, अम्बिके तू प्यारी माँ ॥ २ ॥
सिन्धु तेरे चरण , छूकर कर रहा यशनाद तेरा
ऋषिजनों ने ज्ञान-रवि से धर्म किरणों को बिखेरा
ज्ञान को मन्दाकिनी तू, शारदा का रूप माँ ॥ ३ ॥
निशा बीती, भोर आया , मिट चले भ्रम के सितारे,
शक्ति का नव रूप लखकर, दिशि दिशों के असुर कपि
महाकाले, शक्ति दुर्गे, असुरमर्दिनी चण्डी माँ ॥ ४ ॥
श्वास तेरे तुझे अर्पित तन समर्पित मन समर्पित,
चेतना ले दिव्य तेरी ,कोटि पग बढ चले पथ पर,
ध्येय का साक्षात् करने दिग्विजय कर तेरी माँ ॥ ५ ॥

१७) माँ तेरी पावन पूजा में

माँ तेरी पावन पूजा में, हम केवल इतना कर पायें ॥ धृ ॥
युग युग से चरणों में तेरे, चढते आये पुष्प घनेरे,
हमने उनसे सीखा केवल, अपना पुष्प चढा पाये ॥ १ ॥
चितोड दुर्ग के वे कण-कण, जय बोल रहे, तेरी क्षण-क्षण
हम भी अपने टूटे स्वर को, उनके साथ मिला पायें ॥ २ ॥
कुछ कली चढी, कुछ पुष्प चढे, कुछ समय के पहले फिसल पडे

हमको दो वरदान यही माँ, विकसित होकर चढ जायें ॥ ३ ॥
जगती के बन्धन आकर्षण, यदि स्वयं काल से भी हो रण,
माँ तेरे पूजा-पथ पर हम, लडते भिडते बढते जायें ॥ ४ ॥
अन्तिम आकांक्षा हम सबकी, जब पावन पूजा हो तेरी,
तब तनिक न पड असमंजस में, यह जीवन-पुष्प चढा जायें ॥ ५ ॥

१८) यह देश मेरा धरा मेरी

यह देश मेरा, धरा मेरी, गगन मेरा ।
उसके लिये बलिदान हो प्रत्येक कण मेरा ॥ ध्रु ॥
इस भूमि पर मस्तक उठाये चल रहा हूँ मैं
शस्य श्यामल भूमि को शत-शत नमन मेरा ॥ १ ॥
हर साँस में मेरी, सुरभि किसने बसा दी
इस भूमि को है भेंट तन-मन और धन मेरा ॥ २ ॥
मैं जागता जिस पर उषा की चूमकर किरणें
हो उस धरा की गोद में अन्तिम शयन मेरा ॥ ३ ॥

१९) यह मातृ भूमि मेरी

यह मातृभूमि मेरी, यह पितृ भूमि मेरी ॥ ध्रु ॥
पावन परम जहाँ की मन्जुल महात्म्य धारा,
पहले ही पहले देखा जिसने प्रभात प्यारा,
सुरलोक से भी अनुपम ऋषियों ने जिसको गाया,
देवेश को जहाँ पर अवतार लेना भाया
वह मातृ-भूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी ॥ १ ॥
ऊँचा ललाट जिसका हिमगिर चमक रहा है
सुवरण किरीट जिस पर आदित्य रख रहा है
साक्षात शिव की मूरत, जो सब प्रकार उज्जवल
बहता है जिसके सिर से गंगा का नीर निर्मल
वह मातृ-भूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी ॥ २ ॥
सर्वोपकार जिसके जीवन का व्रत रहा है
प्रकृति पुनीत जिसकी, निर्भय मृदुल महा है
जहाँ शान्ति अपना करतब करना न चूकती थी
कोमल कलाप कोकिल कमनीय कूकती थी
वह मातृ-भूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी ॥ ३ ॥
वह वीरता का वैभव छाया, जहाँ घना था
छिटका हुआ जहाँ पर, विदया का चाँदना था
पूरी हुई सदा से, जहा धर्म की पिपासा
सत् संस्कृत मनोरम जहाँ की थी, मातृ भाषा
वह मातृ-भूमि मेरी, वह पितृभूमि मेरी ॥ ४ ॥

२०) वंदे जननी भारत धरणी

वन्दे जननी भारत धरणी, शस्य श्यामला प्यारी ।
नमो नमो सब जग की जननी, कोटि कोटि सुतवारी ॥ धृ ॥
उन्नत मस्तक भाल हिमाँचल, हिममय मुकुट विराजे उज्जवल
चरण पखारे विमल सिन्धु जल. श्यामल आँचल धारी ॥ १ ॥
गंगा यमुना सिन्धु नर्मदा, देती पुण्य पियुष सर्वदा
मथुरा मायापुरी दवारिका, विचरे जहाँ मुरारी ॥ २ ॥
कल्याणी तू जग की मित्रा, नैसिर्गिक सुषमा सुविचित्रा
तेरी लीला सुभग पवित्रा, गुरूवर मुनिवर धारी ॥ ३ ॥
मंगल-करणी, संकट हरणी, दरिद्रहर विज्ञानवितरणी
ऋषि-मुनि शूरजनोंकी धरणी, हरती भ्रम तम भारी ॥ ४ ॥
शक्तीशालिनी दुर्गा तू है, विभवपालिनी लक्ष्मी तू है,
बुध्दीयायिनी विदया तू है, सब सुख सिरजनहारी ॥ ५ ॥
जग में तेरे लिये जियेंगे, तेरा प्रेम पियुष पियेंगे,
तेरी सेवा सदा करेंगे, तेरे सुत बल-धारी ॥ ६ ॥

२१) वन्दौ श्री भरत भूमि

वन्दौ श्री भरत भूमि, सर्व सेव्य माता ।
चन्दन सम ताप हरणि, शस्य पूर्ण, श्याम वरणि;
विपुल सुजल सुफल धरणि; धवल सुयश ख्याता ॥ वंदौ श्री भरत भूमि.... ॥ १ ॥
हिमगिरि के तुंग श्रृंग; किरीट मुकुट उत्तमाङग;
युगल बाहु कच्छ वंग; अभय वर प्रदाता ॥ वन्दौ श्री भरत भूमि.. ॥ २ ॥
सिंधु ब्रह्मपुत्र देश; लहरे युग ओर केश;
बदरी वन बन सुवेश; विमल बुध्दी दाता ॥ वन्दौ श्री भरत भूमि... ॥ ३ ॥
मध्य देश, मध्य देश; विंध्या कटि-पट सुवेश;
उदर वर विदर्भ देश; मदन लखि लजाता ॥ वन्दौ श्री भरत भूमि.. ॥ ४ ॥
सह्य-मलय पाद पद्म; सिंधु पुजित चरण युग्म;
विनत विश्व मतिअनन्य; अखिल जगत माता ॥ वन्दौ श्री भरत भूमि... ॥ ५ ॥

२२) हे जन्मभूमि भारत

हे जन्मभूमि भारत, हे कर्म भूमि भारत, हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत ॥ ध्रु ॥
जीवन सुमन चढाकर, आराधना करेंगे, तेरी जनम जनम भर हम वन्दना करेंगे, हम अर्चना करेंगे ॥ १ ॥
महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है, ती प्राण है हमारी, जननी समान तू है
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे, तेरे लिय जनम भर, हम साधना करेंगे, हम अर्चना करेंगे ॥ २ ॥
जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है, सागर जिसे रतन की, अंजुली चढा रहा है
यह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे, उस देश के बिना हम, जीवित नही रहेंगे, हम अर्चना करेंगे ॥ ३ ॥
जो संस्कृति अभी तक, दुर्जेय सी बनी है, जिसक विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है
उसकी विजय-ध्वजा ले, हम विश्व में चलेंगे, संस्कृति सुरभि पवन बन,
हर कुञ्ज में बहेंगे, हम अर्चना करेंगे ॥ ४ ॥
शाश्वत स्वतन्त्रता का जो, दीप जल रहा है, आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है
विश्वास है कि पल भर, रूकने उसे न देंगे, उस ज्योति की शिखा को,
ज्योतित सदा रखेंगे, हम अर्चना करेंगे ॥ ५ ॥

२३) जय जननी जय राष्ट्र भारती

जय जननी जय राष्ट्र भारती, सारा जग कर रहा आरती ।
हिम किरिटिनी हेममयी तू, त्याग दयासुख क्षेममयी तू ।
रत्नाकर की रजत लहरियाँ अविरल पद शतदल पखारती ॥ सारा जग
वेद ऋचासी आदिम पावन, साम गान सी तू मन भावन ।
सीमलता सी यज्ञ ज्वाल सी, कर्म पथ पर तू न हारती ॥ सारा जग
नेति-नेति हे ब्रह्म वादिनी, पौराणिक हे स्वर निनिदिनी ।
कल्प कल्पना आराधन के, तू नव नूतन चित्र धारती ॥ सारा जग
शान्तिमयी चिरक्रांन्तिमयी है, युग युगीन पर नयी नयी है ।
धर्म प्राण तू विश्व सभ्यता का, नव कंटक पथ सँवारती ॥ सारा जग

२४) विश्व में गूँजे हमारी भारती

विश्व में गूँजे हमारी भारती, जन जन उतारे आरती ।
धन्य देश महान, धन्य हिन्दुस्थान ॥
इस धरा की गोद में, संसार को संस्कृति मिली है ।
हर शिखर की धवलता, इस देश की जिंदादिली है ।
सिंधु की हर लहर चरण पखारती , नदियाँ सदा सिंगारती ॥ विश्व में
चल दिया मानो सिकन्दर, इस धरा पर टेक घुटने ।
शत्रू की क्या जब लगेगा, इस वतन का शौर्य जगने ।

२५) जय सुख करणी, सब दुःखहरणी

जय सुख करणी सब दुःख हरणी, जयति जयति जय भारत माता ।
तेरी गोदी में पलने हित, आया करते स्वयं विधाता ॥ जयति जयति माता ॥
तेरे कण-कण तृण तृण में त्याग तपस्या का संगम हे ।
साहस शौर्य आत्म आहुति का तेरी धरती ही उद्‌गम है ।
वेदों की पावन वाणी के, सत्यधर्म के चिर उद्‌गाता ॥ जयति जयति माता ॥
मानव ही क्या प्राणि मात्र की तेरे अन्तर ममता है ।
गंगा के जल बिन्दु-बिन्दु में पाप निवारण की क्षमता है ।
तेरी अमर संस्कृति को, जग है श्रध्दा से शीश नवाता ॥ जयति जयति माता ॥
लिखी हुई हल्दी घाटी में गौरव मय परिपाटी ।
रजपूती वीरों ने जिसकी, धरती अरि शीशों से पाटी ।
उन वीरों के पराक्रमीं के मुक्ती पवन निशि दिन गुण गाता ॥ जयति जयति माता ॥
धरती में हम हिन्दुजनों की, तेरी उन्नति में उन्नति है ।
तेरी शोभा में शोभा है, तेरी अवनति में अवनति है ।
तेरा और हमारा है माँ जैसे प्राण का नाता ॥ जयति जयति माता ॥

२६) जननी तुम ही शक्ति हमारी

जननी ! जननी !
जननी ! जननी ! ! जननी ! ! तुम ही शक्ति हमारी
मन मन्दिर में प्रति पल गूँजे, अक्षय नवधा भक्ति तुम्हारी ! ! जननी तुम ही शक्ति हमारी
तुमसा कोई पूज्य नही माँ, सब देवों से तुम हो बढ कर,
राम-कृष्ण से अवतारों की, युग-युग क्रीडा स्थल सुंदर !
--स्वर्ग-लोक के देव तरसते, शस्य-श्यामला शोभा प्यारी ! ! जननी तुम ही शक्ति हमारी
दक्षिण से उत्तर तक कितने, तीर्थ बने हैं सरस सुहावन,
अनगिन नगरों मैदानों को, किया पूर्वजों ने है पावन,
अनगिन बलिदानों की राखें, कण-कण में भरती चिनगारी ! जननी तुम ही शक्ति हमारी
भेद-भावना तज कर माता, तेरी सेवा हेतु जुटेंगे !
तेरी पूरण-प्रतिभा मन में, रख कर निश-दिन काम करेंगे !
तेरे वैभव के हित ही माँ, पुत्रों के जीवन बलिहारी !
जननी , जननी ! तुम ही शक्ति हमारी
मन मन्दिर में प्रति पल गूँजे, अक्षय नवधा भक्ति तुम्हारी ! !
जननी तुम ही शक्ति हमारी ! !

२७) ममता मयी माँ

ममता मयी माँ ! तव चरणों पर–
शत कोटि हृदय के फुल्ल सुमन,
ले रूप–गंध–रस न्यौछावर तव–चरणों पर ! ! ममता मयी माँ
चिन्ता से अन्तर सिंधड–सिंधड, भावों के जलधर घुमड–घुमड
मुक्ताबलि मुक्त–गगन से झड, छंदों में बंधकर बनें मुखर–तव चरणों पर ! ! ममता मयी माँ
नयनों का जल, रोमांचित तन, गद्‌गद् वाणी, आनंदित मन,
अक्षत–निष्ठा, लौ सम जीवन, हों भक्ति–मगन सुमनों के स्वर–तव चरणों पर ! ! ममता मयी माँ
निर्मल धारा पा सरल तंत्र, जय मातृ भक्ति का महा मंत्र,
चलता जायें चिर–प्रगति यंत्र– पूरीत कोटि हृदय के फुल्ल सुमन, ले रूप–गंध–रस न्यौछावर,
तव चरणों पर ! !

२८) कितने ही युग से हे जननी

कितने ही युग से हे जननी, जग तेरे यश गाता । भगवती भारत माता ॥
हिमाच्छन्न तब मुकुट अडिग गम्भीर समाधि लगायें ।
तपःस्वियों को मनः स्थैर्य का मम सदा सिखलायें ।
उदधि कृतार्थ हो रहा तेरे चरणों को धो–धोकर ।
रचा विधाता ने क्योंकर है स्वर्ग अलौकिक भूपर ॥
सत्य और शिव भी सुन्दर भी महिमा तुमसे पाता ॥ भगवती भारत माता ।.... ॥ १ ॥
चार हलों की सहकर भी माँ दिया अन्न और जल है,
निर्मिमत तेरे ही रजकण से यह शरीर है बल है ।
ज्ञान और विज्ञान तुम्हारे चरणों में नत शिर है,
जीव सृष्टि की जिसके हित धारने देह फिर फिर है ।
मुक्ति मार्ग पाने को तेरी गोदी में जो आता, भगवती भारत माता... ॥ २ ॥
ऋषिमुनी ज्ञानी दृष्टाओं, वीरों की जननी तू,
माता जिनके अतुल त्याग को आदर्श की धनी तू,
जीवों के हित जीवन को भी तुच्छ जिन्होंने माना,
निज स्वरूप में ही जगती के कण–कण को पहिचाना,
जग ले लिया नहीं तूने जग रहा तुम्ही से पाता, भगवती भारत माता.... ॥ ३ ॥

२९) जय मातृभूमि जीवन भर

जय मातृभूमि जीवन भर, निशि दिन तेरा ही गुण गाये, फिर भी तेरा पार नही हम पायें ॥
सबसे ऊँचा मस्तक तेरा, चरणों में सागर का घेरा, दसो दिशाएँ साँज सवेरे,
तुझ को शीश झुकाये ॥ फिर भी तेरा पार नही हम पायें ॥
तूने दिया खेलता बचपन, फिर अजेय बलशाली यौवन, शत–शत जीवन तेरी सेवा
का हम अवसर पायें ॥ फिर भी तेरा पार नही हम पायें ॥
भौतिकता में जब जग मोहित, तू थी दर्शन से आकांक्षित ।
समय–समय पर ईश मुखोंसे, तूने धर्म उपदेश करायें ॥ फिर भी तेरा पार नही हम पायें ॥

३०) जब सारी दुनियां भूली थी

जब सारी दुनियां भूली थी, माँ तुमने दीप जलाया था ।
बेसुध था मनुज तमिस्त्रा में जाग्रति का गान सुनाया था ।
जब महाप्रलय की लहरों में थी नष्ट हुई सुर–सृष्टि सभी;
मानवता का नूतन पौधा तुमने ही पुनः उगाया था ॥ १ ॥
तेरे आँचल की छाया में मानव ने श्रुति का दूध पिया ।
तूने निर्मल व्यवहार सिखा, सभ्यों सा शिष्टाचार दिया ।
तुमको 'माँ' जग ने पाया था, तुमने ही जग को जाया था ॥ २ ॥
अब भी विक्षिप्त हुये जग को, पथ दो दायित्व तुम्हारा है,
फिर से व्रत वह पालो, जननी, युग–युग से जिसे निभाया था ।
जब सारी दुनियां भूली थी, माँ तुमने दीप जलाया था
बेसुध था मनुज तमिस्त्रा में जाग्रति का गान सुनाया था । ॥ ३ ॥

३१) जय भारत वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ॥
भारत वन्दे मातरम्, जय भारत वन्दे मातरम् ॥
रूक ना पायें तूफानों में, सबके आगे बढे कदम ।
जीवन पुष्प चढाने निकले माता के चरणों में हम ॥ वन्दे मातरम्.....
मस्तक पर हिमराज विराजित, उन्नत माथा माता का ।
चरण धो रहा विशाल सागर, देश यही सुन्दरता का ।
हरियाली साडी पहनी माँ, गीत तुम्हारे गाये हम ॥ वन्दे मातरम्....
नदियन की पावन धारा है, मंगल माला गंगा की ।
कमर बंध है विंध्याद्री की सातपुरा की श्रेणी की ।
सह्याद्री का वज्र हस्त है, पौरूष को पहचाने हम । वन्दे मातरम्...
नही कसीके सामने हमने, अपना शीश झुकाया है ।
जो हमसे टकराने आया, काल उसी का आया है ।
तेरा वैभव सदा रहे माँ, विजय ध्वजा फहराये हम, वन्दे मातरम्.....

३२) वन्दना है तत्वदर्शी महर्षियों की भू ।

वन्दना है तत्वदर्शी महर्षियों की भू ! वन्दना ! वन्दना !
वन्दना है तत्वदर्शी महर्षियों की भू ! !
वन्दना है चक्रवर्ती क्षत्रियों की भू ! ! अन्नपूर्णा वसुन्धरा––वन्दना, वन्दना ! !
शस्य श्यामल विमल अंचल, जल घनेरा है !
दूध से भरपूर छाती, सुख बसेरा है !!
वन्दना है कठिन कर्मी कृषक जन की भू !

वन्दना गो-रक्षको क्षुति-धर्म घन की भू ! !
रत्नगर्भा ऋतंबरा ! अन्नपूर्णा वसुन्धरा !--वन्दना, वन्दना ! !
चतुर आश्रम, वर्ण सम्यक्, चतुष्फल की साधना !
शुध्द जीवन उच्च चिन्तन ध्येय-ध्रुव आराधना ! !
वन्दना है वर नियामक शासकों की भू ! !
वन्दना मन-वचन-कृति के नायकों की भू ! !
शारदा वैभववरा ! !, अन्नपूर्णा वसुन्धरा ! --वन्दना, वन्दना ! !
आज पीडा से व्यथित, दौर्बल्य छाया है !
छद्मवेशी शत्रुओं ने छल बिछाया है ! !
वन्दना है दिग्विजय संचालकों की भू !
वन्दना है धर्म-ध्वज प्रतिपालकों की भू !!
वन्दना मंगलकरा ! , अन्नपूर्णा वसुन्धरा ! ! --वन्दना, वन्दना ! !

३३) जननी स्वर्गादपि गरीयसी

जननी स्वर्गादपि गरीयसी, जन्मभूमि कल्याणी जय हे ।
वीर प्रसूता जननी जय हे ॥
षट ऋतुओं से आलंकृत-भाल हिमालय रविसम शोभित ।
हरितांचल धन धान्य भरा, तव चरणों में दिकपाल निवेदित ॥
गौरवगाथा काल सुनाये रिध्दि-सिध्दि सुख चंवर डुलाए ।
जग वन्दित जन-मन अभिनन्दित मातृभूमि वरदानी जय हे ॥ ॥ १ ॥
तव सुत झंझा से टकराये जब-जब मेघ थे छाए ।
शिथिल हुए सब झंझा जग के सब जगती को राह दिखाए ॥
शक्यि विजय का शंख बजाये साँझ उठाए ध्वज फहराए ।
प्रिय दर्शिनी मंगलवर्षिण हे ! कर्मभूमि अभिमानी जय हे ॥ २ ॥
वर दे हम पलाश से फूलें, काल जयी हो लक्ष्य न भूले ।
इस तमसा जग को हम उस महा ज्योति ओर ले चले ।
तेरी माटी से निर्मित तन चढ पाये तेरी वेदी पर ।
शांन्तिव्रता हो ! शुभ सुचिता हे ! ! पुण्य भूमि हिंदुआनी जय हे ॥ ३ ॥

३४) वन्दे राष्ट्र जननि भयहारिणी

वन्दे राष्ट्र जननि भय हारिणी, आत्म-ज्ञान विज्ञान, मंदिरे
तपःपूत भारत वसुन्धरे ॥
हरित ललित शस्याञ्चल शोभिनी, गिरिबन भवन सकल जग मोहिनी,
मुक्तिदूत उज्ज्वल यशोधरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ १ ॥
भगीरथि जल कणिका हारिणी, ममता मयि संशय निवारिणी,
शोण सूर्यतनया पयोधरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे.. ॥ २ ॥
हिममय शुभ्र मुकुटमणि धारिणी, द्राविड, बङग, कलिंग विहारिणी,

महाराष्ट्र काश्मिर भास्वरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ३ ॥
जन–गण–मन मंदिर शुभ चारिणी, मोह–लोभ कल्यप परिहारिणी,
दिव्यतत्व भारते प्रभास्वरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ४ ॥
भव जलनिधी तारिणी शम धारिणी, शान्तिदूत मंगल कारिणी,
कालिदास रस सार सागरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ५ ॥
व्यास वसिष्ठ आदि कवि भाविनी, गोतम गुण परमाणु प्रभाविनी,
रामकृष्ण जय गान सुन्दरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ६ ॥
शिव प्रताप रण कौशल साक्षिणी, तिलक, विवेक रवीन्द्र सुकांक्षिणी,
शत्रू गर्व मर्दिनी शुभंकरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ७ ॥
खण्डित बाहु युगे करूनामयि, देहि विपुल बलमिह घटकेमयि,
त्याग तपोमय शुभ यशोधरे, तपःपूत भारत वसुन्धरे... ॥ ८ ॥

३५) जय स्वदेश जय संस्कृति माता

जय स्वदेश ! जय स्वदेश ! !
जय स्वदेश ! जय संस्कृति माता, जय स्वदेश ! !
महा–मोह के विकट जाल से, अर्जुन जब भ्रम–ग्रस्त हुआ था,
दौड–दौड तब श्री हरि आये, इस भारत के भाग्य विधाता...जय स्वदेश... ॥ १ ॥
जगा हुआ वह कृतज्ञ भारत, श्री शंकर की जय था गाता,
शस्त्र–शास्त्र में महा धुरंदर, थे बसवेश्वर जन–गण–त्राता...जय स्वदेश.... ॥ २ ॥
भक्ति रसामृत पी तुलसी का, भारत था संजीवनि पाता,
चिरंजीव सर्वदा रहेगी, श्री प्रताप यश–गुण–गाथा,,,,जय स्वदेश... ॥ ३ ॥
गुरू गोविन्द का दिव्य त्याग फिर, नव–जीवन बन सम्मुख आता,
रामदास तो मातृ–भक्तिमय, दिव्य मंत्र के थे उद्‌गाता...जय स्वदेश... ॥ ४ ॥
गिरि कुहरों से एकमात्र ध्वनि, श्री शिव की जय गूँज उठी थी,
दयानन्द थे आर्य–धर्म के, सर्व–श्रेष्ठ पुनर्निर्माता,,,जय स्वदेश.... ॥ ५ ॥
नरेन्द्र ने शुभ धर्म–गान से, अखिल विश्व को स्मितित किया था;
केशव थे इस श्रेष्ठ देश के, ऐक्य–मंत्र–संजीवन दाता...जय स्वदेश... ॥ ६ ॥

३६) मातृभूमि यह अखण्ड

मातृभूमि यह अखण्ड, पुण्य भूमि प्यारी ।
जयति जयति जन्म भूमि स्वर्गलोक न्यारी ।
जय जय भारत विशाल, हिमगिरी उत्तुंग भाल,
वन्दित सुर लोकपाल, कल्पना विहारी ॥ १ ॥
रत्नाकर पद वन्दित,भागीरथी यश मण्डित ।
वेद-गान से झंकृत वंदना तिहारी ॥ २ ॥
भू-मण्डल का किरीट, संस्कृत और धर्म पीठ,
गौरवमय तब अतीत, पुण्य देह धारी ॥ ३ ॥
युग-युग से यह अजेय, मानव का पुण्य श्रेय,
गीता का ज्ञान गेय, मंगल संचारी... ॥ ४ ॥

३७) मातृ-भू की मूर्ति मेरे हृदय मंदिर में विराजे

मातृ-भू की मूर्ति मेरे हृदय मंदिर में विराजे ॥
कोटि हिंदू हिंदवासी, मातृ मंदिर के पुजारी,
प्राण का दीपक संजोए, आरती माँ की उतारी,
लक्ष्य के पथ पर बढे हम, स्वार्थ का अभिमान त्यागे.. ॥ १ ॥
स्वर लहरियाँ उठ रही है, मातृ तव आराधना की,
कोटि हृदयों में उठी है, चाह तेरी साधना की,
शंख ध्वनी संघोष करती, आज रण का साज साजे... ॥ २ ॥
हाथ में हो अरूण केतु, और पावों में प्रभञ्जन,
शत्रू शोणित विजय श्री से, आज माँ का करें अर्चन,
विजय श्री का मुकुट फिर से, मातृ मस्तक पर विराजे..... ॥ ३ ॥

३८) कोटि स्वर वंदन निरत ओ

कोटि स्वर वंदन निरत ओ, मुक्त माँ अभिमानिनी, मुक्त माँ अभिमानिनी ॥
कोटि कर जीवन कुसुम, नैवेद्य से थाली संजोये,
कोटि वर अर्चन रहे कर, प्राण की माला पिरोये,
शुभ्र वसना मंजू तुम, गौरव-मयी कलहासिनी.... मुक्त माँ अभिमानिनी ॥ १ ॥
धवल यश की स्वर्ण शर, रंजिता तुंग किरीटिनी,
अन्यतम वैभव प्रकाशिनी, सृष्टी हित संजीवनी,
वर प्रदायनी कोटि अभिनन्दन तुम्हें मधु-भाषिणी.. ॥ २ ॥
शस्य श्यामल शोभिता सुषमा सदा माँ भारती,
सूर्य शशि लेकर उषा-संध्या उतारें आरती,
सौम्यता की मूर्ति माँ स्वागत सुधा सुर स्वामिनी.. ॥ ३ ॥

३९) जय जय कोटि भुजस्विनी माता

जय जय कोटि भुजस्विनी माता, सत्युग से कलयुग तक जिसकी,
महिमा का रथ काल चलाता ॥
जिसक वाहन स्वयं प्रकाशित, शौर्य सूर्य सा दिन दहलाता,
जिसके खड्ग प्रहार तले खल, शीश रक्त की बहाता ॥ १ ॥
अनगिन अमर पुञ्ज के अनुपम, दिव्य अंश का अमर समर्पण,
तुझमें प्रबल परक्रम चमके, कोटि सूर्य का तेज लजाता ॥ २ ॥
गौ श्रुति संस्कृति के नव नव घातक, महिष बुध्दि दनुजों के पातक,
तुझको आज चुनौती देत, उठे शूल माँ अभय प्रदाता... ॥ ३ ॥
रौद्र रूपिणी विकट कालिके, जगवन्दन गणपति सुपालिके,
शंकर प्रलयंकर पूजित हे, सत्व स्थापिनी शान्ति विधाता... ॥ ४ ॥

४०) जय जय जय भव भूषण ,

जय जय जय भव भूषण, भारत भूवि प्यारी ।
जननी तू विश्व, जननी, पाप-ताप क्लेश हरनि,
मानव हित संजीवनी, अद्भुत गुणकारी... ॥ १ ॥
जन्मत जहाँ विपुल वीर, दानव दल चीर-चीर,
जननी तव हरत पीर, वीर भूमि न्यारी... ॥ २ ॥
लुटती तव देख लाज, कोटि-कोटि पुत्र आज
सज लेंगे रण के साज, बालक, नर, नारी... ॥ ३ ॥
जय जय जय भव भूषण, भारत भूवि प्यारी ।

४१) जय महा मंगले, जय सदा वत्सले

जय महा मंगले, जय सदा वत्सले !
देवी परमोज्वले, वरत-भू रूपिणी ॥
हिमगिरी किरीटिनी, सुरतटिनी मालिनी,
जलधि वलयांकिते, जय जगन्मोहिनी.. ॥ १ ॥
श्रम पटल दारिणी, मोह विध्वंसिनी,
जय सदा शारदे, बुध्दि बलदायनी... ॥ २ ॥
अखिल खल मर्दिनी, सुजन बल वर्धिनी,
जय समर चण्डिके,, रौद्र तनुधारिणी... ॥ ३ ॥
सत्य सावित्री जय ! पुण्य गायत्री जय,
विभव सुखदायी जय ! दिव्य तेजस्विनी... ॥ ४ ॥
वीरवर सेविते, योगिजन चिन्तते,
देवगण वन्दिते, विश्वहितकारिणी... ॥ ५ ॥

४२) मातृभूमि मनभावन वन्दे

मातृभूमि मन भावन वन्दे ।।
उन्नत सुंदर भाल हिमालय, कण्ठ माल अति निर्मल गंगे ।। १ ।।
विन्ध्याचल कटि किंकिण शोभे, नुपूर ध्वनित समुद्र तरंगे ।। २ ।।
पुरी, द्वारिका, मथुरा, काशी, शिव, प्रताप, गुरू गोविन्द वन्दे ।। ३ ।।
शांति-दायिनी वत्सल माता, वीर प्रसविनी जय श्री अंबे ।। ४ ।।

४३) मेरी मातृभूमि मंदिर है

मेरी मातृभूमि मंदिर है । श्वेत हिमालय श्रृंग बना है,
शिव का तांडव बल अपना है,
भगवा-ध्वज यश गौरव वाला, लहराता फिर-फिर है ।
वीर शिवा, राणा से नायक, सूर और तुलसी से गायक,
जिनकी वाणी कालजयी है, जिनका यश स्थिर है ।।
स्वाभिमान की बलिवेदी पर, सतियाँ लाख हुई है न्यौछावर,
सन्तों, ऋषियों, मुनियों वाली, भारत भूमि मिहिर है ।।
हमको जो ललकार रहा है, अपना काल पुकार रहा है,
विश्व जानता है भारत का, अपराजेय रूधिर है,

४४) वन-उपवन अनुराग मंजरित

वन-उपवन अनुराग मंजरित मधुमय छठा ललाम है,
शस्य-श्यामला भारत जननी, तुमको कोटि प्रणाम है ।
तेरा कण-कण-पुण्य-तीर्थ है, मधुर सुधोपम नीर है,
स्वर्ग सुखों को देने वाली त्रिविध सुगन्ध समीर है,
तू गौरवशाली गीतमय, तेरी कीर्ति महान है,
तू चिर साधना तपस्वी, जीवन का वरदान है,
वसुधरा धरती, भू, मधुरा तेरे अगणित नाम हैं ।। १ ।।
अलौकित है दसों-दिशायें, तेरे सुयश प्रकाश से,
जग-उपवन की डाल-डाल सुरभित तेरे मधुमास से,
नहीं मृत्तिका, तू चंदनमय, तुझे चढाऊँ भाल पर,
तेरा शुभ आशीष मिले, हम विजय करेंगे काल पर,
नव प्रेरक आलोक पुंज सी तेरी छबी निष्काम है ।। २ ।।

४५) प्रार्थना के स्वर हमारे

प्रार्थना के स्वर हमारे, प्राण की झंकार जननी,
सामरसता में मिले है जन हृदय के तार जननी ॥ धृ ॥
हिंदुकुश योगी शिला मिल ब्रह्मनद जा सिंधू से,
जुट रहे हैं संगठन की भूमि के आधार जननी ॥ १ ॥
दर्पमद में झुमता आत्महन्ता विश्व है,
शांती का प्यासा मनुज है शक्ति से लाचार जननी ॥ २ ॥
जानते है सब हृदय में निर्बलों की शक्ति तुम,
शीघ्र चरणों में गिरेगा नम्र हो संसार जननी ॥ ३ ॥
संगठन के हम पथिक है वीरकर्मी पुत्र माँ,
नित्य चढता ही रहे माँ साधना का ज्वार जननी... ॥ ४ ॥

राष्ट्रार्चन

४६) कोटि शीर्ष जय कोटि नयन जय

कोटि शीर्ष जय, कोटि नयन जय ।
कोटि बाहु जय, कोटि चरण जय ॥
एक विराट पुरूष तुम भारत, प्रगटित कोटि-कोटि देहों में,
जैसे एक गगन व्यापक है, जगती की अगणित देहों में ।
सत्य-सत्य आसेतु हिमाञ्चल, सीमा है भौगोलिक तेरी ।
पर नरत्व से रो ईश्वरत्व तक, फैली तेरी परिधि घनेरी ।
अवतारों की जन्म-स्थली तू, धन्य महापुरूषों की जननी ।
ग्राम-ग्राम है तीर्थ तुम्हारा, धूली तुम्हारी पातक हरणी ।
जय ब्रह्मांड कल्पतरू के हे, अमृत फल आनन्द सदन जय ।
कोटि शीर्ष जय कोटि नयन जय... ॥ १ ॥
जीवन मंत्र तुम्हारा दर्शन, पावन वेद तुम्हारी वाणी ।
चिंतन मनन विचार शास्त्र है, गायन है गीता कल्याणी ।
गंगा जय से सरल सौम्य तुम, उपनिषदों से गहन अतल हो ।
तुम मुरली से ललित सुदर्शन, काल-चक्र से विकट प्रबल हो ।
चूर-चूर हो जाये, तेरे वज्र-दक्ष से जो टकराये ।
तू वह संगम है जो भेटे, तेरी एक लहर हो जाये ।
कर्म - भूमि जय धर्म - भूमि जय, जयति पुरातन नित-नूतन जय ।
कोटि शीर्ष जय कोटि नयन जय... ॥ २ ॥

४७) जय हे जगती के प्रथम राष्ट्र

ओ चिर-नवीन ओ पुराचिन, उपमा-विहीन जय हो, जय हो ।
तेरे ही सम्मुख सकल सृष्टी ! शिशु-सी खेली, फिर क्यों भय हो !
जय जगत-मौली-मंडन जय-जय, पितृत्व भाव के परम राष्ट्र ॥ १ ॥
तेरे ही प्राणों में पहले, करूणा का कलकल स्त्रोत बहा,
तेरे ही कवि ने प्रथम बार, कविता का, प्रथम श्लोक कहा;
तू सप्त स्वरों का अधिकारी, संगीत-कला के चरम राष्ट्र ॥ २ ॥
तेरा ही पहला अन्वेषण, उर्वरा-भूमि यह जान सका,
तू ही वग पहला वैज्ञानिक, जड-चेतन को पहचान सका,
कर रहे स्पर्श तेरा गौरव, केवल दो दिन के उदित राष्ट्र ॥ ३ ॥
तेरे बल विक्रम का साक्षी, प्रत्येक सिन्धु, प्रत्येक अचल,
तू परम अहिंसक शान्तिशील, तू क्रान्ती-रूप, तू परम प्रबल,
तू है अपना आदर्श, आदर्श आप, तू है महान् तू असम राष्ट्र ॥ ४ ॥
तेरे ही घर में प्रथम बार, स्वर्गीय ज्ञान का दीप जला,
जिसके प्रकाश पर मोहित-सा, न्यौछावर होने विश्व चला,
तेरे चरणों पर विनत विश्व, अध्यात्म ज्ञान के अमर राष्ट्र ॥ ५ ॥

४८) सबसे ऊंची विजय पताका

सबसे ऊंची विजय पताका, लिये हिमालय खडा रहेगा ।
मानवता का मानबिंदू यह, भारत सबसे बडा रहेगा ॥
विन्ध्या के चटटानों पर, रेवा की गति तूफानी,
शत शत वर्षों तक गायेगी, जीवन की संघर्ष,
इसके चरणों में नत हो कर, हिंदू महोदधी पडा रहेगा,
भारत सबसे बडा रहेगा ॥ १ ॥
गंगा यमुना घट से निकली, जहाँ एक होकर बहने को,
जहाँ प्रकृति के पास रहा है, सदा पुरूष से कुछ कहने को,
उस भारत में पराक्रमों का, प्यारा झंडा गडा रहेगा, भारत सबसे बडा रहेगा ॥ २ ॥
जिसकी मिटटी में पारस है, स्वर्ण-धूलि उस बंग भूमि की,
पंचनदों के फव्वारों से, सिंची बहारें पुण्य-भूमि की ।
शीर्ष बिंदू श्रीनगर सिन्धु तक, सेतुबन्धु भी अडा रहेगा, भारत सबसे बडा रहेगा ॥ ३ ॥
जिस धरती पर चन्दा-सूरज, साँझ-सकारे नमन चढाते,
षड्-ऋतु के सरगम पर पंछी दीपक और मल्हार सुनाते ।
वही देश-मणि माँ-वसुधा के हृदय-हार में जडा रहेगा, भारत सबसे बडा रहेगा ॥ ४ ॥

४९) हम करें राष्ट्र-आराधन

हम करें राष्ट्र-आराधन, तन से मन से धन से,
तन, मन, धन जीवन से, हम करें राष्ट्र आराधन ।
अन्तर से, मुख से, कृति से, निश्चल हो निर्मल मति से,
श्रध्दा से मस्तक नत से, हम करे राष्ट्र अभिवादन ॥ १ ॥
अपने हंसते शैशव से, अपने खिलते यौवन से,
प्रौढता पूर्ण जीवन से, हम करे राष्ट्र का अर्चन ॥ २ ॥
अपने अतीत को पढकर, अपना इतिहास उलट कर,
अपना भवितव्य समझकर, हम करें राष्ट्र का चिंतन ॥ ३ ॥
हैं याद हमे युग युग की, जलती अनेक घटनायें,
जो माँ की सेवा-पथ पर, आई बनकर विपदाएं ।
हमने अभिषेक किया था, जननी का अरि-शोणित से,
हमने श्रृंगार किया था, माता का अरि-मुण्डों से,
हमने ही उसे दिया था, सांस्कृतिक उच्च सिंहासन,
माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग का शासन,
अब काल-चक्र की गति से, वह टूट गया सिंहासन,
अपना तन-मन-धन देकर, हम करें पुनः संस्थापन ।
हम करें राष्ट्र आराधन ॥ ४ ॥

५०) हमको है अभिमान देश का

हमको है अभिमान देश का ।
जिसके पांव पखारे सागर, गंगा भरे सँवारे गागर,
शोभित जिस पर स्वर्ग वही तो, शीश मुकुट हिमवान देश का,
हमको है अभिमान देश का... ॥ १ ॥
जिसके रजकण का कर चन्दन, झुक झुक नभ करता पद-वन्दन,
कली कली का प्राण खोलता, स्वर्ण रश्मि का गान देश का,
हमको है अभिमान देश का... ॥ २ ॥
कोटि बाहु में शक्ति इसी की, कोटि प्राण में भक्ति इसी की,
कोटि कोटि कण्ठों में गुञ्जित, मधुर-मधुर जय गान देश का,
हमको है अभिमान देश का... ॥ ३ ॥
इस पर तन-मन-प्राण निछावर, भाग्य और भगवान निछावर,
सींच खून से हम देखेंगे, मुख-पंकज अम्लान देश का,
हमको है अभिमान देश का.. ॥ ४ ॥

५१) हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष अमित-शक्ति धारी

हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष अमित-शक्ति धारी !
कोटि कोटि कंठ करें वन्दना तुम्हारी ! !
हे विराट दिव्य देह, अद्वितीय एकमेव,
सर्वगम्य तुम सदैव अशिव ध्वंसकारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष.. ॥ १ ॥
शत सहस्त्र शीर्षवान, लक्ष-लक्ष दृग सुजान,
है असंख्य भुज महान्, कोटि चरण-चारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष... ॥ २ ॥
एक देश, एक देश एक हृदय तव विशेष,
कोटि कोटि जिव्ह शेष, द्वेश-क्लेशहारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष.. ॥ ३ ॥
हे प्रबुध्द प्राणवन्त, मरण-भय-विहीन सन्त,
तू प्रफुल्ल चिर-वसन्त, तरूण-वन-विहारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष.. ॥ ४ ॥
तुम पुराण पुरूष हिन्द, तव निकेत सप्त-सिन्धु,
भरतखण्ड मान-बिंदु, म्लेंछ दमनकारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष... ॥ ५ ॥
मम अजेय विश्व-भूप, तव हिमाद्री मुकुट रूप,
रत्नहार कलअनूप, गंग-यमुन धारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष... ॥ ६ ॥
बीत चले युग-युगान्त किंतु तुम प्रसुप्त शान्त,
बन कराल हे कृतान्त ! कठिन नृत्यकारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष... ॥ ७ ॥
जाग-महा-भाग जाग, सुन प्रचण्ड असुर-राग,
खोल नयन बरस आग, बन भुजंगधारी, हे अखण्ड राष्ट्र-पुरूष... ॥ ८ ॥

५२) राष्ट्रभक्ति ले हृदय में

राष्ट्रभक्ति ले हृदय में, है खडा अब देश सारा ।
संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा ॥
क्या कभी किसने सुना है, सूर्य छिपता तिमिर भय से ।
क्या कभी सरिता रूकी है बांध से वन पर्वतों से ॥
जो न रूकते मार्ग चलते, चीरकर सब संकटों को ।
वरण करती कीर्ति उनका, तोडकर सब असुर दल को ।
ध्येय मंदिर के पथिक को, कण्टकों का ही सहारा... संकटों पर... ॥ १ ॥
हम न रूकने को चले है, सूर्य के यदि पुत्र हैं तो ।
हम न हटने को चलें हैं, सरित की यदि पुत्र हैं तो,
चरण अंगद ने रखा है, आ उसे कोई हटाए ।
दाहकता ज्वालामुखी यह, आ उसे कोई बुझाए ।
मृत्यु की पीकर सुधा हम, चल पडेंगे ले दुधारा ॥ संकटों पर... ॥ २ ॥

ज्ञान से विज्ञान के भी क्षेत्र में हम बढ पडेंगे ।
नील नभ के रूप के नव अर्थ भी हम कर सकेंगे ।
भोग के वातावरण में त्याग का सन्देश देंगे ।
त्रास के घन बादलों से सौख्य की वर्षा करेंगे ।
स्वप्न यह साकार करने संगठित हो हिन्दु सारा, संकटों पर... ॥ ३ ॥

५३) एक राष्ट्र का चिन्तन मन में

एक राष्ट्र का चिन्तन मन में, कोटि कोटि जनता की जय हो,
भारत जननी एक हृदय हो,
स्नेह सिक्त मानस को वाणी, गूँजे गिरा यही कल्याणी,
चिर उदार भारत की संस्कृति, सदा अभय हो, सदा अभय हो ॥ १ ॥
भारत जननी एक हृदय हो, मिटे विषमता सर से समता,
रहे मूल में मीठी ममता, तमस कालिमा को विर्दीर्ण कर,
जन-जन का पथ ज्योतिर्मय हो ॥ २ ॥
भारत जननी एक हृदय हो, एक धर्मभाषा विभिन्न स्वर,
एक राग अन्तर में सज कर, झंकृत करे हृदय तंत्री को,
स्नेह भाव प्राणों में लय हो, भारत जननी एक हृदय हो... ॥ ३ ॥

५४) अमरत्व के पुजारी हम पुत्र इस धरा के

अमरत्व के पुजारी हम पुत्र इस धरा के,
उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य मातृ भू के,
संसार जित कर जो आये अनेक योध्दा,
उनका न चिन्ह कोई अवशिष्ट हमने छोडा,
इतिहास विगत सारा संघर्ष का है अपना,
गजनी हो या सिकन्दर सब रह गये है सपना,
हम काल पुत्र है हम मृत्युंजयी सदा के, उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य.... ॥ १ ॥
युनान मिश्र रोमाँ के ज्ञान की कलाएँ,
क्षणमात्र की चमक थी जग आज है भुलाये,
जब कालचक्र घुमा वे मिट गये सदा को,
साक्षी बने खडे है हम जीत कर अनेकों,
प्रत्यक्ष हमने देखें हैं आदि अंत जिनके, उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य.... ॥ २ ॥

जब कालकूट पीकर हमको न मृत्यु आई,
अग्नी भी पद्मिनी की आत्मा जला न पाई,
दाहीर की बालिकायें धर्मार्थ प्राण देकर,
अंकित हृदय पटलपर अति दिव्य रूप लेकर ।
वे प्राण है हमारे हम प्राण इस धरा के, उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य.... ॥ ३ ॥
लडता युगों से आया यह राष्ट्र संकटों से,
कालोर्मियाँ भी लौटी थक हार इन तटी से ।
शुचि और शुभ जीवन की अमर बेलि फैली,
जिसमें अनेक घात बढते हुए भी सह ली ।
त्रैलोक्य व्याप्त करलें यह आस मन में सबके, उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य.... ॥ ४ ॥
यह चिन्मयी भरत भू जगती को जन्म देती,
निज धर्म को बचाने देवों की जन्म देती ।
यह मूर्ति अन्नपूर्णा प्रख्यात विश्व भर की,
यह काली रूपिणी माँ रिपुदल विनाश करती ।
शाभित इस करेंगे फिर शीर्ष पर धरा के, उज्ज्वल हमीं करेंगे भवितव्य.... ॥ ५ ॥

५५) गुरू वंद्य महान्

गुरू वंद्य महान ! भगवा एक ही जीवन प्राण ! अर्पित कोटि-कोटि प्रणाम् ! !
शोणित वर्णों में अंकित है, सारे उज्ज्वल त्याग,
व्याप्त किया है दिव्य-दृष्टी से, अखण्ड भारत भाग,
लखकर तडपन देश-भक्ति की, भडके भीतर आग,
कटिबध्द खडे तव छाया में हम, भारत-भू-संतान.... ॥ १ ॥
शौर्य वीर्य के जग में गूँजा, स्फूर्तिप्रद इतिहास,
देखे निज नेत्रों से भीषण, असंख्य रण-संग्राम,
देह-दण्ड अरू कष्ट हुए पर, करते निज बलिदान,
बलिदान नही, वह पूजन केवल, रखने को सम्मान... ॥ २ ॥
ऋषि, तपस्वी, महामुनी का, सन्तों का अभिमान,
आदि काल से तुमने पाया अग्रपूजा का मान,
महा-सुभागी ! देखोंगे, अब भावी वैभव-काल,
बने यशस्वी यही सुमंगल दे दो शुभ-वरदान... ॥ ३ ॥

५६) नमो नमस्ते नमो नमो

नमो नमस्ते, नमो नमो, भगवद्ध्वज हे नमोस्तु ते ! !
अरूणारूण कान्ति विराजित हे, अधिकाधिक कीर्ति प्रसारित हे,
उष्ण-शीत भानूदिगर जय हे, दुर्निरीक्ष्य तेजःप्रभ जय हे,
जय जय जय जय ! जय जय जय जय ! ! नमो नमस्ते, नमो नमो... ॥ १ ॥
मलयानिल पूत निर्जांचल सम्भ्रम,
व्यापक शब्द विबोधित दिक्, दीप्त हिन्दु-विरोन्नति जय हे,
तृप्त हिन्दु-भावोन्नति जय हे, जय जय जय जय ! जय जय जय जय !! नमो नमस्ते, नमो नमो... ॥ २ ॥
गत वैभव साधन पर परिसंगठिता, खिल हिन्दु शभोज्ज्वल हे,
पूर्व-पुण्य मूर्तिप्रभ जय हे, पुण्य-दान संभूषित जग हे,
जय जय जय जय ! जय जय जय जय !! नमो नमस्ते, नमो नमो... ॥ ३ ॥

५७) उन्नत मस्तक नील गगन में

उन्नत मस्तक नील गगन में, भगवा ध्वज फहरे, ध्वज भगवा फहरे ॥
बाँधे कंकण, वीर व्रती बन, चुका सके शत पीडी के ऋण,
मातृ-भूमि के टूटे बंधन, परदेशी सारे ।
धीर समस्या, गहन अंधेरा, कुश-काटों से मार्ग भरा,
धैर्य कुशलता से सब मिलकर, बढे वीर सारे,
महोत्कर्ष का चिन्तन मन में, प्रतिपच्चंद्र समान गगन में,
तत्सम आकांक्षा जीवन में, परिपूरित बहरे ।
शब्द अल्प हो, कार्य प्रभावी, काल सुमंगल निश्चित भावी,
त्याग बिना ये जीवन कैसे, सफल विकास करें ॥
अजेय होए अखण्ड भारत, पूर्ण करेंगे दिव्य मनोरथ,
अरूण केतू यह विश्व गगन में, गौरव के फहरे ॥

ध्वज वंदन

५८) जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान

जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान, कोटि कोटि हिन्दु हृदयों का,
तू ही चिरपूजित भगवान... जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान...
चिर-प्रतीक तू देश-भक्ति का, चिर स्मारक तू राष्ट्र-शक्ति का,
चिर प्रेरक तू अनाशक्ति का, तेरा है चिर गौरव मान... जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान..
तू स्वातंत्र्य-गीत का गायक, तू है नव-स्फूर्ति का दायक,
तू विदलित जीवों का नायक, अमर क्रांती का तू आव्हान, जय - जय प्यारे राष्ट्र निशान...
तेरे चरणों पर है शत-शत, मस्तक चढने को प्रति-पल नत,

तेरी रक्षा वीरों का व्रत, तू ही ध्येय और तू ही ध्यान, जय – जय प्यारे राष्ट्र निशान...
शुध्द शीलता चरित्रता की पवित्रता की खान,
अभय वीरता शौर्य–धीरता, संयम शांति निधान,
सद्भावों से माना हमने पूज्य गुरू भगवान,
अतीव पावन तव प्रति अर्पण, स्वदेश हित यह प्राण, जय – जय प्यारे राष्ट्र निशान

५९) जय ! जय ! जय ! राष्ट्रीय पताके

जय ! जय ! जय ! राष्ट्रीय पताके, जय ! जय ! जय ! राष्ट्रीय निशान ! !
रोम–रोम में जब तक बल हो, प्राणों में जब तक हलचल हो,
तब तक माँ की ममता का हो, उर में गर्व महान ॥ १ ॥
जीवन का कण–कण देकर भी, जीवन का क्षण–क्षण देकर भी,
उऋण न हो सकते हम जिससे यह उस माँ की शान... ॥ २ ॥
उच्च हिमालय या सागर भी, दावानल अथवा आँधी भी,
बाधाएँ आएँ, न रूकेगी यह भारत संतान... ॥ ३ ॥
इसमें निज अभिमान छिपा है, देश–प्रेम का मान छिपा है,
कण्ठ–कण्ठ से मुखरित होवे, इसका ही जयगान.. ॥ ४ ॥
अखिल विश्व में यह फहराये, विश्व–शान्ती का पाठ पढाये,
दुःख दीनता दूर भगा कर, लाये शान्ति महान.... ॥ ५ ॥

६०) प्राची के मुख की अरूण ज्योति

प्राची के मुख की अरूण ज्योति, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे !
यह वन्हि–शिखा का वेश किये, गत वैभव का सन्देश लिये,
हिंदू संस्कृति का अचल रूप, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे... ॥ १ ॥
भारतमाता का उज्ज्वल भाल, आर्यों के उर की अग्नि–ज्वाल,
इस राष्ट्रशक्ति का अमर चिन्ह, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे... ॥ २ ॥
यह चंद्रगुप्त कर की कृपाण, विक्रमादित्य का शिरस्त्राण,
इस आर्य–देश का कठिन कवच, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे.. ॥ ३ ॥
बप्पा रावल की शान यही, चौहान नृपति का मान यही,
राणा के त्यागों का प्रतीक, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे.. ॥ ४ ॥
वन्दा गुरू के बलिदानों से, रक्षित छता के प्राणों से,
नितिज्ञ शिवा का विजय–केतु, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे.. ॥ ५ ॥
दुर्बल विजितों की शक्ति प्रबल, उत्थान मार्ग का यह सम्बल,
पथ–भ्रष्ट जाति का ध्रुवतारा, यह भगवा ध्वज फहरे ! यह भगवा ध्वज फहरे... ॥ ६ ॥

६१) राष्ट्र के आधार केतु

राष्ट्र के आधार केतु, अर्चना लाये पुजारी ।
दिव्य-रवि की रश्मियाँ, निर्माण तेरा कर रही हैं;
जो कुहू की कालिमा को जन्म से ही हार रही हैं ;
उस ऊषा की अरूणिमा भी गा रही गाथा तुम्हारी ; राष्ट्र के आधार केतु... ॥ १ ॥
युगों-युगों से कर रहे आराधना निज शीश देकर ;
होड लगती जिस गुरू का मांगलिक आशीष लेकर;
उस कृपा का पात्र बनने, शरण में आया भिखारी; राष्ट्र के आधार केतु.. ॥ २ ॥
यज्ञ की उठती शिखा सम, असुर-नाशी वर्ण तेरा;
शांति में ही क्रान्ति का अद्वेत एकीकरण तेरा;
विश्व के कल्याण हित, निर्माण की शिक्षा तुम्हारी; राष्ट्र के आधार केतु.. ॥ ३ ॥
पूर्वजों की साधना, बलिदान के तुम मानबिंदु;
हर लहर से जागरण का, पा रहे आव्हान हिंदू;
चेतना नव-जागृति दो, शेष आकांक्षा हमारी; राष्ट्र के आधार केतु.. ॥ ४ ॥

६२) वन्दौ श्री जगत् वन्द्य गुरू महान भगवा

वन्दौ श्री जगत् वन्द्य, गुरू महान भगवा ॥
अरूण कान्ति यज्ञ-रूप यज्ञ ज्वाल सम स्वरूप,
ब्रह्म-तेज ध्वज अनूप, सर्व सेव्य भगवा, वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा... ॥ १ ॥
त्याग, वैराग्य, ज्ञान अरू सेवा-धर्म गहन,
पूत हृदय अमरगान, शिव स्वरूप भगवा, वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा.. ॥ २ ॥
चन्द्र, चाणक्य, गुप्त, वर-विक्रम, परम भ्टट,
शिव, प्रताप, गुरू प्रदीप्त, मख शिखांक भगवा, वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा.. ॥ ३ ॥
शंकर दिग्विजय हस्त, तुलसी के परम भक्त,
गुरू समर्थ से प्रदत्त, विजय रूप भगवा, वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा.. ॥ ४ ॥
जननी के उच्च भाल पर, विलसे चिर-मराल,
युगल बाहुबर विशाल शांति-काय भगवा, वन्दौ श्री जगत्वन्द्य गुरू महान भगवा.. ॥ ५ ॥

६३) विश्व गुरू तव अर्चना में

विश्व गुरू तव अर्चना में, भेंट अर्पण क्या करें ?
जब की तन-मन-धन तुम्हारे, और पूजन क्या करें ?
प्राची की अरूणिम छटा है, यज्ञ की आभा-विभा है,
अरूण ज्योतिर्मय ध्वजा है, दीप-दर्शन क्या करें ? ॥ १ ॥
वेद की पावन ऋचा से, आज तक जो राग गूँजे,
वन्दना के उन स्वरों में, तुच्छ वन्दन क्या करें ? ॥ २ ॥

राम से अवतार आएँ, कर्ममय जीवन चलाएँ,
अजिर तन तेरा चलाएँ, और अर्चन क्या करें ? ॥ ३ ॥
पत्र-फल और पुष्प जल से, भावना ले हृदय तल से,
प्राण के पल-पल विपल से, आज आराधन करें.. ॥ ४ ॥

६४) हे महान् ! हे चिर महान्

हे महान् ! हे चिर महान् ! भगवा परम ज्योति-वान !
अर्चना में तुझे अर्पित, तन-मन,धन सहित प्राण ॥ हे महान् ! हे चिर महान्...
तेरी ज्योति प्रकाशे मन को, त्याग, प्रेम तेरी परिभाषा,
तेरा रूप रूचे नयनों को, भौतिक जग भासे सपना-सा,
नीलागगन में दिन-मणि दीपित, गैरिक मणिवत् हे द्युतिमान, अर्चना में तुझे अर्पित... ॥ १ ॥
रजित रश्मि-करों में तेरी, दिव्याभा उषा बन राजे,
अम्बुधि के अन्तर में तेरी, चिर-अशांत अभिव्यक्ति विराजे,
लहर-लहर कर गरज-गरज कर, तू करता अहरह आव्हान, अर्चना में तुझे अर्पित... ॥ २ ॥
यज्ञों की वन्ही ज्वाल है, क्रान्तिगान तेरा हो गुंजन,
प्रलय तुम्हारी पग-ध्वनी-सर्जन, तुम्हारी श्वासों का है स्पंदन,
रवि-शशि से द्युतिमान शहीदों, वीरों के मुख को मुसकान, अर्चना में तुझे अर्पित... ॥ ३ ॥

६५) जय जय जय हे ! भगवा ध्वज हे !

जय जय जय हे ! भगवा ध्वज हे ! जय हे राष्ट्र निशान ॥
राष्ट्र चेतना की अंगडाई । क्रांतिकारियों की तरूणाई ॥
तुझमें कोटि कोटि वीरों के प्रतिविंबत बलिदान ॥ जय हे राष्ट्र निशान ॥
मूर्त शक्ति तू, मूर्त त्याग तू । विश्व विजय का अमर राग तू ॥
तुझमें लक्षावधि प्राणों के सुरभित है बलिदान । जय हे राष्ट्र निशान ॥
दिशी दिशी में अवनी अम्बर पर, अपनी दिव्याभा प्रसरित कर ।
धर्म प्राण तू धर्म संस्कृति का करता आव्हान, जय हे राष्ट्र निशान ॥
यज्ञ ज्वाला में जलते मन सा, तप-तप कर निखरा कंचन सा,
तुझ पर अगणित बार निव्छावर सारा हिंदुस्थान । जय हे राष्ट्र निशान ॥

६६) भगवा ध्वज है अखिल राष्ट्र गुरू शत-शत इसे प्रणाम

भगवा ध्वज है अखिल राष्ट्र गुरू शत-शत इसे प्रणाम ।
लेकर भगवा ध्येय मार्ग पर बढे चले अविराम ॥
वैदिक ऋषियों के यज्ञों की इसमे दिखती ज्वाला,
इसमें तो उषा ने अपना अरूण रंग है डाला ।
इसका दर्शन कल्मष हरता करता मन निष्काम ॥ लेकर भगवा ध्येय मार्ग पर..
यह आर्यों की विजय पताका ऋषियों क वरवेश,

त्याग और शुचिता का देता सबको शुभ संदेश ।
लौकिक अध्यात्मिक उन्नति का उभय प्रेरणा धाम ॥ लेकर भगवा ध्येय मार्ग पर
गढ चितोड की जौहर ज्वाला इसमें जलती पाते,
देख इसे बलिदान अनेकों याद हमें हो आते ।
अर्जुन रथ और दुर्ग-दुर्ग पर फहरा यह अविराम ॥ लेकर भगवा ध्येय मार्ग पर
इसकी छाया में न निराशा भीति कभी न सताती,
स्वर्णिम गैरिक छटा हृदय में अमिट शक्ति उपजाती ।
फहरायेंगे दशों दिशा में यह पावन सुख धाम ॥ लेकर भगवा ध्येय मार्ग पर

६७) यह भगवा राष्ट्र निशान

यह भगवा राष्ट्र निशान फहराता प्यारा ।
वर्षाता पावित्र्य तेज की धारा ॥
रक्तिमा अरूणसंध्या का, दीप्तवर्ण अग्निशिखा का,
यह तिलक मातृभूमि का, ऋषि मनियों का तपस्वियों का, सन्तों का बल सारा ॥ १ ॥
यह असूरों का मर्दक है, यह सुजनों का चालक है,
यह विनतों का तारक है, रिपु रूधिर रंग से रंजित है वह नरवीरों का प्यारा ॥ २ ॥
वीरों ने इसे उठाया, राजाओं ने फहराया,
सम्राटों ने लहराया, अगणित माता सत्पुत्रों ने इस पर तन-मन वारा,, ॥ ३ ॥
चारित्र्य हमें सिखलाता, त्याग का मार्ग दिखलाता,
संदेश शौर्य का देता, इस नील गगन में ऊँचा फहरे भारत भूमि का तारा.. ॥ ४ ॥

६८) विजय ध्वजा फहरे

विजय ध्वजा फहरे, गौरव गरिमा युक्त राष्ट्र की, भू नभ में लहरें ।
उन्नत शीष अजेय हिमानी, दृढता गुरूता का अभिमानी,
हिन्दु महोदधि युग युग धोवे, अडिग चरण गहरे... ॥ १ ॥
पाँचजन्य का नाद अखण्डित, पुण्य की कीर्ति गाण्डिव विश्वजित,
कोटि कोटि देवता चतुर्दिक, निरत गात जय रे... ॥ २ ॥
आशुतोष सी मृदु उदारता, आशुतोष सी विकट उग्रता,
रूद्ररूप ताण्डवमय शिवता, भय दुःख दम्भ हरे... ॥ ३ ॥

केशव अर्चना

६९) उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम

उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम देवता की दिव्य गरिमा ।
तुम स्वयं ही बन गये थे ध्येय की साकार प्रतिमा ॥
स्नेह पाकर ध्येय का यह, देह बाती बन गया था,
और तिल-तिल के ज्वलन से, ज्योति जीवन हो गया था ।
आज है निर्वाण दीपक किन्तु अक्षुण्ण ज्योति-गरिमा, उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम.. ॥ १ ॥
ध्येय को ही देव कह कर हृदय मंदिर में बसाया,
देवता के युग-पदों में अर्घ्य जीवन का चढाया ।
कोटि उर में आज बिम्बित ध्येय की वह दिव्य प्रतिमा, उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम.. ॥ २ ॥
राह कण्टकमय बता कर स्वयं ही पथ पर चले थे,
नयन प्रमुदित, चरण दृढतम पथिक आजीवन रहे थे ।
बस इसी से बन गये तुम प्रेरणा की दिव्य प्रतिमा, उच्च उज्ज्वल हिम-शिखर सम.. ॥ ३ ॥

७०) केशव ! तुम्हे प्रणाम ! !

केशव ! तुम्हे प्रणाम ।
यज्ञ हित समिधा तुम्हारी, प्रेरणा उद्‌बोधकारी,
त्याग तप की वन्हि धधकी, स्वार्थ-तम को नष्ट करती,
ज्योति फैली अति ललाम, केशव ! तुम्हे प्रणाम ! ! ॥ १ ॥
यज्ञ के होता तुम्ही थे, प्रथम आहुति तुम बने थे,
वज्र-सी काया मिटाकर, अमर होकर अजर बनकर,
पथ किया आलोकवान, केशव ! तुम्हे प्रणाम ! ! ॥ २ ॥
पहिचाना तुमने माता को, उसके भटके प्रिय पुत्रों को,
नही चुकाया केशव तुमने, ऋण अपना पर उन्हे जताया, केशव ! तुम्हे प्रणाम ! ! ॥ ३ ॥

७१) घनघोर गर्जना घन समूह

घनघोर गर्जना घन समूह, चमचमा चमकती दामिनी,
अति धूसर था वह दिन अशेष, कल्पांत समय की यामिनी ॥
प्रगटाती वर्षा का प्रलय काल, लहरों का चलता चण्ड नृत्य,
सब भय-विव्हल जन थे कहते, 'निःसंशय यह है रूद्र कृत्य' ॥
उन लहरों के आघातों में, इक द्वीपखण्ड था रम्य दान्त,
उस चंचलता में निश्चल सा, उस ताण्डव में भी स्तब्ध शांत ॥
उस पर दीपक इक जलता था, घन धुवाँधार मे दीप्तिमान,
उस प्रलयकाल में स्फूर्ति रूप, भयभीतों का था अभयदान ॥
हे तमो-खण्ड के अमर दीप !, हे केशव ! हे हृदयाभिराम !
हे संघ शक्ति के प्राण रूप, है बार-बार तुमको प्रणाम !!

७२) चिरकाल रखें उर में

चिरकाल रखें उर में, केशव ! यह तुम्हारी प्रतिमा ॥
यह स्मारक तेरी कृति का, यह प्रतीक तेरी धृति का,
यह पूरक तव शक्ति का, धीरज निराश मन का,
हिंदु राष्ट्र का नव द्रष्टा, तू दिव्य विश्वकर्मा, केशव, यह तुम्हारी प्रतिमा ॥ ॥ १ ॥
निज रक्त-तिलक हम देंगे, प्राणों के दीपक सजेंगे,
भक्ति-भाव धूप जलेंगे, यह अञ्जलि अर्पित स्मृति-सुमनों की,
जपें दिव्य नाम, केशव ! यह तुम्हारी प्रतिमा ॥ ॥ २ ॥
यब जन्मी इसी धरती पर, यह पाठ तुम्हारा भू पर,
तिल-तिल गल अपनी धृति पर, तुम दग्ध हुए पर तव प्रकाश--
हैं मार्ग देत अपना, केशव, यह तुम्हारी प्रतिमा ॥ ॥ ३ ॥
फिर भारत में ले जन्म, कर व्याकुल जननी धन्य,
नही क्लेश निवारक अन्य, यह अपूर्ण अपना कार्य कराने-
हमें शक्ति देना केशव ; यह तुम्हारी प्रतिमा ॥ ॥ ४ ॥

७३) जलते जीवन के प्रकाश में

जलते जीवन के प्रकाश में, अपना जीवन तिमिर हटायें ।
उस दधिचि की तपःज्योति से, एक-एक कर दीप जलायें ॥
जल-जल दीप प्रखर तेजस्वी, अरूणाञ्चल माता का कर दें,'
अमृतमय, शोभामय, मधुमय, भारत-भू वैभव से भर दे;
निजादर्श रख, निज जीवन को हँसते-हँसते भेंट चढायें.. ॥ १ ॥
जगें जगायें मातृभूमि को, पुण्यभूमि को जन्म-भूमि को,
अर्पित कर दें जीवन की-, तरूणाई पावन देवभूमि को,
तन में शक्ति, हृदय में बल दो, प्रभु वह ज्योति पुनः प्रकटायें.. ॥ २ ॥
नही चाहिए पद यश गरिमा, सभी चढें माँ के चरणों में,
भारत-माता की जय केवल, शब्द पडे जग के कणों में,
आशा रख, विश्वास बढाकर, श्रध्दामय जीवन अपनायें.. ॥ ३ ॥

७४) देवता तुम राष्ट्र के

देवता तुम राष्ट्र के, क्या भेंट चरण में चढाऊँ ?
हम अभी तक सो रहे थे, आत्म-गौरव खो रहे थे,
बन किरण तुमने जगाया, क्या सुमन सा खिल न जाऊँ ? ॥ १ ॥
आत्मबल तुमने जगाया, प्राण का कल्मष भगाया,
ज्योतिर्मय किस ज्योति से मैं, आरती अपनी सजाऊँ ? ॥ २ ॥
पा तुम्हारे ही इशारे, बढ रहे है पग हमारे,

दो हमें बल युग-चरण में, चरण-द्वय अपने चढाऊँ ? ॥ ३ ॥
नयन मन जीवन हमारे, हो चुके कब के तुम्हारे,
तन समर्पित, मन समर्पित, मैं कही क्या भेंट लाऊँ ? ॥ ४ ॥
मातृ-मन्दिर आज जगमग, जागरण का पर्व पग-पग,
वन्दना के गीत गाओ, मैं उसी में स्वर मिलाऊँ ? ॥ ५ ॥
ले चलो जयमाल तुम जब, गूंथ लो उसमें मुझे तब,
माँ चरण में शरण पाकर, आमरण मंगल मनाऊँ ? ॥ ६ ॥

७५) धन्य तुम्हारा जीवनदान

धन्य तुम्हारा जीवनदान !
सोती दुनिया जाग रही थी, दूर निराशा भाग रही थी, मन में जलती आग रही थी,
उस क्षण में हम खो बैठे हैं तुमको हे नर-वर श्रीमान, धन्य तुम्हारा जीवनदान.. ॥ १ ॥
दबी राख में छिपे अग्निकण, उन्हो शोध कर लिया वीर प्रण, इन्ही कणों से विजय करू रण,
इधर पूर्ति का समय, उधर हा ! अकस्मात दीपक निर्वाण, धन्य तुम्हारा जीवनदान.. ॥ २ ॥
थे पत्थर अब मूर्ति बने है, थे अपयश अब कीर्ति बने है, आकांक्षा की पूर्ति बने है,
अरे दैव क्या चला गया वह, कलाकार मंत्रज्ञ महान, धन्य तुम्हारा जीवनदान... ॥ ३ ॥
भला चला जा जहाँ कोटि-शत, देख रहे है बाट वीर-व्रत, जो माता के लिये हत,
देख वही से अपने पथ के पथिकों का प्रचलन रण गान, धन्य तुम्हारा जीवनदान.. ॥ ४ ॥

७६) पूर्ण करेंगे हम सब केशव

पूर्ण करेंगे हम सब केशव ! वह साधना तुम्हारी ।
आत्म हवन से राष्ट्रदेव की, आराधना तुम्हारी ॥
निशि दिन तेरी ध्येय-चिंतना, आकुल मन की तीव्र वेदना,
साक्षात्कार ध्येय का हो, यह मन-कामना तुम्हारी, पूर्ण करेंगे हम सब केशव... ॥ १ ॥
कोटि-कोटि हम तेरे अनुचर, ध्येय-मार्ग पर हुए अग्रसर,
होगी पूर्ण, सशक्त राष्ट्र की, वह कल्पना तुम्हारी, पूर्ण करेंगे हम सब केशव.. ॥ २ ॥
तुझसी ज्योति हृदय में पावें, कोटि-कोटि तुझ से हो जावें,
तभी पूर्ण हो राष्ट्रदेव की, वह अर्चना तुम्हारी, पूर्ण करेंगे हम सब केशव.. ॥ ३ ॥

७७) राष्ट्र पुरूष हे युग पुरूष हे

राष्ट्र पुरूष हे ! युग पुरूष हे ! ! हो चुकी अब वेदि रचना ।
कोटिशः साधक खडे हैं, हव्य ले सर्वस्व अपना ॥
आप अब नय-मन्त्र बोलें, और धधके यज्ञ ज्वाला ।
एक इंगित पर चढाएँ, लक्ष जीवन पुष्प माला ।
पाप्त वैभव माँ निहारे, पूर्ण सबका दिव्य सपना, राष्ट्र पुरूष हे युग पुरूष हे... ॥ १ ॥
आज स्वार्थ द्वेष कलुषित, राष्ट्र का दुख पूर्ण जीवन,
हो तुम्हारी प्रेरणा से, चिर-सुगन्धित राष्ट्र कण-कण ।
हम करें सर्वस्व देकर, राष्ट्र की नव दिव्य रचना, राष्ट्र पुरूष हे युग पुरूष हे... ॥ २ ॥

७८) ले नमस्ते ओ उपेक्षित

ले नमस्ते ओ उपेक्षित !
दुःख का गुरू भार माँ के, शीश तेरा दो रहा था,
तनु जली तेरा उजाला विश्व-भर में हो रहा था,
उस तुझे पाकर भरत भू हो गई सौभाग्य मण्डित ॥ ले नमस्ते ओ उपेक्षित..
वेदना तेरे हृदय में स्थान पाकर आ बसी थी;
शान्तिदाता देख तुझको खिन्न वदन वह हँसी थी,
नयन से धारा बही थी मोतियों की सी अखण्डित ॥ ले नमस्ते ओ उपेक्षित..
बध्द कर सकती तुझे वे बेडियाँ भी थी कहाँ ?
बांध कर रखती तुझे माया बिचारी भी कहाँ ?
अस्तित्व भर से वीर तेरे शान माँ की हो सुरक्षित ॥ ले नमस्ते ओ उपेक्षित..
मान्यवर हे वन्द्य नरवर ! शुक्र के तारे महात्मन् !
हे तपस्वी ! हे गुरो ! हे मानधन ! हे पुण्य पावन !
स्मरण कर तेरा, निराशा हो गती है खण्ड-खण्डित ! ले नमस्ते ओ उपेक्षित...
धवल यश का गान तेरे, क्या करे वाणी बिचारी ?
शत शतघ्नि नाद तेरा; उग्र सा रोमाञ्चकारी ।
विश्व यश तेरा सुनेगा, शान्त नभ होगा निनिादित ॥ ले नमस्ते ओ उपेक्षित..

७९) लो श्रध्दांजली राष्ट्र पुरूष

लो श्रध्दांजली राष्ट्र पुरूष, शत कोटि हृदय के कंज खिले हैं ।
आज तुम्हारी पूजा करने, सेतू हिमालय संग मिले हैं ॥
माँ के पद्-पद्मों में तुमने जो अमूल्य उपहार रखा है ,
सत्य चिरन्तन अक्षय है, हिन्दू की अमिट रूपरेखा है,
पावन संस्कारों से निर्मित, तन मन ये अनभेद्य किले है ॥ आज तुम्हारी पूजा करने... ॥ १ ॥
तुमने किया व्यतीत कठिनतम, लोक-प्रसिध्द-पराङ्मुख जीवन ।
भीष्म समान रहे तुम अविचल, हिन्दु राष्ट्र के हित आजीवन,
देव ! तुम्हारी घोर तपस्या के ही तो ये सुफल मिले हैं ॥ आज तुम्हारी पूजा करने... ॥ २ ॥
तुम अजात-अरि लोक-संग्रही. संघ शक्ति के वलयकोण थे,
देव ! बता दो प्रतिपक्षी भी क्यों इतने संतुष्ट मौन थे,
सुनकर पावन चरित तुम्हारा, कोटि हृदय प्रस्तर पिघले हैं ॥ आज तुम्हारी पूजा करने... ॥ ३ ॥
आज तुम्हारी पार्थिव प्रतिमा, चर्म चक्षुओं से अदृष्य है,
किन्तु कोटि उर निलयों में तव दिव्य मूर्ति प्रस्थित अखण्ड है,
तेजोमय प्रतिबिंब तुम्हारे, स्वयं सिध्द अगणित निकले हैं ॥ आज तुम्हारी पूजा करने... ॥ ४ ॥

८०) शून्य पथ पर बढ रही थी

शून्य पथ पर बढ रही थी, देश की उठती जवानी;
शून्य में लय हो रही थी, राष्ट्र जीवन की कहानी;
तेज प्रगटा था उसी क्षण, धर्म आया द्रवित हो कर–
सम्पर्क अमृत को पिलाकर, शक्ति का नव सृजन करने–ध्येय आया देह लेकर, ॥ १ ॥
विषमता में एकता का सूत्र खण्डित हो रहा था;
दिव्याधिष्ठित राष्ट्र–जीवन शक्ति का क्षय हो रहा था;
संस्कृति का स्नेह प्रगटा, धर्म आया द्रवित होकर–
सम्पर्क अमृत को पिलाकर, शक्ति का नव सृजन करने–ध्येय आया देह लेकर, ॥ २ ॥
परकीय जीवन की लहर में, बह रहा था देश अपना;
आत्म विस्मृति के भँवर में, हत–बल हुआ था देश अपना;
विश्व प्रगटा था उसी क्षण, धर्म आया द्रवित होकर–सम्पर्क अमृत को पिलाकर,
शक्ति का नव सृजन करने–ध्येय आया देह लेकर, ॥ ३ ॥

८१) स्मरे राष्ट्र सारा भरे प्रेम से जो

स्मरे राष्ट्र सारा भरे प्रेम से जो,
प्रभावी तुम्हारी तपो साधना, अति व्याकुला बुध्दि दो गाऊँ कैसे,
यशोगान की गौरवालापना ? कभी वासना थी न लोकेषणा की,
जगाई कृति दीप्ति तेजस्वला, सहस्त्रों मनों में वही जागृता हो,
उठी हिन्दु स्वातंत्र्य की प्रज्ज्वला.... ॥ १ ॥
न हो देव ! पीडा तुम्हें चिंतना से, सुनोंगे हमीं दो यशोगर्जना,
बहे नेत्र से भावना–नीर–धारा, मदीया यही अश्रु–पुष्पार्चना... ॥ २ ॥

८२) संघ मन्त्र के हे उद्‌गाता

संघ मन्त्र के हे ! उद्‌गाता ! अमिट हमारा तुमसे नाता ॥
कोटि–कोटि नर नित्य मर रहे, जब जग के नश्वर वैभव पर,
तब तुमने हमको सिखलाया, मर कर अमर बने कैसे नर,
जिसे जन्म दे बनी सपूती, शस्य श्यामला भारत माता । अमिट हमारा तुमसे नाता ॥..
क्षण–क्षण, तिल–तिल, हँस–हँस जलकर, तुमने पैदा किी जो ज्वाला,
ग्राम–ग्राम में प्रान्त–प्रान्त में, दमक उठी दीपों की माला,
हम किरणें है उसी तेज की, जो उस चिर जीवन से आता ॥ अमिट हमारा तुमसे नाता ॥..
श्वास–श्वास से स्वार्थ–त्याग की, तुमने पैदा की जो आँधी,
वह न हिमालय से रूक सकती, सागर से न जायेगी बाँधी,
हम झोंके उस प्रबल पवन के, प्रलय स्वयं जिससे थर्राता ॥ अमिट हमारा तुमसे नाता ॥...
कार्य चिरंतन तव अपना हम, ध्येय मार्ग पर बढते जाने,
पूर्ण करेंगे दिव्य साधना, संघ–मन्त्र मन में दोहराते,
अखिल जगत में फहरायेंगे, हिन्दु–राष्ट्र की विमल पताका ॥ अमिट हमारा तुमसे नाता ॥..

८३) हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब सा बन जाय

हम सभी का जन्म तव प्रतिबिम्ब सा बन जाय,
और अपूरी साधना चिर पूर्ण बस हो जाय !
बाल्य जीवन से लगाकर अन्त तक की दिव्य झाँकी,
मूक आजीवन तपस्या जा सके किस भाँति आँकी,
क्षीर सिंधु अथाह, विधि से भी न नापा जाय,
चाह है उस सिंधु की हम बूंद ही बन जाय... ॥ १ ॥
एक भी क्षण जन्म में , नही आपने विश्राम पाया,
रक्त के प्रत्येक कण को हाय पानी सा सुखाया ।
आत्म-आहुति दे बताया राष्ट्रमुक्ति उपाय,
एक चिनगारी हमे उस यज्ञ की छू जाय.. ॥ २ ॥
थे अकेले आप लकिन बीज का था भाव पाया,
वो दिया निज को अमर वट, संघ भारत में उगाया ।
राष्ट्र ही क्या, अखिल जग का आसरा हो जाय,
और उसकी हम टहनियाँ-पत्तियाँ बन जाय ॥ ३ ॥
आपके दिल की कसक हो वेदना जागृत हमारी,
'याचि देही याचि डोला' मन्त्र रटते है पुजारी ।
बढ रहे हम आपका आशीष स्वर्गिक पाय,
जो सिखाया आपने प्रत्यक्ष हम कर पाय.... ॥ ४ ॥
साधना की पूर्ति फिर लवमात्र में हो जाय ॥

८४) हमें वीर केशव मिले आप जब से

हमें वीर केशव मिले आप जब से, नई साधना की डगर मिल गई है ॥
भटकते रहे ध्येय-पथ के बिना हम, न सोचा कभी देश क्या धर्म क्या है ?
न जाना कभी पा मनुज-तन जगत में, हमारे लिये श्रेष्ठतम कर्म क्या है
दिया ज्ञान जब से मगर आपने है, निरंतर प्रगति की डगर मिल गई है ॥ १ ॥
समाया हुआ घोर तम सर्वदिक् था, सुपथ है किधर कुछ नहीं सूझता था,
सभी सुप्त थे घोर तम में अकेला, हृदय आपका है तपी जूझता था,
जलाकर स्वयं को किया मार्ग लगभग, हमें प्रेरणा की डगर मिल गई है ॥ २ ॥
बहुत थे दुखी हिन्दु निज देश में ही, युगों से सदा घोर अपमान पाया,
द्रवित हो गये आप यह दृष्य देखा, नही एक पल को कभी चैन पाया,
हृदय की व्यथा संघ बन फूट निकली, हमें संगठन की डगर मिल गई है.. ॥ ३ ॥
करेंगे पुनः हम सुखी मातृ भू को, यही आपने शब्द मुख से कहे थे,
पुनः हिन्दु का हो सुयश गान जग में, संजोये यही स्वप्न पथ पर बढ थे,
जला दीप ज्योतित किया मातृ मन्दिर, हमे अर्चना की डगर मिल गई है.. ॥ ४ ॥

८५) हे भारतीय पथ के प्रदीप

हे भारतीय पथ के प्रदीप, केशव तुमको शत-शत प्रणाम ॥
तुम चले, चल पडी तरूणाई, युग ने ली नूतन अंगडाई,
कुंकुम थाल सजा कर में, स्वागत को उषा स्वयं आई,
जब तक न प्राप्त गन्तव्य हुआ, तब तक न लिया तुमने विराम ॥..हे भारतीय पथ के प्रदीप.. ॥ १ ॥
हे युगादर्श युग निर्माता , दे गये एक तुम मन्त्र नव्य,
जिससे पायेगी भारत माँ, फिर से अपना वह रूप भव्य,
हे हिन्दु भुमि के वीर पुत्र, हे युग पुरूषों में दिव्य नाम । हे भारतीय पथ के प्रदीप... ॥ २ ॥
बलिदान यज्ञ से पुनः आज, जागा है नव पौरूष प्रचण्ड,
इस हिन्दु राष्ट्र की दिव्य ध्वजा, फहरेगी फिर से दिग्दिगन्त,
उस दिन नभ-तारक थाल सजा, आरती उतारेगा ललाम, हे भारतीय पथ के प्रदीप.. ॥ ३ ॥

८६) ध्येय देव की दिशा में

ध्येय देव की दिशा में, चरण सतत चल रहे ।
तव स्मृति की सुरभी बेल मन में नित्य बढ चले ॥
गति, मति, द्युति तुम्हारी, हम सभी में आ बसे,
सुख-दुखों की हर घडी में, स्मृति तुम्हारी धैर्य दे,
गति कभी रूके नही, ध्येय मार्ग पर बढे... ॥ १ ॥
देख चतुर्दिक महान, दुख दैन्य आपदा,
द्रवित हृदय भार लिये, त्याग सकल संम्पदा,
दम्भ मोह हो हताश देखते तुम्हें रहें... ॥ २ ॥
चरण बस बढे चले, वायु की गति लिये,
मन सदैव व्यग्र हो, ध्रुव सुध्येय के लिये,
तव स्मृति का कवच धार सिध्द युध्द को खडे.. ॥ ३ ॥
धूली के कणों से आज, घोष उठ रहा महा,
स्मृति सुगन्ध स्पर्श से, देह धन्य है अहा ।
युगों-युगों में एक ऐसी, अवतरित विभूति है... ॥ ४ ॥

८७) लक्ष्य तुम्हारा प्राप्त किये बिन

लक्ष्य तुम्हारा प्राप्त किये बिन, चैन हम नही लेंगे,
हमें मिली प्रेरणा तुम्हारी पावनतम स्मृति की ॥
जीवन भर संगठन कार्य को करके बने तपस्वी,
पुण्य साध थी एकमेव यह भारत बने यशस्वी,
हिमगिरी से कन्या कुमारी तक संस्कृति की जय बोली,
राष्ट्र भक्त थे, ज्ञान मूर्ति थे, ये तत्वज्ञ मनस्वी

है हिन्दुत्व राष्ट्र का द्योतक ले विचार यह पावन ।
हमें मिली प्रेरणा श्रेष्ठतम भारतीय संस्कृति की ॥
प्रभुता का ऐश्वर्य तुम्हारे मन को मोह न पाया,
अहंकार तव प्रतिच्छाया तक आने में सकुचाया,
कार्य अहर्निश, कार्य निरन्तर, कार्य देश के हित में,
करते रहना ही जीवन है श्रेष्ठ मन्त्र सिखलाया,
त्याग अहं की कार्य करेंगे सतत राष्ट्र पूजा का ।
हमें मिली प्रेरणा तुम्हारी शान्त सुमधुर पध्दती की ॥
ध्येय तुम्हारा निज जीवन में प्रतिबिंबित कर लेंगे,
जीवन अपना कोटि जन्म तक राष्ट्र कार्य में देंगे,
संघ-मन्त्र का गुंजन प्रतिक्षण प्रतिपल आजीवन में,
राष्ट्रदेव की प्रतिमा उर में प्रस्थापित कर लेंगे,
हे केशव तेरे अनुगामी व्रत लेकर बढते है ।
रोक न पायेगा कोई भी बन्धन राह प्रगति की ॥

८८) हे युग द्रष्टा हे महायति

हे युग द्रष्टा ! हे महायति ! पगवन्दन ।
हे केशव तुमको कोटि-कोटि अभिवादन ॥
हे महातिमिर के अंशुमालि, हे युग-परिवर्तक चिरमहान,
हे शक्ति-पुञ्ज साहस अमोघ-पदवन्दन, हे केशव तुमको कोटि-कोटि अभिवादन ॥ ॥ १ ॥
हे हिन्दु-हृदय के स्वाभिमान, हे नव-जीवन के नव-विहान,
हे अपमानित के सजग त्राण-पदवन्दन.. हे केशव तुमको कोटि-कोटि अभिवादन ॥ ॥ २ ॥
हे राष्ट्र-तरी के कर्णधार, हे भारत माँ के मृदु-दुलार,
हे सत्य-सिन्धु हे वीर-व्रती-पदवन्दन.. हे केशव तुमको कोटि-कोटि अभिवादन ॥ ॥ ३ ॥
हे दिक् ज्योति शुभ आराधन, हे पूज्य चरण अति पावन,
हे राष्ट्र-पुरूष हे महाप्राण, पदवन्दन.. हे केशव तुमको कोटि-कोटि अभिवादन ॥ ॥ ४ ॥

८९) तुमने सोता देश जगाया

तुमने सोता देश जगाया, सोते युवक जगाये ।
धर्म-कर्म के संघ तत्व के अनुपम पाठ पढाये ॥
धीर दासता का बंधन था, संघ मन्त्र के दाता ।
स्वार्थ तिमिर में देश फँसा था, नव भारत निर्माता ।
नवल सृष्टि की तुमने केशव, जीवन दीप जलाये... ॥ १ ॥
अपनी संस्कृति धर्म जाति का, गौरव भी सिखलाया,
शक्ति-संगठन-राष्ट्र प्रेम को जीवन लक्ष्य बनाया ।
कर्म योग के प्रतिक तुम्हारे पथ पर जग चल पाये... ॥ २ ॥

मिटटी से मूर्ति बनाकर प्राण फूँक देते थे,
युवकों की तुम स्नेह-शक्ति से दिव्य दृष्टि देते थे,
घर-घर में कर्मवीरों को तुम निर्मित कर पाये... ॥ ३ ॥
केशव स्वप्न तुम्हारा कितने नयनों में छाया,
और साधना के पथ पर ही यौवन बढता आया ।
बाधाओं से मिले प्रेरणा माँ का दीप जलाये... ॥ ४ ॥

९०) मौन नमन हे मौन तपस्वी

मौन नमन हे मौन तपस्वी, धीरोदात्त पुजारी ।
तुम्हें जन्म दे धन्य हुयी माँ भारत भूमि हमारी ।
नव जीवन भर कर कण-कण में ब्रह्म प्रेम रस धारा ।
अमिट राग भर कर हे माधव सार्थक नाम तुम्हारा ।
चिर बसन्त में फूल रही है आशा की फुलवारी ॥ धीरोदात्त पुजारी ॥ १ ॥
प्राची का भी मुख उज्ज्वल है माधव किरणें फैली ।
चला अंधेरा ले समेट कर अपनी चादर मैली ।
अंधकार विज्ञान निशा की मिटी कालिमा सारी । धीरोदात्त पुजारी ॥ २ ॥
प्रलय वेग को रोक जटा ने बहा शान्त रस धारा ।
आज विश्व में प्रगटित है शिव सुन्दर देश तुम्हारा ।
तरल गरल भी पार किया है अचराचर हितकारी । धीरोदात्त पुजारी ॥ ३ ॥
देव ! तुम्हारी पुण्य स्मृति में रोम-रोम हर्षित है ।
देव ! तुम्हारे पद पद्मों पर श्रध्दांजलि अर्पित है ।
माधव बन ध्रुव ज्योति दिखा दो जय मानस भयहारी । धीरोदात्त पुजारी ॥ ४ ॥

९१) दीजिए आशिष अपना

दीजिए आशिष अपना, भावमय हे याचना ॥
जीत ले जग का हृदय जो, आपका यह शील अनुपम ।
वज्र को नवनीत कर दे, स्नेहमय वाणी सुधा सम ।
मातृ भू की वेदना जो आपके उर में पली थी ।
अंश भी हमको मिले तो पूर्ण होवे साधना ॥ दीजिए आशिष अपना... ॥ १ ॥
आपकी हो प्रेरणा से ध्येय पथ पर बढ रहे हैं ।
आपसे ज्योतित अनेकों दीप तिल-तिल जल रहे है ।
राष्ट्र जीवन का गहनतम शीघ्र ही मिटकर रहेगा ।
सुप्त हिन्दू राष्ट्र की दी आपने नव चेतना ॥ दीजिए आशिष अपना... ॥ २ ॥
मार्ग संकट पूर्ण है पर आप है जब मार्ग दर्शक ।
शूल भी होंगे सुमन जब जी रहे है कोटि साधक ।
दीजिए वह शक्ति जिससे बढ सकें पथ पर निरन्तर ।
कर सके साकार ऋषिवर आपकी हम कल्पना ॥ दीजिए आशिष अपना... ॥ ३ ॥

९२) झुक रहे मस्तक चरण में

झुक रहे मस्तक चरण में राष्ट्र ऋषिवर नमन तुमको,
आत्म आहुति स्वयं अपनी कर गए, इदन्नमम् की भावनाएँ भर गये,
स्वयं होता, हव्य समिधा मन्त्र स्त्रष्टा, यज्ञ की साकार गरिमा । नमन तुमको .... ॥ १ ॥
उठ रहे वन्दना के स्वर अनेकों, पुष्प पूजन थाल थामें कर अनेकों ।
दीप अगणित मौन स्मृति में जल रहे है, मातृ मन्दिर के पुजारी । नमन तुमको.... ॥ २ ॥
दिव्य प्रतिभा साध्य, साधक, साधना की, अमर आस्था अहर्निश आराधना की ।
संगठन की प्रेरणा के सजग स्मारक, परम पावन पूज्य माधव । नमन तुमको.... ॥ ३ ॥

९३) हर स्वयं सेवक हृदय में

हर स्वयं सेवक हृदय में, कृति संजोये है तुम्हारी,
भूल सकता कौन निशि दिन, राष्ट्र का चिंतन तुम्हारा,
ध्येय के हित साधना में व्यस्त वह जीवन तुम्हारा ।
प्राण का नैवेद्य दो माँ, आरती तुमने उतारी ॥ हर स्वयं सेवक हृदय में.. ॥ १ ॥
शिव सदृश देखा जगत में, वह गरल पीना तुम्हारा,
विश्व के कल्याण के हित, ही सतत जीना तुम्हारा,
शील संयम से तुम्हारे, दानवों की शक्ति हारी ॥ हर स्वयं सेवक हृदय में... ॥ २ ॥
शत सहस्त्रों की तुम्हीं ने ध्येय पर चलना सिखाया,
स्नेह देकर बात देकर दीप सा जलना सिखाया,
रच दिये तुमने अनेकों मातृ मंदिर के पुजारी, हर स्वयं सेवक हृदय में... ॥ ३॥
देखने साक्षात तुमने राष्ट्र को वर देश धारे,
विजय का विश्वास लेकर चरण चलते थे तुम्हारे ।
राष्ट्र प्रतिमा त्याग तप की शक्ति से तुमने सवाँरी, हर स्वयं सेवक हृदय में... ॥ ४ ॥
देह नश्वर किंतु कृति के रूप में तुम तो अमर हो,
हर हृदय में राष्ट्र निष्ठा की तुम्ही उठती लहर हो,
देखते अदृश्य नयनों से तुम्ही कृतियाँ हमारी, हर स्वयं सेवक हृदय में... ॥ ५ ॥

९४) कण कण भी यदि अणु में

कण कण भी यदि अणु में तेज हो तुम्हारा ।
चमकायें तिमिर भरा भूमण्डल सारा ॥
तव स्मित से फुल्ल सदा, तेज प्रभामय वसुधा,
धन तुम का नाम कहाँ ? ध्येय सवेरा ॥ ॥ १ ॥
यदि अबाक धरि गिरा, मधुमधुरा गंभीरा,
गूँज रही श्रवणों में अविरत स्वरधारा ॥ ॥ २ ॥
चिर समाधी की धुलि, प्रिय पावन पुण्यशाली,

दिव्य मलय गंध भरा पावन झकोरा.. ॥ ३ ॥
चिर वियोग समय दिया, कार्य दीप हाथ लिया,
जीवनधृत दे अविरत दस दिशा उजियारा.. ॥ ४ ॥
कर करके याद तम्हे, मन ही मन रोवे,
अंसुवन को पोंछ बढें हाथ दो तुम्हारा... ॥ ५ ॥
केशव को नित स्मरते, पत्थर भी तर जाते,
नग पर्वत चल पडते, नाम मन्त्र द्वारा.. ॥ ६ ॥
तव समाधी के सन्मुख, नत मस्तक हे भावुक,
हों न कभी, पथ विन्मुख दो असीस प्यारा... ॥ ७ ॥

९५) ध्येय मंदिर की दिशा में

ध्येय मंदिर की दिशा में, पग सदा बढते रहे ।
हृदय में तव स्मृति लता नित पल्लवित होती रहे ।
कृपा से हमको मिले गति मति सहित द्युति आपकी ।
कष्ट में सुख में सदा आ, बसी हो छवी आपकी ।
ध्येय निष्ठा हृदय उर में पथिक बस चलता रहे.. ॥ १ ॥
देख कर चहूँ ओर दुःख दारिद्रय भीषण आपदा ।
द्रवित होकर आपने फिर त्याग दी सब संपदा ।
दंभ मोह हताश होकर आपको लखते रहे... ॥ २ ॥
शत युगों में आप जैसा अवतरित व्यक्तित्व पाया ।
आप के स्मृति कवच ने नित्य ही हमको बढाया ।
दृष्टि निश्चय भाव से ध्रुव ध्येय पर केन्द्रित रहे... ॥ ३ ॥
धूल के प्रत्येक कण से घोष उठता है महा ।
आपका पद-स्पर्श पाया देह धन्य हुई महा ।
चरण की गति हो अखण्डित और चढती रहे... ॥ ४ ॥

९६) शत नमन माधव चरण में

शत नमन माधव चरण में , शत नमन माधव चरण में ।
आपकी पीयूष वाणी, शब्द को भी धन्य करती,
आपकी द्युति चाल जिसको देख विधि की गति ठिठकती ।
मेरू गिरि सा मन अडिग था आपने पाया महात्मन्,
और वह निश्चह हँसी जो गूँजती थी इस दिशा में.... ॥ १ ॥
ज्ञान में तो आप ऋषिवर दीखते थे आदि शंकर,
किन्तु भोला भाव शिशु सा खेलता मुख पर निरन्तर,
श्रेष्ठ ऐसे थे अलौकिक आप अनुपम युग पुरूष थे,
दीन दुखियों के लिए थी अमित ममता तव हृदय में.... ॥ २ ॥

दुःख सुख निन्दा प्रशंसा, आपको को सब एक ही थे,
दिव्य गीता ज्ञान से युत ओप तो स्थित प्रज्ञ ही थे ।
त्याग ऐसा आपका वह, शार्य ओ तेजस्विता थी ।
मात्र दर्शन भस्म कर दे घोर-षट्रिपु एक क्षण में... ॥ ३ ॥
सिंधु सा गंभीर मानस थाह कब पाई किसी ने,
आ गया सम्पर्क में जो धन्यता पाई उसी ने ।
आप क्या थे ? कौन थे ? रह रह हमें यह भान होता ।
आप थे 'श्री हरि', हमारे मध्य माधव मनुज तन में.... ॥ ४ ॥

ध्येय चिंतन

९७) आज तन-मन और जीवन

आज तन-मन और जीवन, धन सभी कुछ हो समर्पण ।
राष्ट्र हित की साधना में, हम करें सर्वस्व अर्पण ॥
त्याग कर हम शेष जीवन, की सुसंचित कामनायें ।
ध्येय के अनुरूप जीवन, हम सभी अपना बनायें ।
पूर्ण विकसित शुध्द जीवन, पुष्प से ही राष्ट्र अर्चन ।
आज तन-मन और जीवन... ॥ १ ॥
यज्ञ हित हो पूर्ण आहुति, व्यक्तिगत संसार स्वाहा ।
देश के कल्याण में हो, अतुल धन भण्डार स्वाहा ।
कर सकें विचलित न किंचित, मोह के ये कठिन बन्धन ।
आज तन-मन और जीवन... ॥ २ ॥
हो रहा आव्हान तो फिर, कौम असमंजस हमें है ।
उच्चतम आदर्श पावन, प्राप्त युग-युग से हमें हैं ।
हम ग्रहण कर लें पुनः वह, त्यागमय परिपूर्ण जीवन ।
आज तन-मन और जीवन... ॥ ३ ॥

९८) एकता आज्ञांकिता का मन्त्र

एकता आज्ञांकिता का मन्त्र जीवन व्याप्त हो ।
श्वास ओ, प्रश्वास में निज नेता पर विश्वास हो ।
स्वेच्छा से जीवन अपना, राष्ट्र के आधीन किया,
कार्य शक्ति का एक हृदय से संगठना को दान दिया
इन प्राणों का तो केवल निज नेता ही अधिकारी हो.... ॥ १ ॥
जन-भ्रान्ति को युक्तिबुध्दि से सहज रूप में दूर करें,
संगठना का रूप देखने एकत्रित नित हुआ करें ।
महत्कार्य का भानु उदय हो रणभेरी जब बजती हो... ॥ २ ॥

स्नेह भरे उत्साह भरे रग-रग में भारत माँ की,
सतत जलायें दीपमालिका ज्वलंत अंतःकरणों की ।
संकेतों की राह देखते असंख्य ज्योति घर-घर हो... ॥ ३ ॥
वायु द्वारा चिनगारी से दावाग्नि जल उठती है,
जल-बिन्दु की प्रचंड धारा सृष्टी प्रलय कर सकती है ।
संगठना में अजेय शक्ति पूर्ण विकसित होती हो..... ॥ ४ ॥
अखण्डता की उपासना, घर-घर निशि-दिन होती हो,
पंक्ति पंक्ति इतिहास शौर्यमय, उर रोमाञ्चित करती हो ।
भावी रण में निर्भय छाती अनुपम दृष्य रंगाती हो... ॥ ५ ॥

९९) कण्टक पथ अपनाना सीखें

कण्टक पथ अपनाना सीखें ।
जिये देश के लिये, देश हित तिल-तिल कर मर जाना सीखे ॥
राग-रंग की नव तरंग में माँ की याद भुलाते आये,
भूल गये अपने वैभव को, यश औरों का गीत आये ।
असिधारा का व्रत अपनाकर, बूंद-बूंद ढल जाना सीखे ।
कण्टक पथ अपनाना सीखें... ॥ १ ॥
बढे चले निज ध्येय बिन्दु तक, जग का ऐश्वर्य भुलाकर,
दूर करें पथ का अँधियारा निज जीवन का दीप जलाकर,
अडिग रहे जो झंझा में भी, ऐसी ज्योति जगाना सीखे । ॥ २ ॥
अपमानों की याद जगाकर, सुनें करूण माता का क्रन्दन,
कोटि-कोटि कण्ठोंसे गूँजे, आज पुनः प्रलयंकर गर्जन;
जननी के पावन चरणों में जीवन पुष्प चढाना सीखे !
कण्टक पथ अपनाना सीखें.... ॥ ३ ॥

१००) केसरी बाना सजाये

केसरी बाना सजाये वीर का श्रंगार कर ।
ले चले हम राष्ट्र-नौका को भँवर से पार कर ॥
डर नही तूफान बादल का अंधेरी रात का,
डर नही है धूर्त दुनिया के कपट की घात का,
नयन में ध्रुव ध्येय के अनुरूप ही दृढ भाव भर ॥ ले चले हम राष्ट्र-नौका... ॥ १ ॥
है भरा मन में तपस्वी मुनिवरों का त्याग है,
और हृदयों में हमारे वीरता की आग है,
हाथ हैं उद्योग में रत राष्ट्र-सेवा धार कर ॥ ले चले हम राष्ट्र-नौका.... ॥ २ ॥

सिंधु से आसाम तक योगी–शीला से मानसर,
गूँजते है विश्व जननी प्रार्थना के उच्च स्वर,
सुप्त भावों को जगा उत्साह का संचार कर ।। ले चले हम राष्ट्र–नौका... ।। ३ ।।
स्वार्थ का लवलेश सत्ता की हमें चिन्ता नही,
प्रांत भाषा वर्ग का कटु भेद भी छूता नही,
एक है हम एक आशा योजना साकार कर ।। ले चले हम राष्ट्र–नौका... ।। ४ ।।
शपथ लेकर पुर्वजों का आस हम पूरी करें,
मस्त हो कर कार्य–रत हो ध्येय मम जीवन धरें,
दे रहे युग को चुनौती आज हम ललकार कर ।। ले चले हम राष्ट्र–नौका... ।। ५ ।।

१०१) जननी जगन्मात की

जननी जगन् मात की, प्रखर मातृभक्ति की,
सुप्त भावना जगाने हम चले ।।
सदैव से महान जो सदैव ही महान हो, कोटि–कोटि कण्ठ से अखण्ड वंद्य गान हो,
मातृ–भू की अमरता समृध्दी ओ अखण्डता की, शुभ्र कामना जगाने हम चले, जननी जगन्मात की.... ।। १ ।।
एक माँ के पूत एक धर्म एक देश है, फिर भी प्रेम के स्थान ईर्ष्या व द्वेश है,
सुबन्धुता व स्नेह की सुकार्य ओ' सुध्येय की, स्वच्छ भावना जगाने हम चले, जननी जगन्मात की... ।। २ ।।
प्रान्त–भेद भाषा–भेद भेद भी अनेक है, छिद्र–छिद्र राष्ट्र का शरीर देख खेद है,
अनेकता व भेदता से एकता अभेदता की, श्रेष्ठ भावना जगाने हम चले, जननी जगन्मात की... ।। ३ ।।
व्यक्ति–व्यक्ति के हृदय समष्टि भाव को जगा, सकामता व स्वार्थता के हेय भाव को मिटा,
परहितों सुखो में निज के हित–सुखों को देखने को, श्रेष्ठ चाह को जगाने हम चले, जननी जगन्मात की.....।। ४ ।।
निज सुखों की एक ओर छोड करके लालसा, चल पडे है मातृ–भू–उत्थान का ले रास्ता,
श्रम से तप से त्याग से सख–दीप जगमगा, महान चेतना जगाने हम चले, जननी जगन्मात की... ।। ५ ।।

१०२) जीवन दीप जले !

जीवन दीप जले !
जीवन दीप जले ऐसा, सब जग को ज्योति मिले ! जीवन दीप जले !
इसी सत्य पर रामचंद्र ने राजपाट सब त्याग दिया,
छोड अवध माया की नगरी, कानन को प्रस्थान किया,
सुख–वैभव को लात मार कर, कष्टों का सहवास किया,
षट्रस–व्यंजन त्याग, जंगली फल खाये सर–नीर पिया,
स्वयं कंटकों को चूमा औरों के कंटक दूर किये,
जन्म सफल है उस मानव का, जो परहित सदा जिये,
तृषितों को सुरसरि देने जो हिमगिरी सा चुपचाप गलें, जीवन दीप जले !.. ।। १ ।।

रसिक शिरोमणी कृष्णचंद्र ने वृंदावन को बिसराया,
छोड बिलखतें ग्वाल-बाल वह निर्मोही भी कहलाया,
किन्तु लोक-कल्याण-मार्ग ही केवल उसने अपनाया,
वहीं गोपियों का नटवर फिर योगिराज था कहलाया,
गीता की हर पंक्ति-पंक्ति में अर्जुन को वे समझाते,
आगे बढ नरसिंह जगत के झूठे सब रिश्ते-नाते,
अति विस्तृत कर्तव्य मार्ग है हर मानव इस ओर चले, जीवन दीप जले !.... ॥ २ ॥
सत्य ढूंडने वन-वन भटके बुध्दिदेव बन सन्यासी,
छोड भवन परिवार बना युवराज जंगलों का वासी,
विष्णुगुप्त ने निज प्रतिभा से भारत-भाग्य जगाया था,
किन्तु कभी क्या उस योगों को शासन-लोभ सताया था,
वीर प्रताप, शिवा, बैरागी सबके है सन्देश यही,
मातृभूमि हित जो मरता है माँ का सच्चा पूत वहीं,
वही सुमन सुरभित हो खिलते जो काँटों के बीच पले, जीवन दीप जले !... ॥ ३ ॥
सत्य-सृष्टि करने केशव थे नगर-ग्राम घर-घर फिरते,
संघ-मंत्र में हिन्दुराष्ट्र की प्रतिभा वे देते चलते,
निज जीवन सर्वस्व लगा वे मूक वेदना छोड गये,
हिन्दु-राष्ट्र के भव्य-भवन का स्वप्न अधुरा छोड गये,
हृदय-हृदय में अग्नि बसो जो दावानल सम प्रगटायें,
उस दधीचि का ध्येय पूर्ण कर दिव्य-शक्ति बन छा जायें,
धन्य ध्येयवादी जीवन वे केशव-व्रत जो लिये चलें, जीवन दीप जले !... ॥ ४ ॥

१०३) तपकर नंदन करें धरा को

तपकर नंदन करें धरा को, गलें मेघ से, गलें मेघ से ॥
अम्बर की जगमग फुलवारी, कितनी मनहर कितनी प्यारी,
उजड गई तब हुआ सवेरा, जग अनवरत ज्योति न हारी,
तन का दीप स्नेह की बाती, हृदय स्नेह का सहज स्त्रोत है,
अन्तिम किरण विश्व को देकर, चलें सूर्य से, चलें सूर्य से.... ॥ १ ॥
हरा-भरा धरती का आँचल, जले न चाहे हम जल जाय,
सर्जन की श्रृंखला न टूटे, चाहे हम तिल-तिल गल जायें,
किसी बीज के नव अंकुर बन, धरती में हम जडें जमा ले,
झेलें जो भी संकट आयें, फलें वृक्ष से, फले वृक्ष से.. ॥ २ ॥
न्योछावर सर्वस्व करें हम, उस पर जो गतिमय सप्तथ पर,
हँस-हँस स्वार्थ-समर हम हारें, हार न जायें जीवन-संगर,
आत्मज्ञान के स्त्रोत बहाकर, भ्रांत पथिक को नये नेत्र दें,

नयी–नयी राहें हम खोजें, जलें दीप से, जले दीप से... ॥ ३ ॥
स्वर में संजीवनी हमारे, जब तक रहे गीत हम गायें,
मुक्ति–दूत अपनी श्वासों से, बंधन के भी पंख लगायें,
मुक्त–हस्त जीवन निधि बाँटे, कण–कण में चेतनता भर दें,
यथाशक्ति समता सरसायें, बहे पवन से, बहे पवन से.... ॥ ४ ॥
अन्त हमारा जो होना है, पर हम मुक्त नहीं होने के,
भावों के पक्षी युग–युग तक, सुख की नींद नहीं सोने के,
जो जिसका है उसको देकर, ज्योति सौंपकर ज्योति पुरूष को,
नयी शक्ति की करें सर्जना, झरें सुमन से, झरें सुमन से... ॥ ५ ॥

१०४) दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी

दिव्य ध्येय की ओर तपस्वी, जीवन भर अविचल चलता है ॥
सज–धज कर आयें आकर्षण, पग–पग पर झूमते प्रलोभन,
होकर सबसे विमुख बटोही, पथ पर सँभल सँभल बढता है... ॥ १ ॥
अमर तत्व की अमिट साधना, प्राणों में उत्सर्ग कामना,
जीवन का शाश्वत व्रत लेकर, साधक हँस कण–कण गलता है... ॥ २ ॥
सफल विफल और आश निराशा, इसकी ओर कहाँ जिज्ञासा,
बीहडता में राह बनाता, राही मचल–मचल चलता है.... ॥ ३ ॥
पतझर के झंझावातों में, जग के घातों, प्रतिघातों में,
सुरभि लुटाता सुमन सिहरता, निर्जनता में भी खिलता है.... ॥ ४ ॥

१०५) देव ! यह आशीष शुभ दो

देव ! यह आशीष शुभ दो ॥
चल सके हम ध्येय पथ पर, सह सकें बाधा अनेकों ।
मातृ–पद में लीन तन–मन, भावना विकसित वरण दो, देव ! यह आशीष शुभ दो... ॥ १ ॥
क्षुद्र जग की वासनाएँ, स्वार्थ मूलक भावनाएँ,
दूर हों जीवन सफल हो, बस यही गति यही मति दो ॥ देव ! यह आशीष शुभ दो.. ॥ २ ॥
मातृ–सेवा के व्रती हम, निज बनें सबको बनायें,
देश का सौभाग्य जागे, सिध्द वह संजीवनी दो ॥ देव ! यह आशीष शुभ दो... ॥ ३ ॥

१०६) ध्येय साधना अमर रहे !

ध्येय साधना अमर रहे !
अखिल जगत को पावन करती, त्रस्त उरों में आशा भरती,
भारतीय सभ्यता सिखाती, गंगा की चिर धार बहे ! ध्येय साधना अमर रहे ! ॥ १ ॥
इससे प्रेरित होकर जन-जन, करें निछावर निज तन-मन-धन,
पालें देशभक्ति का प्रिय प्रण, अडिग लाख आघात सहे, ध्येय साधना अमर रहे ! ॥ २ ॥
भीति न हमको छूने पाये, स्वार्थ लालसा नहीं सताये,
शुध्द हृदय ले बढते जायें, धन्य-धन्य जग आप कहें, ध्येय साधना अमर रहे ! ॥ ३ ॥
जीवन-पुष्प चढा चरणों पर, माँगे मातृभूमि से यह वर,
तेरा वैभव अमर रहे माँ ! हम दिन चार रहे न रहें । ध्येय साधना अमर रहे ! ॥ ४ ॥

१०७) ध्येय-पथ पर बढ रहे हैं

ध्येय-पथ पर बढ रहे हैं, एक ही विश्वास लेकर । एक ही आधार लेकर ॥
शैल से जो सिन्धु तक है, पुण्य-भू है, मातृ-भू है,
श्रेष्ठ जग से यह हमारी, धर्म-भू है, कर्म भू है,
पूज्य इसको ही समझ कर, वन्दना हम कर रहे हैं, एक स्वर से गीत गाकर ।
एक ही आधार लेकर... ॥ १ ॥
बाल रवि सा भाव लेकर जो फहरता है गगन में,
त्याग का सन्देश देता जो लहरता कोटि उर में,
स्वर्ण-गैरिक उसी ध्वज की अर्चना हम कर रहे हैं ।
राष्ट्र-गुरू का मान देकर । एक ही आधार लेकर... ॥ २ ॥
एक नेता, एक ही पथ बस यही है मार्ग अपना,
देश है यह हिन्दुओं का, बस यही सत्य अपना,
सत्य को साकार करने साधना हम कर रहे हैं,
संगठन का मंत्र लेकर, एक ही आधार लेकर... ॥ ३ ॥

१०८) निज हृदय का स्नेह कण-कण

निज हृदय का स्नेह कण-कण, देवप्रतिमा पर चढा कर ।
राष्ट्र-मंदिर का पुनर्निमाण करना है हमें तो ॥
काट कण-कण देह जिसकी, दुर्ग का निर्माण होता,
एक तिल हटने न पाता, भूमि में ही प्राण खोता,
जय-पराजय कीर्ति यश की छोड करके कामनाएँ,
रात दिन, निश्चय-अटल चुपचाप गढ का भार ढोता,
शोक में रोता नहीं और हर्ष में हँसता नही जो,
राष्ट्र की दृढ नींव का पाषाण बनना है हमें तो ।
राष्ट्र-मंदिर का पुनर्निमाण करना है हमें तो... ॥ १ ॥

सह उपेक्षा शून्य पथ पर ज्योती का आभास लेकर,
फूँक तिल-तिल देह युग-युग का अमर इतिहास लेकर,
कर रहा है निर्देश पंथी दूर मंजिल है अभी भी,
फिर पथिक बढता अमित बल और दृढ विश्वास लेकर,
उस विरागी दीप का वैराग्य रग-रग में रमा कर,
शून्य निर्जन ध्येय-पथ द्युतिमान करना है हमें तो ।
राष्ट्र-मंदिर का पुनर्निमाण करना है हमें तो... ॥ २॥
मिट गयी जो किन्तु क्षण विश्राम भी लेने न पाई,
जो प्रलय के रोष को भी पार करके मुस्कराई,
चीरती ही जो रही अविराम बाधा-उदधि-उर की,
नाव को तिल-तिल प्रगति दे अन्त में चिर मुक्ति पाई,
किन्तु अपनी देह को भी कह न पाई देह अपनी,
राष्ट्र नौका की वही पतवार बनना है हमें तो ।
राष्ट्र-मंदिर का पुनर्निमाण करना है हमें तो... ॥ ३ ॥

१०९) पूत ध्येय का दीप प्रलय की

पूत ध्येय का दीप प्रलय की झंझा में निर्भय जलता है ॥
अन्तर में विश्वास, चरण में तूफानों की गति ले पथ पर,
प्रलय-पवन हा अविरल निर्भय, अपनी जय के गान अमर कर,
अपने अटपट पथ पर पग-पग, पंथी अविचल ही बढता है... ॥ १ ॥
तम की छाती चीर बिखर, पडती नभ में दिनकर की आभा,
शैल-शिखर पर चढता, बढता, नष्ट-भ्रष्ट कर पथ की बाधा,
अपने पथ को आप बनाता, युग-युग से निर्भर बहता है... ॥ २ ॥
राष्ट्र-धर्म की ज्वाला में तिल-तिल जलने की अमर चाह ले,
विमल साधना में रत साधक, डिगा सकेगा कौन राह से,
नगपति गा वह अटल तपस्वी, सुख-दुःख में अविचल रहता है... ॥ ३ ॥

११०) प्रबल झंजावात में तू

प्रबल झंजावात में तू, बन अचल हिमवान रे मन ॥
हो वनी गंभीर रजनी, सूझती हो नही अवनी ।
ढल न अस्ताचल, अतल में, बन सुवर्ण विहान रे मन ॥ प्रबल झंजावात में तू... ॥ १ ॥
उठ रही हो सिन्धु लहरी, हो न मिलती थाह गहरी,
नील-नीरधि का अकेला, जन सुभग जलयान रे मन ॥ प्रबल झंजावात में तू.. ॥ २ ॥
कमल कलियाँ सकुचती हो, रश्मियाँ भी मचलती हो ।
तू तुषार कुहा गहन में, बन मधुप की तान रे मन ॥ प्रबल झंजावात में तू.. ॥ ३ ॥

१११) भारत राष्ट्र महान्

भारत राष्ट्र महान् ! महा मोह को त्याग जगे चिर-सुप्त भरत-संतान !
सिध्द जयस्वी सत्य सनातन-भर दे कण-कण में नव-जीवन ।
जन-जन में नव स्फूर्ति जगा दे- पुण्य पुरातन गान !
भ्रान्ती-ग्रस्त मानवता जागे, अन्तर की शठ पशुता भागे,
दानव-सत्ता नष्ट कर जगे-दैवी शक्ति महान !
भेद तमिस्त्रा भौतिकता की-जगे ज्योति अध्यात्मिकता की,
अणु-अणु ज्योतिर्मय कर जागे ! संस्कृति का सुविहान ।
शोषण, उत्पीडन, निर्वासन, भयातंक, विद्वेष प्रतारण,
अन्त पूर्णतः ही कर छोडे-यह प्रण में हम ठान !
अति विराट्, अति दिव्य, अखण्डित,
'सत्यं-शिवं-सुन्दरं-मण्डित, जागे निर्भय राष्ट्र -पुरूष-
हो सर्व-लोक-कल्याण ! भारत राष्ट्र महान् !

११२) मंगल दीप न बुझने पाए

मंगल दीप न बुझने पाए । प्रबल थपेडे खाकर उर की, लौ न तनिक डिग जाए
पथ से पग न कहीं हट जाए ॥
अटटहास कर उठे प्रभञ्जन; चिरे प्रलय का घेरा,
बन दावानल, घर में छाया हो घनघोर अंधेरा,
पथ प्रशस्त करने तब नभ में विद्युच्छबि लहराए, अमृत-ज्योति न घटने पाये... ॥ १ ॥
गिरे गाज या मग में पडते हो जलते अंगारे, दमन-चक्र का प्रण ले धायें सूरज, चाँद, सितारे,
पर सत्य का पथिक अकम्पित विजय गान ही गाये, तन का ओज न मिटने पाए... ॥ २ ॥
अपनी दीन दशा पर रोती तडपा करें दुराशा, सत्य-धर्म की अमिट प्रभा में जागे नूतन आशा,
मर कर जीवन रहे, न जीवित मृतक की कहलाए, मन की आन न झुकने पायें... ॥ ३ ॥
शूरों का तो खेल हुआ करता है मरना-जीना, जगती के मस्तक पर चमकें बन अनमोल नगीना,
प्रिय स्वदेश, पावन स्वधर्म-हित, हम सर्वस्व लुटाएं, मंगल दीप न बुझने पाये.... ॥ ४ ॥

११३) मन समर्पित तन समर्पित

मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित,
चाहता है मातृ-भू तुझको अभी कुछ और भी दूँ ॥
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन, किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब, स्वीकार कर लेना दयाकर यह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित, रक्त का कण-कण समर्पित... ॥ १ ॥

माँज दो तलवार को लाओ न देरी, बाँध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोडी, शीश पर अशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित, आयु का क्षण-क्षण समर्पित... ॥ २ ॥
तोडता हूँ मोह का बंधन क्षमा दो, गाँव मेरा द्वार घर आँगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो, और बाएँ में ध्वज को थमा दो,
ये सुमन लो, ये चमन लो, नीड का तृण-तृण समर्पित... ॥ ३ ॥

११४) माँ बस यह वरदान चाहिए

माँ बस यह वरदान चाहिए !
जीवन पथ जो कंटकमय हो, विपदाओं का घोर वलय हो,
किन्तु कामना एक यही बस, प्रतिपल पग गतिमान चाहिए... ॥ १ ॥
हास मिले या त्रास मिले, विश्वास मिले या फाँस मिले,
गरजें क्यों न काल ही सम्मुख, जीवन का अभिमान चाहिए... ॥ २ ॥
जीवन के इस संघर्षों में, दुःख-कष्ट के दावानल में,
तिल-तिल कर तन जले न क्यों पर, होंटों पर मुस्कान चाहिए... ॥ ३ ॥
कंटक पथ पर गिरना, चढना, स्वाभाविक है हार जीतना,
उठ-उठ कर हम गिरें, उठे फिर, पर गुरूता का ज्ञान चाहिए... ॥ ४ ॥
मेरी हार देश की जय हो, स्वार्थ-भाव का क्षण-क्षण क्षय हो,
जल-जल कर जीवन दूँ जग को, बस इतना सम्मान चाहिए... ॥ ५ ॥

११५) मुक्त प्राणों में हमारे

मुक्त प्राणों में हमारे, देश का अभिमान जागे ॥
हो गये साकार सपने, स्कंध पर अब भार अपने,
पापिनी तंद्रा उदासी, कर्म का अवसान भागे..... ॥ १ ॥
स्वार्थ परता से विलग हो, त्याग सिञ्चित ध्येय-मग हो,
देश पर ही शुभ मरण की, प्राण ये पहचान माँगे.... ॥ २ ॥
छोड मन की संकुचितता, भर हृदय में स्नेह ममता,
जन-जनार्दन का मधुरतम, एक नव-सम्मान जागे..... ॥ ३ ॥
बाँध कटि हो अब खडे हम, शक्ति-संग्रह कर बढे हम,
चल रहे बाधा हटाते--भक्त के भगवान आगे..... ॥ ४ ॥

११६) मैं मधु से अनभिज्ञ आज भी

मैं मधु से अनभिज्ञ आज भी, जीवनभर विषपान किया है ।
किया नहीं विध्वंस विश्व का, जीवन भर निर्माण किया है ॥
मैं वनवासी पर मानव के, हृदयों पर शासन करता हूँ;
हूँ सन्यासी पर वैभव से, दुनिया की झोली भरता हूँ,
शुभ भरे कंटक-पथ पर, आजीवन अभियान किया है... ॥ १ ॥
धू-धू धधक-धधक कर धधकी, क्रुध्द चितायें बल खाती थीं,
धधक रहा था खिलता यौवन, धधक रही मेरी छाती थी,
मुठ्ठी भर अवशिष्ट भस्म पर, आजीवन अभियान किया है... ॥ २ ॥
घोर प्रलय ने भूकंपों से , नष्ट-भ्रष्ट था जग का जीवन,
पर मैं चीर उदधी की छाती, लखता था भीषण यम-नर्तन,
मैंने जन्म दिया मानव को, आजीवन निर्माण किया है... ॥ ३ ॥
पिला-पिला कर रक्त हृदय का, पीडित मानवता को पाला,
किन्तु उसी मानव ने, दानव, बनकर, मुझको ही ग्रस डाला,
फिर भी मानव हूँ मानव का, आजीवन कल्याण किया है... ॥ ४ ॥
आज क्रूरता अनाचार लख, डमरू से गुंजार उठी है,
तडप उठा है शूल गगन में, शंकर की हुँकार उठी है,
प्रलयंकर हूँ महाकाल बन, पापों का अवसान किया है... ॥ ५ ॥

११७) साधना का एक क्षण हूँ

साधना का एक क्षण हूँ !
ज्योति जीवन की जलायें, भव्य स्वप्नों को सजाये;
बढ रहा संघर्ष-पथ पर, दुःख को भी सुख समझ,
मैं ज्वलित अन्तःकरण हूँ ! साधना का एक क्षण हूँ... ॥ १ ॥
कर रहा निर्माण-चिन्तन, आज अन्तर में चिरंतन;
विश्व में मैं प्राण भरता; ज्योति जीवन की वितरता;
क्रांति का अढता चरण हूँ ! साधना का एक क्षण हूँ... ॥ २ ॥
पथ बना कंटक-बिछौना, मृत्यू है मेरा खिलौना;
होम कर सर्वस्व अपना; देखता हूँ मुक्ति सपना,
चेतनामय जागरण हूँ ! साधना का एक क्षण हूँ... ॥ ३ ॥

११८) हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही

हिन्दु-राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही । आर्य-देश की स्वदेश-भक्ति जग रही ॥
ज्योतिर्मय उषा-काल आ रहा, मोहयुक्त तिमिर जाल जल रहा,
वह परानुकरण की मोह-रात्री ढल रही ॥ हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही... ॥ १ ॥
प्रलयंकर यज्ञ जो चल रहा, जन-उर का पाप-कलुष जल रहा,
भेद भाव की महान भित्ती गिर रही ॥ हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही... ॥ २ ॥
आत्मज्ञानमय प्रकाश छा रहा, सुप्त सत्व-बल शनैः आ रहा,
घोर मनोदास्य से विमुक्ति मिल गई ॥ हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही... ॥ ३ ॥
सावधान पाञ्चजन्य बज रहा, सावधान गाण्डीव तन रहा,
मदन-दहन की तृतीय दृष्ठी तन गई, हिन्दु राष्ट्र की अनंत शक्ति जग रही... ॥ ४ ॥

११९) है अमित सामर्थ्य मुझमें

है अमित सामर्थ्य मुझमें, याचना मैं क्यों करूंगा ?
रूद्र हूँ विष छोड मधु की कामना मैं क्यों करूंगा ?
इन्द्र को निज अस्थिपंजर जब की मैंने दे दिया था,
घोर विष का पात्र उस दिन एक क्षण में ले लिया था,
दे चुका जब प्राण कितनी बार जग का त्राण करने,
फिर भला विध्वंस की कट कल्पना मैं क्यों करूंगा ? ॥ १ ॥
फूँक दी देह भी जब विश्व का कल्याण करने,
झोंक डाला आज भी सर्वस्व युग निर्माण करने,
जगमगा दी झोपडी के दीप से अटटालिकायें,
फिर वही दीपक, तिमिर की साधना मैं क्यों करूंगा ? ॥ २ ॥
विश्व के पीडित मनुज को जब खुला है द्वार मेरा,
दूध सापों को पिलाता स्नेहमय आगार मेरा,
जीत कर भी शत्रू को जब मै दया का दान देता,
देश में ही द्वेष की फिर भावना मैं क्यों भरूंगा ? ॥ ३ ॥
मार दी ठोकर विभव को बन गया क्षण में भिखारी,
किन्तु फिर भी जल रहीं क्यों द्वेष से आँखे तुम्हारी,
आज मानव के हृदय पर, राज्य जब मैं कर रहा हूँ,
फिर क्षणिक साम्राज्य की भी कामना मैं क्यों करूंगा ? ॥ ४ ॥

१२०) है देह विश्व, आत्मा है भारत-माता

है देह विश्व, आत्मा है भारत-माता ।
सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥
यह सत्य धर्म धारिणी धरा अति पावन,
सब जग को लगती मनोहरा मन-भावन,
विधि नदियों की मुक्तमाला पहनाता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ १ ॥
कटि में करधनी सुशोभित है विन्ध्याचल,
सह्याद्री-माल का राजदण्ड है कर-तल,
श्री चरण चूमता, विनत सिन्धु लहराता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ २ ॥
थी वह अनादि-सी आदि भाव की उषा,
भव को न मिली थी जब संस्कृति की भूषा,
तव उदित हुआ रवि यहाँ स्वर्ण बिखराता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ ३ ॥
वन, ग्राम, नगर में गूँजी वेद ऋचायें,
हर घर में दमकी श्री की दीपशिखायें,
धृति नारि, धर्म से था पुरूषों का नाता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ ४ ॥
हम भ्रमित हुए अस्ताचल वाले देशों को जब देखा,
अरूणाचल की छवी बनी नयन में धुंधली कंचन रेखा,
तब आया ज्योति-पुरूष केशव, चेतन का सूर्य उगाता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ ५ ॥
त्याग-प्रेम का संबल, शक्ति हमारी,
अपने भविष्य में अविचल भक्ति हमारी,
जा ! बिदा दैन्य ! मैं गीत विजय का गाता, सृष्टी-प्रलय-पर्यन्त अमर यह नाता ॥... ॥ ६ ॥

१२१) जहाँ दिव्यता ही जीवन है

जहाँ दिव्यता ही जीवन है, सागर का गांभीर्य जहाँ,
जो कष्ट की फुलवारी है, नत-मस्तक है विश्व वहाँ.. ॥ १ ॥
विपदायें कितनी आयी हैं, कितने ही आघात सहे,
किन्तु अचल जो खडा हुआ है, वंदन शत-शत नरवर है ॥ २ ॥
जिसके मन में ध्येय देव का, निशिदिन चिंतन वंदन है,
देशभक्ति का प्रकाश हँसता, जग को पंथ दिखाता है ॥ ३ ॥
जिसका स्मित चैतन्य पुष्प है, शब्द-शब्द नवदीप प्रखर,
जिसकी कृति से भविष्य उज्ज्वल, उसको जग का वंदन है.. ॥ ४ ॥

१२२) ध्येय ने बलिदान के पथ

ध्येय ने बलिदान के पथ पर पुकारा । तोडनी है हमें अंतिम मोह कारा ॥
सूर्य संस्कृति का गहन तम में ढका है, स्त्रोत जीवन का थका उलझा रूका है,
अभी माँ के केश रूखे अधर सूखे, दृग सजल है कोटि उसके पुत्र भूखे,
इस गहनतम में बने हम ही सहारा.... ॥ १ ॥
हुआ लांछित पुनः आज स्वदेश अपना, विगत सीमा प्रांत पौरूष तेज अपना,
लाज से हिमगिरी न अब निहा सिर उठाता, उदधि भी उठ-उठ न अब जयगान गाता,
हे बहानी आज रिपु को रक्त धारा.... ॥ २ ॥
राम का हम आज धर्म महान भूले, कृष्ण का भी हाय ! गीता ज्ञान भूले,
विस्मृता चाणक्य की जय की कथा है, क्यों न उर में जागती फिर भी व्यथा है,
गर्जना से आज हिलता गगन सारा.... ॥ ३ ॥
है कहाँ अब चन्द्रगुप्त महान विक्रम, भर रहा है सब ओर अति अबसाद विभ्रम,
उठो हे ! चितौड पण्य प्रताप जागो, हे शिवा हे केसरी आलस्य त्यागी,
आज पुनः समर्थ ने हमको पुकारा... ॥ ४ ॥

१२३) प्रश्न बहुत से उत्तर एक

प्रश्न बहुत से उत्तर एक, कदम मिलाकर बढे अनेक,
वैभव के उत्तुंग शिखर पर, सभी दिशा से चढे अनेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक... ॥ १ ॥
दिव्य गुणों का आरक्षण, दुष्ट दलों का दर्प दलन,
मानवता का पथ दर्शन, यही हमारी शाश्वत टेक....प्रश्न बहुत से उत्तर एक ॥ २ ॥
डरा न पाये अत्याचार, लुभा न पायें क्षुद्र विकार,
पौरूष अपना अपरंपार, गंगा का पावन उद्रेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक.. ॥ ३ ॥
संघकार्य है यज्ञ महा, तन-मन-धन की समिध जहाँ,
स्वयं-प्रेरणा भाव भरें, अनुशासन है भक्ति विवेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक... ॥ ४ ॥
ध्येय अटल ध्रुव तारे-सा, पथ दुर्गम दो धारे-सा,
दीप जला अंगारे-सा, करना है तम का व्यतिरेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक... ॥ ५ ॥
चक्रवर्तियों की संतान, लेकर जगद्गुरू का ज्ञान,
बढे चले तो अरूण विहान, करने को आये अभिषेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक.... ॥ ६ ॥
प्रश्न बहुत से उत्तर--एक, कदम मिलाकर बढें अनेक,
गौरव के उत्तुंग शिखर पर, सभी दिशा से चढे अनेक, प्रश्न बहुत से उत्तर एक.. ॥ ७ ॥

१२४) भावी युग के निर्माता

भावी युग के निर्माता, मानवता के हम त्राता ।
जिसके हैं हम सुत प्यारे, जय भारत जननी ॥
हम मस्ती में मतवाले, दनुज दमन के परकाले,
हम शक्ति अपरिमित संग लिए है, हम अभयाश्वासन दाता, हम अभयाश्वासन दाता... ॥ १ ॥
स्वार्थ-कपट से विश्व भरा, सबल भारत वसुन्धरा,
सत्य चिरंतन भर्म यही है, वीरव्रती हम उद्‌गाता, वीरव्रती हम उद्‌गाता... ॥ २ ॥
भूखे नंगे रोगन भरे, दलित जनों की पीर हरे,
संवेदनक्षम हृदय लिए हम, मुक्ति साध के विज्ञाता, मुक्ति साध के विज्ञाता... ॥ ३ ॥
आओ मिलजुल यज्ञ करें, हिन्दु-राष्ट्र में शक्ति भरें ।
इन नयनों से ही देखें हम, भगवा जग में लहराता, भगवा जग में लहराता.... ॥ ४ ॥

१२५) राष्ट्रभक्ति के जीवन रस से

राष्ट्रभक्ति के जीवन रस से, हर जीवन का घट हम भर दें,
वैभवशाली उस अतीत को, वर्तमान में आज बदल दें ॥
पावन भूमि देव जननी यह हिन्दुकुश से महोदधि तक,
पग-पग पर था वैभव बिखरा सुगन्ध जिसकी नील क्षितिज तक,
आज किन्तु वह स्वप्न रह गया जिसको हम फिर सजीव कर दें ।
असुर वृत्ती का विनाश करने कई हुए थे महावीर वर,
आज किन्तु यह खण्डित भारत इसे अखण्डित आज बना दें ॥
राम-कृष्ण की इस भूमि में धर्म बडा ही सम्मानित था,
तभी जगत का चप्पा-चप्पा भारत को ही गुरू कहता था,
विस्मृति में वह डूब गया है आज पुनः हम उसे जगा दें ॥
मातृ भूमि को हमें जगत में पुनश्च सम्मानित करना है,
यही प्रेरणा जागे मन में जीवन को ही हम सफल बना दें ॥

१२६) राष्ट्र में नव-तेज जागा

राष्ट्र में नव-तेज जागा, शिशिर बीता परकीयता का, राष्ट्र में नव-तेज जागा...
संघ रवि चमका प्रखरतम, घन दूर भागा, राष्ट्र में नव-तेज जागा ॥
आज की हिन्दुत्व की ले भावनाएँ है अनुप्राणित शिरायें,
मानसर नेपाल से सागर शिलायें,
मुक्तकों की मालिका में है पिरीता, संगठन का प्रेम धागा, राष्ट्र में नव-तेज जागा... ॥ १ ॥
भेद करके गहन परदा, भेद कर भ्रम की तमिस्त्रा,
फूट निकली रश्मि माला, पूज्य केशव की तपस्या,
है जगाती आ रही है, देश भर में सुमन शाखा, राष्ट्र में नव-तेज जागा... ॥ २ ॥

हो विकास संपूर्ण कलियाँ, हो सुगन्धित गलियाँ,
क्यारियाँ फिर स्वर्ण उगलें, स्वर्ण उगलें क्यारियाँ,
मलय माधव के करों से, उमडती श्रम शक्ति गंगा, राष्ट्र में नव–तेज जागा... ॥ ३ ॥

१२७) आज प्राण के दीप जलेंगे

आज प्राण के दीप जलेंगे । अनुशासन का स्नेह, देह की, होगी अचल अकम्पित बाती,
अर्पण कर देंगे स्वदेश को, हम अपने जीवन की थाती,
बलिदानों के इस प्रकाश में फिर स्वदेश के भाग्य जगेंगे... ॥ १ ॥
अमा निशा का तिमिर चीर कर, उतर रहा है किरण धरा पर,
वह अपने अतीत–वैभव की, अमर–कीर्ति दूतिका मनोहर,
जन–जन के मानस में उसके पंकज चरण प्रकाश खिलेंगे.. ॥ २ ॥
संघर्षो के शिबिर पार कर, तैर रक्त के सिन्धु निरंतर;
महाकाल से भी लेंगे हम अपने सब अधिकार छीनकर,
राष्ट्र–धर्म की इस ध्रुव घृति में हमें ध्येय देवता मिलेंगे... ॥ ३ ॥
आबलाओं का रूदन श्रवण कर, टूक–टूक होती है छाती,
बधिर हो रहे कान देख यह, सहनशीलता है शरमाती,
अपने दुर्गद रण प्रयास से अब भूधर के हृदय हिलेंगे... ॥ ४ ॥

१२८) बाधाओं से भय न हमें

बाधाओं से भय न हमें, हम तूफानों में चलते है ॥
पथ चाहे घोर अंधेरा हो, दुःख द्वंद्वों ने जब घेरा हो,
हो महा वृष्टी भीषण गर्जन, करता हो महाकाल नर्तन,
पर कब किससे डरने वाले, हम संघर्षो में पलते हैं, हम तूफानों में चलते हैं.... ॥ १ ॥
अत्याचारों की आँधी भी, जिसको निःशेष न कर पायी,
जो सत्य चिरन्तन अक्षय है, हम उस संस्कृति के अनुयायी,
विपदाओं के कंटक बन में, हम अग्नि–शिखा बन चलते हैं, ॥ २ ॥

१२९) चल पडे पैर जिस ओर

चल पडे पैर जिस ओर पथिक, उससे फिर डरना कैसा ?
यह रूक–रूक कर बढना कैसा ?
हो कर चलने को उद्यत तुम ना तोड सके अपने बन्धन घर के ।
सपने सुख वैभव के राही ना छोड सके अपने उर के ।
जब शोलों पर ही चलना है पग फूँक–फूँक रखना कैसा... ॥ १ ॥
पहले ही तुम पहचान चुके यह पथ तो काँटो वाला है ।
पग–पग पर पडी शिलायें. है कंकड मय काँटो वाला है ।
दुर्गम पथ अंधियारा छाया फिर मखमल का सपना कैसा.... ॥ २ ॥

होता है प्रेम फकिरी से इस पथ पर चलने वालों को,
पथ पर बिछ जाना पडता है इस पथ पर चढने वालों को,
अपने सुख को खोने आकर यह सुख-दुःख का रोना कैसा... ॥ ३ ॥
वह माल मलिदे दूर रहे रोटा के भी पडते लाले,
मखमल रेशम के बदले में चिथडों से है पडते पाले,
वह राह भिखारी बनने की सुख वैभव का सपना कैंसा.... ॥ ४ ॥
इस पथ पर बढने वाले को बढना ही है केवल आता ।
आती जो मार्ग में बाधायें उनसे बस लडना ही आता ।
तुम भी जब चलते उस पथ पर फिर रूकना औ झुकना कैसा... ॥ ५ ॥

१३०) लक्ष्य तक पहुँचे बिना

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा ।
लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते है,
किन्तु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते है ।
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा ? लक्ष्य तक पहुँचे बिना... ॥ १ ॥
धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता,
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही वेध करता,
लक्ष्य प्रेरित बाण है हम, ठहरने का काम कैसा... ॥ २ ॥
बस वही पथिक जो पथ पर निरन्तर अग्रसर हो,
हो सदा गति शील जिसका लक्ष्य त्रतिक्षण निकटतर हो,
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा,,,, लक्ष्य तक पहुँचे बिना ॥ ३ ॥
बाल रवि की स्वर्ण किरणें गिमिष में भू पर पहुँचती,
कालिमा का नाश करती, ज्योति जगमग जगत धरती ।
ज्योति के हम पुंज फिर हमको अमा से कैसा, लक्ष्य तक पहुँचे बिना... ॥ ४ ॥
आज तो अति निकट है देख लो वह लक्ष्य अपना,
पग बढाते ही चलो बस शीघ्र होगा सत्य सपना ।
धर्म पथ के पथिक को फिर देव दक्षिण वाम कैसा, लक्ष्य तक पहुँचे बिना... ॥ ५ ॥

आकांक्षा

१३१) मातृ मन्दिर का समर्पित दीप मैं

मातृ, मन्दिर का समर्पित दीप मैं, चाह मेरी यह की मैं जलता रहूँ ,
कर्मपथ पर मुस्कुराऊँ सर्वदा, आपदाओं को समझ वरदान मैं,
जग सुने, झुमें अनुराग मय, उल्लसित हो नित्य गाऊँ गान मैं,
चीर तम-दल-अज्ञता निज तेज से । बन अजय निश्शंक मैं चलता रहूँ ॥

सुमन बनकर सज उठे जयभाल में, राह में जितने मिलें वे शूल भी,
धन्य मैं यदि जिन्दगी की राह में, कर सके अभिषेक मेरा, धूल भी ।
क्योंकी मेरी देह मिटटी से बनी है । क्यों न उसके प्रेम में पलता रहूँ ॥
मैं जलूँ इतना की सारे विश्व में, प्रैम का पावन अमर प्रकाश हो,
मेदिनी यह मोद से विहँसे मधुर, गर्व से उत्फुल्ल वह आकाश हो ।
प्यार का सन्देश दे अन्तिम किरण । मैं भले अपनत्व को छलता रहूँ ॥
मातृ-मन्दिर का अकिंचन दीप मैं । चाह मेरी यह की मैं जलता रहूँ ॥
----नारायण लाल परमार

१३२) यातनाओं से किसी की भावनाएँ कब मिटी हैं

यातनाओं से किसी की भावनाएँ कब मिटी हैं ।
कठिन दुर्गम श्रृंग से क्या प्रबल सरिताएँ रूकी है ॥
क्या सका है रोक कोई शलभ को लो में जलन से ?
च्युत किया क्या यातना ने वीर को कर्तव्य पथ से ?
लोह दुर्बल द्वार से क्या शक्तियाँ भी रूक सकी हैं ॥ १ ॥
यातन प्रल्हाद ने भी थी सही निज ध्येय पथ पर,
दृढ रहा था वीर राणा, ध्येय पथ पर कटिबध्द होकर,
यातना से भावना तो स्वर्ण-सम उज्ज्वल हुई है... ॥ २ ॥
यातना उस वीर बंदा ने सही हँसते वदन से,
सुत-कलेवर भी खिलाया, ना हटा पर वीर प्रण से,
यातना से यातनाएँ वीर का कुच्छ कर सकी है... ॥ ३ ॥
गुरू-सुतों का क्या किया था याद है वे यातनाएँ ?
क्या हकिकत का किया था याद में जलती व्यथाएँ,
दृढ हृदय के सामने तो यातनाएँ ही थकी है.... ॥ ४ ॥
यातनाएँ वन्ही सम है, भावनाएँ स्वर्ण सम है,
यातना यदि शस्त्र है तो भावना भी आत्मसम है,
यातनाओं से सदा ये भावनाएँ दृढ हुई है... ॥ ५ ॥
यातनाएँ ही मिली थी कंस से उस देवकी को,
भावनाओं ने दिया था जन्म उन श्रीकृष्ण जी को,
यातना से भावना में शक्तियाँ प्रकटित हुई है... ॥ ६ ॥

१३३) किस रज से बनते कर्मवीर

किस रज से बनते कर्मवीर,
होते ही क्या रक्तरंजित या वज्रपूर्ण उनके शरीर ॥
नभ में घन गरजे घहर-घहर, दामिनी बन दमके कहर-कहर,
कर्तव्य मार्ग से पर विचलित, होते न कभी वे धीर धीर... ॥ १ ॥
दीनों से उनको द्रोह नही, धनवानों से कुच्छा मोह नही ।
जैसे उनको प्रिय राजमहल, वैसे ही है तृण के कुटीर... ॥ २ ॥
माता घर में बिमार पडी, पत्नी अंतीम गिन रही घडी,
वे वीर राष्ट्र की वेदी पर, उत्सर्ग कर रहे प्राणनीर.. ॥ ३ ॥
हम उनको मारे कठिन शूल, वे समझे उनको मृदुल फूल,
हम उनको विषधर बन काटें, वे हमे पिलायें सदा क्षीर... ॥ ४ ॥
क्या उनका भी मिटटी का तन, हम-तुम जैसा रज का ही कण,
फिर क्यों हम इतने अकर्मण्य, और वे क्यों इतने कर्मवीर... ॥ ५ ॥

१३४) चरण कमल पर माता तेरे

चरण कमल पर माता तेरे, प्राणों का संगी तनिच्छावर,
अनगिन गुण-सम्पन्न सुतों की, जनम-जनम की प्रीत निच्छावर,
बलिहारी माँ पंचतत्व की, देह तुम्ही से जो पायी है,
बलिहारी है हृदय-भावना, संस्कृति ने जो सरसाई है ।
सकल सुमित पावन श्रध्दा का, अमृत मय नवनीत निच्छावर ।
जनम-जनम की प्रीत निच्छावर.. ॥ १ ॥
चरण कमल पर माता तेरे....
वैभव गौरव और दिव्यता, देख तुम्हारा स्वर्ण अचंभित ।
वसुन्धरा की सुरभी वाटिका, तेरे कारण बनी सुगन्धित ।
शक्ति बुध्दी क्षमता से झंकृत, जीवन के सब गीत निच्छावर ।
जनम-जनम की प्रीत निच्छावर, चरण कमल पर माता तेरे.... ॥ २ ॥
न्यौच्छावर है सभी कामना, न्यौच्छावर सब कर्म साधना ।
श्रम-सीकर-कण हार अर्चना, तन, मन,धन संस्कार भावना ।
आत्म प्रसूत सरस अर्थों में, शब्दों की गुण रीत निच्छावर ।
जनम-जनम की प्रीत निच्छावर, चरण कमल पर माता तेरे... ॥ ३ ॥

१३५) यह कंकड–पत्थर–रेत नही !

यह कंकड–पत्थर–रेत नही, यह तो माता है ! माता है ! !
युग–युग से रक्त लिये आता यह देश–धरम का नाता है
यह तो माता है ! माता है ! यह कंकड–पत्थर–रेत नही
पुत्रों की बाहों का बल ही है मापदण्ड अधिकारों का,
जिसके चरणों में साहस है, वह बनता स्वामी तारों का
पर जिसकी होती परंपरा–घर उसका ही कहलाता है ! यह देश–धरम का नाता है...
समझोतों सौदेबाजी से, माता का न्याय नही होता,
जिसमें मृग–नायक भाव भरा, वह सिंह–सुवन जगता–सोता,
पौरूष का प्रखर प्रभाव लिये, माता का नाम बढाता है ! यह देश–धरम का नाता है...
माता के प्रश्न न हाल होते, कायर जन के संख्या बल से,
इकला दिनकर तम को हरता, लाखों जुगनू से बढकर के,
जिसमें है सर्वदमन का बल, वह भारत भाग्य विधाता है, यह देश–धरम का नाता है...
यह कंकड–पत्थर–रेत नही, यह तो माता है ! माता है ! !
युग–युग से रक्त लिये आता यह देश–धरम का नाता है...

१३६) स्वेद, शोणित और आँसू

स्वेद, शोणित और आँसू––हैं समर्पण माँ चरण पर ?
रत्नगर्भे ! स्वर्ण–आभे ! क्षीर सागर पर विराजे––
जल छिडक दो स्नेह का माँ, तुच्छ पूजा उपकरण पर ! ! स्वेद, शोणित और आँसू.....
नित्य सेवा–मग्न जीवन, रूप का दिन रात चिंतन,
ज्योति का दीपक जला दो, भक्तजन–जीवन मरण पर, स्वेद, शोणित और आँसू....
छिन्न हो जग का अंधेरा, हो उदय मधुरिम सवेरा,
जग चहकता नाचता हो, आर्य–भू के जागरण पर !
स्वेद, शोणित और आँसू, आग जलती शान्त हो फिर,
भस्म जाये तीर्थ में तिर, हो प्रफुल्लित मनुज किन्नर,
संगठन के अवतरण पर ! ! स्वेद, शोणित और आँसू, है समर्पण माँ चरण पर ! !

१३७) तंत्र है नूतन भले ही

तंत्र है नूतन भले ही, चिर पुरातन साधना ।
संघ में साकार अनगिन, है युगों की कल्पना ॥
विश्व गुरू यह राष्ट्र शाश्वत, सूत्र में आश्वस्त हो ।
सभ्यता का हो निकेतन, यह सुमंगल भावना.... ॥ १ ॥
ज्ञान श्रध्दा कर्म तीनों, मिल समन्वित रूप हो ।
वेद से आई अखण्डित, हिन्दु की ध्रुव धारणा... ॥ २ ॥

तीन गुण नव रस सुशोभित, सप्त रंगों का धनुष ।
एक्य अरू वैविध्य की है, नित्य नूतन सर्जना... ॥ ३ ॥
सूर्यवंशी चक्रवर्ती, अग्निमुख ऋषि त्याग धन ।
सच्चिदानन्द-रूपिणी है, हिन्दु की परियोजना... ॥ ४ ॥
विश्व व्यापी सभ्यता हो, सर्वहित का पात्र बन ।
पूर्ण वैभव लें सतत ही, मातृ पद युग वन्दना... ॥ ५ ॥

१३८) निर्माणों के पावन युग में

निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण न भूलें ।
स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें ॥
माना अगम अगाध सिंधु है, संघर्षों का पार नही है,
किन्तु डूबना मझधारों में, साहस को स्वीकार नही है,
जटिल समस्या सुलझाने को, नूतन अनुसंधान न भूलें... ॥ १ ॥
शील विनय आदर्श श्रेष्ठता, तार बिना झंकार नही है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी ? यदि नैतिक आधार नही है,
कीर्ति कौमदी की गरिमा में, संस्कृति का सम्मान न भूलें.... ॥ २ ॥
आविष्कारों की कृतियों में, यदि मानव का प्यार नही है,
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है, प्राणी का उपकार नही है,
भौतिकता के उत्थानों में, जीवन का उत्थान न भूले..... ॥ ३ ॥

१३९) हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक

हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक, एक यह वरदान दो ।
मातृ भू के हित अखण्डित, कर्म-निष्ठा ज्ञान दो ॥
देव-देवी सब समाये, पुण्य रज आराध्य है;
सिध्द, साधक, साधना है । जन्म-जन्मांतर निरंतर, भक्ति-अमृत-पान दो ॥
हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक..... ॥ १ ॥
मोक्ष की इच्छा नही है, स्वर्ग केवल धूल है,
छोडकर अंचल जननि का, छानना जग भूल है ।
नित्य शक्ति-रूपिणी माँ, प्राण में संधान दो ॥
हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक.. ॥ २ ॥
व्यर्थ जग का राज्य, माँ की--छत्र छाया छोडकर;
तुच्छ धनपति का खजाना, देश से मुँह मोड कर ।
मृत्यु-जीवन में सदा, माँ, गोद में ही स्थान दो ॥
हे निखिल ब्रह्माण्ड नायक... ॥ ३ ॥

१४०) ज्यातिर्मय कर दो ।

ज्योतिर्मय कर दो !
जग का व्यापक अन्धकार हर--निज प्रकाश भर दो ! ज्योतिर्मय कर दो ! !
चाहे जितने शूल अडे हो, चाहे जितने फूल पडे हो,
केवल इस पग को बढने के--हित निर्भय कर दो ! ज्योतिर्मय कर दो !!
मोह नही है तारा गण से, या प्राणों के दीप सृजन से,
केवल कृपा किरण से सूना--अंतराल भर दो !
ज्योतिर्मय कर दो ! !
लक्ष्य न नयनों से ओझल हो, एक तुम्हारा ही सम्बल है,
आलोकित कर मानस, निज में--मुझको लय कर दो ! ज्योतिर्मय कर दो !!

१४१) युग युग से स्वप्न संजोये जो

युग-युग से स्वप्न संजोये जो, हमको पूरे कर दिखलाना ।
फिर रामराज्य है भारत के उजडे कानन में विकसाना ॥
इन स्वप्नों में ही कारा के कष्टों को हँस-हँस झेला है,
इन स्वप्नों के जयघोष लगा भय का आतंक ढकेला है ।
इस युग में यह संघर्ष हुआ दुर्लभ सौभाग्य हमारा है,
है धन्य हमारी शाखायें संस्कार समेत सँवारा है ।
संस्कारित जनता के द्वारा सत्ता पर अंकुश रखवाना.... ॥ १ ॥
जो सपना हमने देखा था, शैशव से भोले नयनों में,
स्वर्णिम इतिहास उमंग भरा चित्रित था मन में वचनों में ।
यह देश बनायेंगे ऐसा, आजादी जिसमें खिलती हो ।
चिर शान्ती सुमित उन्नती, सरिता पग-पग पर आकर मिलती हो ।
पग-पग पर पुनः प्रयाग बने, नन्दन कानन है सरसाना.... ॥ २ ॥
हम धूल लगाकर मस्तक पर, सौगंध देश की खाये है ।
सौगंध हमें जगदीश्वर की, इस धरती में जन्माये हैं ।
सौगंध हमें आजादी की जिसका बल प्राण समाये है ।
उनके अरमान अधूरों को, सच का बाना है पहनाना.... ॥ ३ ॥

१४२) गहन रात बीती मिटा घन अँधेरा

गहन रात बीती मिटा घन अँधेरा, नवल ज्योति फूटी सवेरा हुआ है,
उषा ने पहन है लिया ताज देखो, भिखारिन बनी यामिनी जा चुकी है ।
अलस चेतना के नयन खुल चुके है, प्रभा जागरण रागिणी गा चुकी है
जगी अस्मिता औ फली साधना है, जागा हे पौरूष सवेरा हुआ है.. ॥ १ ॥

हुई मुक्त धरती हुआ मुक्त जनमन, किरण के करों ने दिये खोल बन्धन ।
सजन हो बढे ध्येय के वे पुजारी, भरा हर हृदय में नया शक्ति स्पन्दन ।
सभी के मनों की व्यथा हर गई है, बढे देवता शत्रु हारा हुआ है... ॥ २ ॥
क्रिया माँगती है सबल हाथ हमसे, की निर्माण सहयोग श्रम माँगता है,
लगन माँगती है नयी योजनायें, गिरा देश उत्थान क्रम माँगता है,
की संकल्प है माँगता आज का दिन, न भूलो जो आदर्श धारा हुआ है.... ॥ ३ ॥

१४३) उगा सूर्य कैसा ?

उगा सूर्य कैसा कहो मुक्ति का ये ? उजाला करोडो घरों में न पहुँचा ।
खुला पिंजरा है, मगर रक्त अब भी, थके पंछियों के परों में न पहुँचा ॥
न संयम-व्यवस्था, न एकात्मता है, भरी है मनों में अभी तक गुलामी;
वही राग अंग्रेजियत का अभि तक, सुनाते बडे लोग नामी-गरामी;
लुढकती मंदिर जिन्दगी की लयों में, अभी मुक्ति-गायन स्वरों में न पहुँचा ॥
मिले जा रहे धूल में रत्न अनगिन, कदरदान अपनी कदर कर रहे है,
मिला बाँटने जो अमिय था सभी को, प्रजा का गला घोंट कर भर रहें है;
प्रजातन्त्र की धार उतरी गगन से, मगर नीर जन-सागरों में न पहुँचा ॥
बिंधा जा रहा कर्ज में रोम तक भी, न थकते कभी-भीख लेकर जगत से;
बिछाये चले जाल जाते विधर्मी, मगर स्वप्न दर्शी नयन है न खुलते !
बचा देश का धन लिया तस्करों से, मगर मालिकों के करों में न पहुँचा,
खुला पिंजरा है मगर रक्त अब भी, थके पक्षियों के परों में न पहुँचा ॥

१४४) हो गये है स्वप्न सब साकार

हो गये है स्वप्न सब साकार कैसे मान ले हम ।
टल गया सर से व्यथा का भार कैसे मान ले हम ।
आ गया स्वातंत्र्य फिर भी चेतना आने न पायी ।
प्रगति के ही नाम श्रध्दा और श्रम को दी बिदाई ।
इस भयंकर मौज को पतवार कैसे मान ले हम ।
हो गये है स्वप्न सब साकार... ॥ १ ॥
देश सारा घिर रहा है, दैन्य के घन बादलों से ।
घिर रही प्रिय मातृ भू है चतुर्दिक खल अरिदलों से ।
इस अमा के तिमिर को ही अरूणिमा क्या मान लें हम ॥
हो गये है स्वप्न सब साकार... ॥ २ ॥
राष्ट्र को सब लोग भूले स्वार्थ है युग मँत्र सारा ।
प्रान्त भाषा भेद की है बह रही नित कलुष धारा ।
इस पराये तन्त्र को निज तन्त्र कैसे मान ले हम ॥
हो गये है स्वप्न सब साकार.... ॥ ३ ॥

वेष–वाणी तत्व–दर्शन दूसरों का यह सभी ले ।
विकृतियों को ग्रहण करते निज प्रकृति की आज भूले ।
दूसरों की यह नकल है स्मिता क्या मान लें हम ॥
हो गये है स्वप्न सब साकार... ॥ ४ ॥
अलस तज कर उद्यमी बन लें हृदय में ध्येय निष्ठा ।
हम सभी का एक व्रत हो विश्व में माँ की प्रतिष्ठा ।
देश के भविष्य की है अब चुनौती मान लें हम ॥ हो गये है स्वप्न सब साकार... ॥ ५ ॥

१४५) जल उठी अखण्डित ज्योति

जल उठी अखण्डित ज्योति । क्षीण पडी रश्मियाँ युगों से,
दमक उठी तिमिरावृत्त मग पर ।
निबिड निशा में सोये मानव, निकल पडे निज पथ लख डग भरा ।
सोयी मानवता जागी, जग उठी शक्तियाँ सोती... ॥ १ ॥
युग युग की अलसायी पलकें, चौंक उठी ज्योति जग लख कर ।
गत विस्मृत अरमान हृदय के, जाग उठे अंगडाई लेकर ।
कण–कण स्पंदित हुआ आज, गुंथ गये बिखरते मोती... ॥ २ ॥
गई निराशा निशा बीत अब, प्राची अरूणिम हुआ दृष्टीगत ।
नव–स्पंदन नव–जीवन जग में, जीवित हुआ सुधा पीकर मृत,
विस्मृत स्मृतियाँ जाग उठी, मिल गई राष्ट्र निधि खोती... ॥ ३ ॥

१४६) मैं बिपिन का फूल मुझको

मैं बिपिन का फूल मुझको, तोड प्रतिमा पर चढा दो; मातृ चरणों पर चढा दो ॥
जग जिसे कहता जवानी । एक लघु सी ही कहानी ।
सुरभी मधु मकरन्द की भी, धूल ही बचती निशानी ।
हो न जाए जीर्ण जर्जर, यह कलित कोमल कलेवर ।
देव उससे पूर्व इसको, साधना पथ पर चढा दो । मातृ चरणों पर चढा दो ॥
चढ चुके है अगिन जन, मिट चुके है अगिन जीवन ।
पर अधूरी आज भी है, साधना जिसकी चिरन्तन ।
कर सकूँ मैं भी समर्पण, गा सकूँ कर मौन वन्दन,
हे प्रभू नैवेद्य बन उस, आरती के स्वर बढा दो ।
मातृ चरणों पर चढा दो । आज हूँ चाहे अकेला, आ रही घर एक बेला ।
जबकि मुझसे अगिन इस, पथ पर रचेंगे एक मेला ।
मातृ का अभिषेक होगा, हर्ष होगी प्रथम मुझको;
मातृ चरणों पर चढा दो ॥ मातृ चरणों पर चढा दो ॥

१४७) एक नया इतिहास रचें हम

एक नया इतिहास रचें हम, एक नया इतिहास ।
डगर-डगर सब दुनियाँ चलती, हम बीहड में पंथ बनायें ।
मंजिल चरण चूमने आये, हम मंजिल के पास न जाये ।
धारा के प्रतिकूल नाव से, एक नया विश्वास रचें हम... ॥ १ ॥
दूर हटाकर जग के बंधन, बदले हम जीवन की भाषा ।
छिन्न-भिन्न करके बंधन, बदलें हम अपनी परिभाषा ।
अंगारों में फूल खिलाकर, एक नया मधुमास रचें हम... ॥ २ ॥
अंबर हिले धरा डोले, पर हम अपना पंथ न छोडे ।
सागर सीमा भूलें, पर हम अपना ध्येय न छोडे ।
स्नेह प्यार की वसुन्धरा पर, एक नया आकाश रचें हम... ॥ ३ ॥

१४८) पथिक अनथक जा रहा,

पथिक अनथक जा रहा, निज रक्त ही पाथेय ले कर ॥
कालिमा ही कालिमा का क्रूर नर्तन हो रहा जब,
भाग्य तारा पलट नभ का ईश प्यारा सो रहा जब,
गरज को छू सरल मानव विकल अंगी हो रहा जब,
एक तिनके का सहारा ही बचा संसार को जब,
त्रस्त जन का त्राण करने श्रेय में सब प्रेय लेकर..... ॥ १ ॥
है अकेला, पर नही है डगर में पग डगमगाते,
विपिन के सब जीव हिंसक पथिक का साहस बढाते,
शैल मस्तक पर उठाते दूर तक नभ छोड आते,
चरण चुम्बन वीर का कर शूल फूले सब समाते ।
आपदायें आ खडी बन प्रेरणायें स्नेह लेकर... ॥ २ ॥
प्रगति का वरदान पंछी स्वयं गति से पा रहा है,
लिये सम्बल तेज बल का पथिक बढता जा रहा है,
सतत तप बल से सिमटता प्रात युग का आ रहा है,
क्षितिज से स्वागत ध्वजा ले निरत दौडा आ रहा है,
साधना साधन पथिक का साधना ही ध्येय लेकर... ॥ ३ ॥
है ना आकांक्षा हृदय में फूल माला की तनिक भी,
अस्थियों के फूल तक भी मातु आर्या मांग लेगी ।
कामना बस एक मब में देश की ही कीर्ति विकसित,
जन्म-जन्मांतर अवधी ही क्षीण क्यों हो मातृभक्ति ।
देह की आसक्तियाँ तज अमरतत्व अजेय लेकर..... ॥ ४ ॥

१४९) शुध्द सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है

शुध्द सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है ॥
प्रेम जो केवल समर्पण, ही सपर्मण जानता है,
और उस में ही स्वयं की, धन्यता बस मानता है,
दिव्य ऐसे प्रेम में, ईश्वर स्वयं साकार है, ईश्वर स्वयं साकार है... ॥ १ ॥
द्वेश की ज्वाला जगत की, नित जलाना जानती है ।
किन्तु सुरसरि स्नेह को मधुवन खिलाना जानती है ।
छेडती है हृदय वीणा के सभी वे तार है... ॥ २ ॥
दीप में स्नेह जब तक, वह तभी तक ज्योति देता,
स्नेह से जब शून्य होता विरत तम को कौन करता ।
नित्य ज्योतिर्मय हमारा हृदय स्नेहागार है.... ॥ ३ ॥
भरत–जननी ने किया वात्सल्य से पालन हमारा,
है कृपा इसकी मिला है प्राण तन जीवन हमारा ।
भक्ति से हम हो समर्पित, बस यही अधिकार है... ॥ ४ ॥
कोटि आखों से निरन्तर आज आसूँ बह रहे है ।
आज अगणित बन्धु दुःसह यातनाएँ सह रहें है ।
दुःख हरे सुख दे सभी को एक यह आचार है... ॥ ५ ॥

१५०) हम केशव के अनुयायी है

हम केशव के अनुयायी है, हमने तो बढना सीखा है ।
लक्ष्य दूर है पथ दुर्गम है, किन्तु पहुँचकर ही दम लेंगे ।
बाधाओं के गिरि शिखरों पर, हमने तो बढना सीखा है.... ॥ १ ॥
ख्याति प्रतिष्ठा हमें न भाती, केवल माँ की कीर्ति सुहाती ।
माता के हित प्रतिपल जीवन, हमने तो जीना सीखा है ।
अंधकार में बन्धु भटकते, पंथ बिना व्याकुल दुख सहते ।
पथ दर्शक दीपक बन, तिल तिल हमने तो जलना सीखा है... ॥ २ ॥
तृषित जनों को जीवन देंगे, शस्य श्यामला भूमि करेंगे ।
सुरसरि देने हिमगिरि के सम, हमने तो गलना सीखा है ॥
धरती को सुरभित कर देंगे, हे माँ हम मधुऋतु लायेंगे ।
शूलों में भी सुमनों के सम, हमने तो खिलना सीखा है... ॥ ३ ॥

१५१) पथ का अन्तिम लक्ष्य नही है

पथ का अन्तिम लक्ष्य नही है, सिंहासन चढते जाता,
सब समाज को लिये साथ में, आगे है बढते जाना, आगे है बढते जाना ।
इतना आगे, इतना आगे, जिसका कोई छोर नही,
जहाँ पूर्णता मर्यादा हो, सीमाओं की डोर नही,
सभी दिशाएँ मिल जाती है, उस अनंत नभ को पाना.....आगे है बढते जाना.... ॥ १ ॥
छोटे-मोटे फल को पाने, यह न परिश्रम सारा है,
देवों को भी दुर्लभ है जो, ऐसा संघ हमारा है,
सफल राष्ट्र का अनुपम वैभव, सभी भाँति से है लाना...आगे है बढते जाना.... ॥ २ ॥
वैभव तब ही सच्चा समझे, सब सुख पाये लोग सभी,
बाधाओं, भय, कुंठाओं से, मुक्त धरा गत-शोक सभी,
गुरू की पूजा न्याय व्यवस्था, निखिल विश्व में सरसाना...आगे है बढते जाना.... ॥ ३ ॥
इस महान उद्देश्य प्राप्त हित, लगे भले जीवन सारा,
एक जन्म क्या बार-बार ही, इसी हेतु जीवन-धारा,
जियें इसी हित, और मृत्यु को, इसी हेतु है अपनाना....आगे है बढते जाना... ॥ ४ ॥

उद्‌बोधन

१५२) अब तक सुमनों पर चलते थे

अब तक सुमनों पर चलते थे, अब काटों पर चलना सीखें ॥
खडा हुआ है अटल हिमालय, दृढता का नित पाठ पढाता;
वही निरन्तर ध्येय-सिन्धु तक, सरिता का जल-कण बतलाता;
अपने दृढ निश्चय से पथ की, बाधाओं को ढहना सीखे... ॥ १ ॥
अपनी रक्षा आप करें जो, देता उसका साथ विधाता;
अन्यों पर अवलम्बित है जो, पग-पग पर वो ठोकर खाता;
जीवन का सिध्दान्त अमर है; उस पर हम नित चलना सीखे... ॥ २ ॥
हममें चपला सी चंचलता, हममें मेघों का गर्जन है;
हममें पूर्ण चन्द्रमा-चुम्बी, सिन्धु-तरंगों का नर्तन है;
सागर से गम्भीर बनें हम, पवन समान मचलना सीखे... ॥ ३ ॥
उठे-उठे अब अन्धकारमय, जीवन-पथ आलोकित कर दें;
निबिड-निशा के गहर तिमिर को, मिटा, आज जग ज्योतित कर दें;
तिल-तिल कर अस्तित्व मिटा दें, दीपशिखा सम जलना सीखें... ॥ ४ ॥
अब तक सुमनों पर चलते थे, अब काटों पर चलना सीखें ॥

१५३) अरे साधक ! साधना कर !

अरे साधक ! साधना कर !
प्रबल झंझा के थपेडों से निरंतर तू लडे जा,
यदि न देता साथ कोई तू अकेला ही बढे जा,
आज अपने पंथ का बस तू स्वयं निर्माण करना,
क्यों पतन की ओर जाता सीख ले उत्थान करना,
लक्ष्य तेरे पास हो या दूर, बस तू साधना कर ! अरे साधक ! साधना कर !
चूमता चरण वैभव, भूलता है आज क्यों तू
मुग्ध नव-जग कल्पना में भूलता है आज क्यों तू
ज्ञान हमने ही दिया था, ज्ञान का भण्डार भारत,
आज के इस विश्व का, भी है अमर आधार भारत,
आज भी सामर्थ्य तुझमें मत किसीसे याचना कर,
अरे साधक ! साधना कर !
राष्ट्र ही सर्वस्व तेरा, राष्ट्र ही है प्राण तेरा,
आज निज तिल-तिल मिटाकर, राष्ट्र का निर्माण कर तू,
भग्न वीणा के स्वरों में आज मीठी तान भर तू,
राष्ट्र-मन्दिर के पुजारी, राष्ट्र की आराधना कर,
अरे साधक ! साधना कर !

१५४) उठो वीर अब सिंहनाद कर

उठो वीर अब सिंहनाद कर, रण के साज सजाय । रण के साज सजायें ॥
कर्मशील बन, कर्म-प्रवण बन, राष्ट्र-प्रेम के पथ पर,
आत्मशोध कर. आत्मबोध का अन्तर में अमृत भर,
लेकर सत्वर जीवन की गति, स्पन्दन हो श्रध्दानत,
आज करें युग-पुरूष राम का पुनरपि नूतन स्वागत,
ताप-दग्ध संसति को उनके शुभ संदेश सुनयें. रण के साज सजायें ॥
यद्यपि है घिर रहा चतुर्दिश विपदाओं का घनतम,
निश्चित किन्तु आ रहा नव मंगल प्रत्यूष मनोरम,
इस पावन बेला में कैसी ग्लानि विषाद उदासी,
पुनः सदृश बन, राष्ट्रधर्म-संरक्षण पर्व मनायें, रण के साज सजायें ॥
निज संस्कृति की दिव्य ज्योति का ले आदर्श सहारा,
बढे चलें अविकल, मिल जायेगा उत्कर्ष किनारा,
आमंत्रण देता अतीत का विस्मृत शौर्य हमारा,
जयश्री ने व्याकुल कंठों से देखो हमें पुकरा,
चलो मातृमन्दिर में, तन-मन-धन उपहार चढायें, रण के साज सजायें ॥

१५५) कर रहा हिमवान फिर आह्वान

कर रहा हिमवान फिर आह्वान, भारत जाग रे, भारत जाग रे ॥
पाप का दिनकर उदय है हो रहा, धर्म अपनी आस्था है खो रहा,
आज छल ने रूप भीषण है धरा, सत्य आंचल में छुपा है रो रहा,
सो गई है आन, चुप अभिमान । भारत जाग रे, भारत जाग रे ॥ ॥ १ ॥
जाग फिर से धर्म को बलवान कर, सत्य की रख लाज फिर अभियान कर,
आज छल को जीत, युग यह कह रहा,
मातृ-रक्षण हेतु उठ बलिदान कर, फिर बनो दृढवान, लेकर आन ।
भारत जाग रे, भारत जाग रे ॥ ॥ २ ॥
आज अर्जुन, भीम का अवतार बन, प्रलय रूपी काल का श्रृंगार बन,
आज करवट ले रहा है हिम-शिखर, शत्रू-मर्दन हेतु तू अंगार बन,
आज बन भगवान, ले वरदान ।
भारत जाग रे, भारत जाग रे ॥ ॥ ३ ॥

१५६) चल रहे हैं चरण अगणित

चल रहे हैं चरण अगणित. ध्येय के पथ पर निरन्तर ।
श्रेष्ठ जीवन की धरोहर, पूर्वजों से जो मिली है,
विश्व को सुख-शान्ति दात्री, जो यहाँ संस्कृति पली है,
है उसे रखना चिरन्तन, मृत्यु का भी सिर कुचल कर, चल रहे हैं चरण अगणित ॥ ॥ १ ॥
हूण, शक, बर्बर, यवन की मौत इस भू पर हुई है,
आंग्ल मुघल, विदेशियों की जीत हार बनी यही है,
अन्त में विजयी हमें हैं, आदि का अभिमान लेकर, चल रहे हैं चरण अगणित ॥ ॥ २ ॥
भ्रान्ति जन-मन की मिटाते, क्रांति का संगीत गाते,
एक से दस लक्ष्य होकर, कोटियों को है बुलाते,
मातृ-भू की अर्चना में, विजय का विश्वास रखकर, चल रहे हैं चरण अगणित ॥ ॥ ३ ॥
साध्य करना है हमें, गीता प्रदर्शित ध्येय-सपना,
बस इसी को पूर्ति के हित, हो समर्पित जन्म अपना,
तुष्ट माँ होगी तभी तो, विश्व में सम्मान पाकर,
चल रहे हैं चरण अगणित, बस इसी धून में निरन्तर, चल रहे हैं चरण अगणित ॥ ॥ ४ ॥

१५७) जन-जन के मन का तर्पण हो

जन-जन के मन का तर्पण हो ।
अग्निहोत्र हो रहा भूमि पर जीवन-आहुति का अर्पण हो, जन-जन के मन का तर्पण हो
कोटि शीर्ष धारण कर भू पर राष्ट्र-पुरूष अवतरित हुआ है,
कोटि नयन की मधुर दृष्टी में रूद्र-रोष अब स्फुरित हुआ है,
कोटि बाहु की प्रबल शक्ति से मातृ-भूमि का संरक्षण हो, जन-जन के मन का तर्पण हो... ॥ १ ॥

यज्ञ हो रहा है राष्ट्र-त्राण का, सुरभित प्रान्त-प्रान्त का कोना,
यज्ञ-धूम बढ रहा गगन में दिव्य शक्ति है जागृत होना,
स्वाहा-स्वधा पुण्य घोषों से राष्ट्र-पुरूष क शुभ अर्चन हो, जन-जन के मन का तर्पण हो..... ॥ २ ॥
देव-भूमि भारत वसुन्धरा की सेवा का प्रिय व्रत लेकर,
मातृ-भूमि पर मर मिटने की दिव्य भावना का बल लेकर,
प्रबल पराक्रम दृढ पौरूष से, भारत माँ का आराधन हो । जन-जन के मन का तर्पण हो... ॥ ३ ॥
शुध्द प्रखरतर राष्ट्रभक्ति की लहर उठे सबकी नस-नस में,
बलिदानी भावों की आँधी उठे आज जन-जन मानस में,
शिव ताण्डव का सरगम गूञ्जे राष्ट्र-धर्म का परिरक्षण हो, जन-जन के मन का तर्पण हो... ॥ ४ ॥

१५८) जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान ।
प्राची की चंचल किरणों पर आया स्वर्ण विहान ॥ जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान..
स्वर्ण प्रभात खिला घर-घर में जागे साये वीर,
युध्द स्थल में सज्जित होकर, बढे आज रणधीर.
आज पुनः स्वीकार किया है, असुरों का आव्हान ॥ जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान.. ॥ १ ॥
सहकर अत्याचार युगों से स्वाभिमान फिर जागा,
दूर हुआ अज्ञान पार्थ का धनुष-बाण फिर जागा,
पाञ्चजन्य ने आज सुनाया संसृति को जयगान ॥ जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान.. ॥ २ ॥
जाग उठी है वानर सेना जाग उठा वनवासी,
चला उदधि को आज बाँधने ईश्वर का विश्वासी,
दानव की लंका में फिर से होता है अभियान, जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान.. ॥ ३ ॥
खुला शंभू का नेत्र आज फिर, वह प्रलयंकर जागा,
तांडव की वह लपटें जागीं, वह शिवशंकर जागा,
ताल-ताल पर होता जाता पापों का अवसान, जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान.. ॥ ४ ॥
ऊपर हिम से ढकी खडी है, वे पर्वत मालायें,
सुलग रही हैं भीतर-भीतर प्रलयंकर ज्वालायें,
उन लपटों में दीख रहा है, भारत का उत्थान, जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान.. ॥ ५ ॥

१५९) जाग हिन्दुस्थान सोये

जाग हिन्दुस्थान सोये, जाग हिन्दुस्थान ।
जाग राणा-कुल अमर हे ! कुल-शिवा के वीर-वर हे
कर रही अव्हान जननी, व्यथित व्याकुल प्राण ॥ १ ॥
तज परस्पर कलह मन की, साधना कर संगठन की,
भर अपरिमित प्रेम उर, गा दे प्रलय के गान ॥ २ ॥

ओ ! हिमालय तू गरज पड, आज अपना मौन तज कर;
थरथरा जाये धरा, उठ जाये उदधि उफान... ॥ ३ ॥
प्राप्त चिर-गौरव करे माँ, गात्र चिर वैभव भरे माँ,
वन्दिता हो, अर्चिता हो, हो पुनः उत्थान... ॥ ४ ॥
राष्ट्र ध्वज से स्फूर्ति लेकर, मृत-शिला को मूर्ति देकर,
शीघ्र आलस को भगा दें, आज जीवन दान.... ॥ ५ ॥

१६०) जिसने मरना सीख लिया है

जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को ।
जो काटों के पथ पर आया, फूलों का उपहार उसी को ॥
जिसने सजाये गीत अपने, तलवारों के खन खन स्वर पर,
जिसने विप्लव राग अलापे, रिमझिम गोली के वर्षण पर,
ओ बलिदानों का प्रेमी है, है जगती का प्यार उसी को.. ॥ १ ॥
हँस हँस कर इक मस्ती लेकर, जिसने सीखा है बलि होना,
अपनी पीडा पर मुस्काना, औरों के कष्टों पर रोना,
जिसने सहना सीख लिया है संकट, है त्यौहार उसी को... ॥ २ ॥
दुर्गमता लख बीहड पथ की, जो न कभी रूका कहीं पर,
अनगिनती आघात सहे पर, जो न कभी भी झुका कहीं पर,
झुका रहा है मस्तक अपना यह सारा संसार उसी को... ॥ ३ ॥

१६१) जीवन दीप वर्तिका तन की

जीवन दीप वर्तिका तन की, स्नेह-हृदय में भरना सीखें,
दानवता का तिमिर हटाने, तिल-तिल कर हम जलना सीखे ॥
अमा निशा सी घोर निशा हो, अन्धकारमय दसों दिशा हों ।
झंझा के झोके हो प्रतिपल, फिर भी अविचल चलना सीखें.. ॥ १ ॥
बीहड वन चाहे नद-नाले, शेल-श्रृंग भी बाधा डालें ।
कुश-कंटक-युत पंथ विकट हो, काँटों को हम दलना सीखें.... ॥ २ ॥
स्नेह-सुधा पी जगती जीती, स्तुति सुमनों से पुलकित होती,
निंदा-गरल पचाकर प्रमुदित, ज्वाला में हम पलना सीखें.. ॥ ३ ॥
तिमिर-ग्रस्त मानव बेचारे, स्वार्थ-मोह रजनी से हारे,
प्राण-प्रदीप प्रभा फैलाने, कण-कण कर हम जलना सीखें... ॥ ४ ॥

१६२) तरूण वीर देश के

तरूण वीर देश के, मूर्त वीर देश के, जाग जाग जाग रे, मातृ भू पुकारती ।
शत्रू अपने शीश पर, आज चढके बोलता । शक्ति के घमंड में, देश मान तोलता,
पार्थ की समाधी को, शम्भू के निवास को, देख आँख खोल तू, अर्गला टटोलता,
अस्थि दे कि, रक्त तू, वज्र दे की, शक्ति तू, कीर्ति है खडी हुई, आरती उतारती, मातृ भू पुकारती... ॥ १ ॥
आज नेत्र तीसरा, रूद्र-देव का खुले, ताण्डव के तान पर, काँप व्योम भू डुले,
मानसर पे जो उठी, बाहू शीघ्र स्वस्त हो, बाहू-बाहू वीर को, स्वाभिमान से खिले,
जाग शंख फूँक रे, शूर यों न चूक रे, मातृभूमि आज फिर, है तुझे निहारती, मातृ भू पुकारती... ॥ २ ॥
आज हाथ रिक्त क्यों, जन-जन विक्षिप्त क्यों ? शस्त्र हाथ में लिये, करके तिरछी आज भों,
देश-लाज के लिये, रण के साज के लिये, समय आज आ गया, तू खडा है मौन क्यों ?
करो सिंह गर्जना, शत्रू से है निबटना, जय निनाद बोल रे, है अजेय भारती, मातृ भू पुकारती... ॥ ३ ॥

१६३) देश प्रेम के मतवालों को

देश प्रेम के मतवालों को, दो मंगल वरदान, प्रभु जी, दो मंगल वरदान ॥
यदि हो तलवारें हो गर्दन पर, विचलित न ध्येय के पथ से हों,
हम उनको शक्ति प्रदान करें, जो ध्येय-विमुख अज्ञान, प्रभु जी, दो मंगल वरदान ॥
ना जान सके सपने में भी, क्या भय होता है जीवन में,
मरने में भी जीवन समझे, हम भारतीय संतान, प्रभु जी, दो मंगल वरदान ॥
वह दिन भी आये दयानिधे ! जब पत्थर तक भी भारत का,
होकर जीवित सा मचल उठे, कर देश-प्रेम का ध्यान, प्रभु जी, दो मंगल वरदान ॥

१६४) ध्येय मार्ग पर चले वीर तो

ध्येय मार्ग पर चले वीर तो, पीछे अब न निहारो, हिम्मत कभी न हारो ॥
तुम मनुष्य हो, शक्ति तुम्हारे जीवन का संबल है;
और तुम्हारा अतुलित साहस गिरि की भाँती अचल हो;
तो साथी केवल पल-भर को माया-मोह बिसारी ॥ हिम्मत कभी न हारो... ॥ १ ॥
मत देखो कितनी दूरी है, कितना लम्बा मग है;
और न सोचो साथ तुम्हारे, आज कहाँ तक जग है;
लक्ष्य-प्राप्ति की बलिवेदी पर, अपना तनमन वारो; हिम्मत कभी न हारो... ॥ २ ॥
आज तुम्हारे साहस पर ही, मुक्ति सुधा निर्भर है;
आज तुम्हारे स्वर के साथी, कोटि कण्ठ के स्वर है;
तो साथी बढे चलो मार्ग पर, आगे सदा निहारो ॥ हिम्मत कभी न हारो... ॥ ३ ॥

१६५) पंथ स्वयं आयेगा

पंथ स्वयं आयेगा । उर में है यदि आग लक्ष्य की । पंथ स्वयं आयेगा ॥
नदियों को पहले से किसने जलधि राह बतलाई,
फूटी वह पत्थर के उर से शिला-शिला टकराई,
करती हाहाकार फिरी वह वन-वन में सिमट समाई,
तम से जो लडता तिल-तिल जल ज्योति-सुमन पायेगा, पंथ स्वयं आयेगा ॥
मन में सुनो धधकते स्वर से कौन पुकार रहा है,
मुख से आह निकाले बिन बस जलना, जलना, जलना,
बढो स्वयं काँटों में आकर ध्येय मुस्करायेगा, पंथ स्वयं आयेगा ॥
नदी सूखकर, झुककर पर्वत तुमको देंगे राह,
बढते जाओ अपने पथ पर कम हो न उत्साह,
जन-जन के मानस में फूँको देश प्रेम की ज्वाला, संघ शक्ति की ज्वाला,
आसेतू हिमाचल फिर अखण्ड होवे भारत यह सारा,
हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर भगवा फहरायेगा, पंथ स्वयं आयेगा ॥

१६६) पूज्य माँ की अर्चना का

पूज्य माँ की अर्चना का, एक छोटा उपकरण हूँ ॥
उच्च है वह शिखर देखो, मैं नही वह स्थान लूँगा,
और चित्रित भित्तिका है, मैं नही शौभा बनूँगा,
पूज्य है मातृ-मन्दिर, नीव का मैं एक कण हूँ । पूज्य माँ की अर्चना का... ॥ १ ॥
मुकुट माँ का जगमगाता मैं नही सोना बनूँगा,
जगमगाते रत्न देखो मैं नही हीरा बनूँगा,
पूज्य माँ की चरण-रज का एक छोटा धूलीकण हूँ, पूज्य माँ की अर्चना का... ॥ २ ॥
आरती भी हो रही है गीत बनकर क्या करूंगा ?
पुष्प-माला चढ रही है फूल बनकर क्या करूंगा ?
मालिका का एक तंतू, गीत का मैं एक स्वर हूँ । पूज्य माँ की अर्चना का.... ॥ ३ ॥

१६७) बढ रहे हैं हम निरन्तर

बढ रहे हैं हम निरन्तर, चिर विजय की कामना लें । बढ रहे है हम निरन्तर ॥
पुष्प-शय्या त्याग दी कर्तव्य-कंकड धार कर,
कूद संगर में पडें हम धैर्य-धनु टंकार कर,
दुष्ट-दानवता दलनहित काल का अवतार लेकर,
अग्नि-पथ पर बढ रहे हम रूद्र सी हुँकार भरकर,
प्रलयकारी हम प्रभंजन अमरता आराधना ले... ॥ १ ॥

है जगाई सुखद हमने सुप्त-स्मृतियाँ चिर-पुरातन,
है संजोई दुखद-स्मृतियाँ चिर-पुरातन नित्य-नूतन,
विगत वैभव के प्रदर्शन, दीनता के कटू निदर्शन,
जय-पराजय, प्रगति-अवनति, सुख-दुखोः का देख नर्तन,
कर चुके प्रण विगत-वैभव-स्थापना की साधना ले.. ॥ २ ॥
हम चले जन-मन-कलुष का नेह से संहार करने,
शुध्द संस्कृति-स्त्रोत की अवरूध्दता का अन्त करने,
सृजन वीणा के सुकोमल तार की झंकार करने,
बन्धुओं के दग्ध उर में शांति का संचार करने,
विकट पथ पर चल पडे ध्रुव ध्येय की सम्भावना ले... ॥ ३ ॥
कर्म-पथ पर इस प्रखरतर शूल भी है, फूल भी है,
अल्प-जन अनुकूल है, पर सेंकडों प्रतिकूल भी है,
तालियों की टूट है, पर गालियाँ भरपूर इस पर,
संकटों के शैल शत-शत, मोह-भ्रम के मूल भी है,
किन्तु सुख-दुख में सदा ही एक सी अभिनन्दना ले.... ॥ ४ ॥
प्रबल सरिता स्त्रोत को अवरूध्द कब किसने किया है,
उत्ताल वारिधि वीचियों को बाँध कब किसने दिया है,
प्रस्फुटित रवि-रश्मियाँ कब छिप सकी वारिद बनों में,
सफल साधक योगियों की मोह कब किसने लिया है,
हम सजग संभ्रम विपद की मोह की अवमानना ले.... ॥ ५ ॥
हम सहस्त्रों शीश, दृढ, पग और हृद. भुज दण्ड धारी,
किन्तु जन-जन में जगी है, भावना एकात्मकारी,
शान्त हिमनग-श्रृंग से है, ज्वाल अंतर की जगाये,
प्रलयकारी है अहो पर साथ ही नव-सृजनकारो,
अडिग. अविचल बन पुजारी मातृ-उर की वेदना ले.... ॥ ६ ॥

१६८) मेरी चिर-साध सफल करदे

मेरी चिर-साध सफल करदे । विस्मृत कर दे मेरे बीते जीवन का अज्ञान,
कर दे उज्ज्वल परम प्रकाशित भव्य-भविष्य महान्,
मेरे चिर-अवरूध्द वचन में गरिमा गौरव का स्वर भर दे... ॥ १ ॥
मेरा युग-परिवर्तन तेरे चरणों का हो विस्मय,
कोटि-कोटि पग पडे प्रगति के नूतन पथ पर निर्भय,
भर दे दृढ विश्वास, वरद-कर मेरे नत-मस्तक पर घर दे.... ॥ २ ॥
ग्रन्थित कर दे स्नेह-सूत्र में मानव मुक्ति अमोल,
युग-युग की कारा से जर्जर मीलित लोचन खोल,
चिर सुन्दर, शिव, सत्य बने जग ऐसा दैवी विजय वर दे.... ॥ ३ ॥

जय–जय की ध्वनियों में जागे सोते जन का जीवन,
निकले उसके रोम–रोम से जननी–सेवा का प्रण,
साहस–सत्य–शील की जीवित धारा घर–घर आज बहा दे.... ॥ ४ ॥

१६९) विजय के गीत गाता चल

विजय के गीत गाता चल ।
निराशा की अमा में पूर्णिमा के गीत गाता चल ॥
किरण है निखिल मरू में अमर आनन्द की धारा,
अटल विश्वास के स्वर में विजय के गीत गाता चल... ॥ १ ॥
उडा दो संकटों के मेघ बढकर चढ समीरण पर,
उठा इस सुप्त में शत चेतना की उर्मियाँ ध्रुवतर,
ज्वलित अंगार के पथ पर विजय के गीत गाता चल... ॥ २ ॥
मुकुल सी खिल उठे मुस्कान रूखे विरल अधरों पर,
उरों की बीन भर दे नई झंकर अवनी पर,
नग्न–असि धार पर क्षण–क्षण विजय के गीत गाता चल... ॥ ३ ॥
जगा दे कोटि कण्ठों में तडित की उच्छ्वसित भाषा,
रगे बलिदान से तेरे उषा के हास की आशा,
पराभव को कुचल कर वर–विजय के गीत गाता चल... ॥ ४ ॥

१७०) विश्व–गगन में युवक प्रवर हे !

विश्व–गगन में युवक प्रवर हे ! गरज उठो गम्भीर ध्वनि से ! !
जाग उठे है आज हमारे अन्तर के सब तार ॥
गौरव से फहराये नभ में राष्ट्र ध्वजा एक बार,
हिन्दु संस्कृति और विजय शक्ति से,
हुई प्रकाशित सर्व दिशायें, एक ध्येय आधार... ॥ १ ॥
एक–एक बिन्दु से सिन्धु उमडे क्षुब्ध अपार,
एक दीप से जले दूसरा, ब्रह्म तेज से क्षात्र तेज से होवे पुनरूध्दार.. ॥ २ ॥
पुण्य–भूमि के शान्त भवन में उठी एक झंकार,
राष्ट्र–व्यापी संगठन मंत्र का , हुआ उच्चारण ग्राम–ग्राम में, भविष्य का आधार... ॥ ३ ॥
कितने युग से बन्द पडे थे खुले सकल ही द्वार,
हिन्दुराष्ट्र के सुप्त हृदय में, आज हो रहा ईश कृपा से जीवन का संचार,
जाग उठा है अंग–अंग में मातृभूमि का प्यार... ॥ ४ ॥

१७१) साधना के देश में

साधना के देश में मत नाम ले विश्राम का,
दीप्त किरणें दे रही सन्देश आशामय सुहाना,
स्नेह सुरभित पवन गाता, जागरण का मधु तराना,
सजल लहरों ने प्रगति की, प्रेरणा के स्वर गुँजाए,
दूर पंथी विहंग ने भी, पुलक कर पर फडफडाए,
अलस-तन्द्रा-निशा बीती, प्रहर आया काम का, साधना के देश में... ॥ १ ॥
ध्येय की अनुमप छटा को अहर्निश मन में संजो तू,
राह की लखकर विषमता ओ पथिक डरना नही तू,
इस कंटीली राह में ही विजय श्री की माल शोभन,
वेदना नैराश्य के ये बीत जायेंगे करूण क्षण,
कर्तव्य पथ पर तू चढा चल कार्य यह भगवान का,
साधना के देश में... ॥ २ ॥

१७२) साधना पथ पर बढे हम

साधना-पथ पर बढे हम, बन्धनों से प्रीति कैसी,
हम शलभ जलने चले है, अस्तित्व निज खोने चले है,
दीप पर जलना हमें हैं, दाह से फिर भीति कैसी... ॥ १ ॥
सिन्धु से मिलने चले है, सर्वस्व निज देने चले है,
अतल से मिलना हमें, शून्य तट पर दृष्टी कैसी... ॥ २ ॥
दीप बन जलना हमें हैं, विश्व-तम हरना हमें है,
ध्येय तिल-तिल जलन का है, कालिमा से भीति कैसी... ॥ ३ ॥
बीज बन मिटने चले है, वृक्ष सम उगने चले है,
धर्म-ध्वजा का स्तम्भ बनना, देह में अनुरक्ति कैसी.... ॥ ४ ॥
आधार ही बनना हमें हैं, नींव में रहना हमें है,
ध्येय जब यह बन चुका है, कीर्ति में आसक्ति कैसी... ॥ ५ ॥

१७३) सोता देश जगा दे !

सोता देश जगा दे ! सोता देश जगा दे ! !
गरज-गरज नगराज आज हो निद्रा का अवसान,
विजय किरीट लिए सजने को आये स्वर्ण विहान,
तन्द्रा बलस भगा दे... ॥ १ ॥
गंगा-यमुना उठे घहर कर, ले ले प्रबल हिलोर,
ब्रह्मपुत्र उमडे पूरब दिशी, सिन्धु प्रतीची ओर,
घर-घर रस सरसा दे... ॥ २ ॥

पहन नर्मदा की जयमाला, उठ ओ ! विन्ध्य विराट,
एक बार चिंधाड उठो तुम, पूर्व–पश्चिमी घाट,
रण का नाद सुना दे... ॥ ३ ॥

१७४) हम आज प्रगति की ओर चलें

हम आज प्रगति की ओर चलें ॥
उर में जननी की अमर भक्ति, भर नस–नस में उत्साह नया,
पग में तूफानों की गति ले, हम आज प्रगति की ओर चलें.. ॥ १ ॥
है घोर निराशा के बादल, छाये स्वदेश–गगनांगन में,
घिर रही घोर रजनी काली, हम लें प्रकाश की ज्योति चलें.... ॥ २ ॥
गा गंगा–यमुना के गायन, केसरिया बाना पहन–पहन,
सुख और शांती के लिये आज, हम सूर्यकेतु ले हाथ चले.... ॥ ३ ॥
केशव की पावन स्मृति ले हम बन संघ कार्य के अनुगामी,
माँ का मन्दिर जो ध्वस्त पडा, उसकी नव–रचना हेतु चले.... ॥ ४ ॥
है जाग उठे भारत माँ के सच्चे वीर पुजारी अब,
हँस–हँस कर जीवन–कुसुम चढा, हम माँ के पूजन हेतु चले.... ॥ ५ ॥

१७५) हम नवयुग का आहवान करें

हम नवयुग का आहवान करें,सम्हलो हिन्दु युवको;
अब तो अतीत–गौरव का ध्यान करें । हम नवयुग का आवाहन करें ॥
अब बीत गई काली रजनी, जग ने पाया प्रत्युष काल,
हो उदित चला धीरे–धीरे, यह संघ–कार्य का अंशुमालि,
अब राहू की यह दिशा ढली, और मोक्ष–पर्व प्रारम्भ हुआ,
विश्रान्त केसरी जाग उठा, जागरण गान आरम्भ हुआ,
हम वीर तरूण केशव के, नूतन शर का संधान करें । हम नवयुग का आहवान करें... ॥ १ ॥
अपनी इस दीन अवस्था से, अब हिन्दु–हृदय तिलमिला उठा,
यह देख नीरव–नगरी में, कैसा अनुपम व्यवहार हुआ,
चिर–शान्त दैन्ययुत हृदयों में, राष्ट्रीय जीवन संचार हुआ,
भूधर दहले, दिगन्त काँपे, ऐसा अपूर्व आहवान करें । हम नवयुग का आवाहन करें.... ॥ २ ॥
अपने अन्तर की ज्वाला से, अब जीवन–ज्योति जला दें हम,
दानव–पथ पर बढते मानव को, मानवता सिखला दें हम,
अपने अगणित बलिदानों से, माँ के ऋण आज चुका दें हम,
हम हिन्दु वीर अब अति प्रचण्ड, रणचण्डी का आवाहन करें, हम नवयुग का आहवान करें... ॥ ३ ॥
है सुगम कार्य सह कटु–प्रहार, हँसते–हँसते बलि हो जाना,
है सहल कार्य ही समरांगण में, स्वयं वीरगति पा जाना,
पर अपनी स्वर्णमयी दुनिया को, अपने ही पैरो ठुकराकर,

कोमल कलिका समान जीवन को, घरें राष्ट्र-देव के चरणों पर,
हर धीर-वीर है तरूण तपस्वी, कठोरतम बलिदान करें । हम नवयुग का आहवान करें... ॥ ४ ॥
हमने कुसमित-कलिका समान, शैशव को लुजते देखा है,
सौंदर्य-स्वर्ण की तृष्णा में, यौवन को जलते देखा है,
देखा चिन्ता-दावानल में, जीते-जीते ही जल जाना,
शैया पर अजर-अमर मानव का, सिसक-सिसक कर मर जाना,
हम वीर-व्रती क्यों रूके अभी तक, तन-मन-धन, बलिदान करें । हम नवयुग का आहवान करें... ॥ ५ ॥

१७६) हिन्दु युवको ! आज का युगधर्म

हिन्दु युवको ! आज का युग-धर्म शक्ति-उपासना है ॥
बस बहुत अब हो चुकी है शान्ति की चर्चा यहाँ पर,
हो चुकी अति ही अहिंसा-तत्व की अर्चा यहाँ पर,
ये मधुर सिध्दान्त रक्षा देश की पर कर न पायें,
ऐतिहासिक सत्य है, यह सत्य अब पहिचानना है... ॥ १ ॥
हम चले थे विश्व भर को शान्ति का संदेश देने,
किन्तु जिसको बन्धु समझा आ गया वह प्राण लेने,
शक्ति की हमने उपेक्षा की उसी का दण्ड पाया,
यह प्रकृति का ही नियम है अब हमें यह जानना है... ॥ २ ॥
जग नही सुनता कभी कभी दुर्बल जनों का शान्ति प्रवचन,
सिर झुकाता है उसे जो कर सके रिपु-मान-मर्दन,
हृदय में हो प्रेम लेकिन शक्ति भी कर में प्रबल हो,
यह सफलता मन्त्र है करना इसी की साधना है... ॥ ३ ॥
यह न भूलो इस जगत में सब नही है सन्तमानव,
व्यक्ति भी है राष्ट्र भी है जो प्रकृति के घोर दानव,
दुष्ट-दानव दमनकारी शक्ति का संचय करें हम,
आज पीडित मातृ-भू की बस यही आराधना है... ॥ ४ ॥

१७७) साधना का पथ अगम है

साधना का पथ अगम पर, प्रगति जीवन की निशानी ॥
सजल बूंदे तन गला पीडित धरा को प्राण देती,
और धरती 'अन्नदा' बन मानवों को प्राण देती,
अग्नि जल-जल कर जगत की ज्योति का वरदान देती,
त्यागरत निष्कामियों की आज भी विश्रुत कहानी... ॥ १ ॥
अन्त से निरपेक्ष हो, आसन्न विघ्नों से अशंकित,
विजय-खग को बांध, नयनाकाश में बढ रहे ! अकम्पित,
और युग के वक्ष पर कर ले सफल पद चिन्ह अंकित,
कापुरूषता पाप है, चिर शौर्य जीवन की निशानी... ॥ २ ॥

रूक गया यदि जल कहीं तो गंदगी का वास होगा,
एक क्षण भी रूक गई यदि श्वास, जीवन –हास होगा,
और नैसर्गिक नियम यदि रूक गये तो नाश होगा,
भय निराशाग्रस्त हो रूकना, मरणता की निशानी.... ॥ ३ ॥
स्वयं आश्रय केन्द्र बन जी, पाप जीना भार बनकर,
विश्व में जयचिन्ह बन, अभिशाप जीना हार बनकर,
तू घृणा मत बन अरे जी, पूत उर का प्यार बन कर,
एक क्षण के भी लिए भिक्षुक न बन सर्वस्व दानी... ॥ ४ ॥
सफलता निश्चित करेगी प्राणमय अभिषेक तेरा,
प्रातः रवि सा उदय होगा, सुप्त पुण्य विवेक तेरा,
ज्योति से तेरी मिटेगा, विश्व जीवन का अंधेरा,
तू न बन प्रासाद, पूजा–दीप बन घोर मानी... ॥ ५ ॥

१७८) प्रेरणा की यह घडी !

प्रेरणा की यह घडी !
हृदय कलिकाएँ जगाकर, गूंथ लो श्रध्दा–लडी प्रेरणा की,
मुक्त नभ हो मुक्त धरणी, मुक्त बहता हो पवन,
मुक्त सुमनों को संजोती, मुक्त माली की लगन,
संगठन के सूत्र में––आओ मिला दे नव कडी ! प्रेरणा की यह घडी !
बन्धु सोते मत रहो, "है विवशता" मत कहो !
जो न रूकती पर्वतों से विमल गंगा से बही !
तोड दो चटटान सारी––राह रोके जो अडी ! प्रेरणा की यह घडी !
मातृ भू कमलासना––विश्व गुरू हो पूजिता !
सप्त दीपों सप्त सागर––के जलों से अर्चिता !
सप्त भुवनों से चढे फिर––माल गज–मुक्ता जडी ! प्रेरणा की यह घडी !
प्रेरणा की यह घडी !

१७९) जीवन बन तू दीप समान

जीवन बन तू दीप समान
जल–जल कर सर्वस्व मिटा दे, बन कर्तव्य प्रधान ॥
दुनिया में छाया अंधियारा, भटक रहा पंथी बेचारा,
अन्धकार में कर उजियारा, दे पथ का ज्ञान ॥
बार–बार बत्ती उकसाकर, धीरे–धीरे देह जलाकर,
हँसते–हँसते फूल गिरा कर, दिखा मधुर मुस्कान ॥
अंतिम क्षण तक ज्योति जलाकर हँस–हँसकर प्रस्थान ॥

१८०) तन अर्पित है तो मन्दिर

तन अर्पित है तो मन्दिर नींव उठाओ ।
भग्न हुई जिसकी प्राचीरें आघातों से,
ध्वस्त हुई जिसकी प्रतिमाएँ संहारो से,
जीर्णोध्दार करो, तन का आधार बनाओ,
तन अर्पित है तो मन्दिर की नींव उठाओ... ॥ १ ॥
मन अर्पित है तो स्वदेश में प्राण जगाओ !
अन्तर्मन वह क्या, विपदा में जो भय पाये,
वह कैसा मन आत्म-रति में जो सुख पाये,
कलुषा मिटकर जन के मन का दीप जलाओ,
मन अर्पित है तो स्वदेश में प्राण जगाओ... ॥ २ ॥
धन अर्पित है तो माँ का श्रृंगार सजाओ !
धुंधला है सिंदुर नयन जिसके गीले है,
कोटि सुतों की जननी फिर भी कर रीते हैं,
पद-पंकज में रत्नों का अम्बार लगाओ,
धन अर्पित है तो माँ का श्रृंगार सजाओ,
तन, मन, धन, जीवन अर्पित, तो देश जगाओ... ॥ ३ ॥

१८१) दे रही माँ रण निमंत्रण

दे रही माँ रण निमंत्रण ॥
शत्रू करता आज गर्जन, दैत्य सा उन्मत्त नर्तन,
संगठन का वज्र लेकर, हम करें रिपु मान मर्दन... ॥ १ ॥
सुप्त सैनिक आज जागें, और रण के साज साजें ।
दानवों से मुक्त कर दें, मातृ भू का आज कण-कण... ॥ २ ॥
आज का रण न्याय का है, सामना अन्याय का है,
पाशवी जन से करें हम, आज हिंदू राष्ट्र रक्षण... ॥ ३ ॥
आज दिन है साधना का, शक्ति की आराधना का,
संगठित हो राष्ट्र के हित, हम करें सर्वस्व अर्पण.... ॥ ४ ॥
दे रही माँ रण निमंत्रण....

१८२) एक-एक पग बढते जाये

एक-एक पग बढते जायें, बल वैभव का युग फिर लायें ॥
जन-जन की आँखों में जल है, भारत माता आज विकल है,
आज चुनौति हम पुत्रों की, जिनमें राष्ट्र प्रेम अविचल है,
अपना जीवन धन्य इसीमें, मुरझाये मुख कमल खिलायें.... ॥ १ ॥

बिखरे सुमन पडे है अगणित, स्नेह सूत्र में कर लें गुंफित,
माता के विस्मृत मंदिर को, मधुर गंध से कर दें सुरभित,
जननी के पावन चरणों में, कोटि सुमन की माल चढायें..... ॥ २ ॥
कोटि जनों की संघशक्ति हो, सब हृदयों में राष्ट्र-भक्ति हो,
कोटि बढे पग एक दिशा में, सबके मन में एक युक्ति हो,
कोटि-कोटि हाथों वाली, नव असुर मर्दिनी हम प्रगटायें.... ॥ ३ ॥

१८३) ये उथल पुथल, उत्ताल लहर

ये उथल पुथल, उत्ताल लहर, पथ से न डिगाने पायेगी ।
पतवार चलाते जायेंगे मंजिल आयेगी-आयेगी ॥
लहरों की गिनती क्या करना ? कायर करते हैं, करने दो ।
तूफानों से सहमें जो है, पल-पल मरते हैं, मरने दो ।
चिर पावन नूतन बीज लिये मनु की नौका तिर जायेगी ॥ पतवार चलाते जायेंगे..... ॥ १ ॥
अन-गिन संकट जो झेल बढा वह यान हमारा अनुपम है,
नायक पर है विश्वास अटल, दिल में बाहों में, दम खम है,
यह रैन-अंधेरी बीतेगी उषा जय-मुकुट चढायेगी ॥ पतवार चलाते जायेंगे..... ॥ २ ॥
विध्वंसों का ताण्डव फैला, हम टिके सृजन के हेम-शिखर,
हम मनु के पुत्र प्रतापी है, वर्चस्वी धेरोदात्त प्रखर,
असुरों की कपट कुचाल कुटिल, श्रध्दा, सबको सुलझायेगी ॥ पतवार चलाते जायेंगे..... ॥ ३ ॥
इतिहास हमारा संबल है, विज्ञान हमारा है भुजबल,
गत वैभव का आदर्श आज कर देगा भावी भी उज्ज्वल,
नूतन निर्मित की तृप्ती अमर फिर गीत विजय की गायेगी, पतवार चलाते जायेंगे..... ॥ ४ ॥
इस धरती में शक, हूण मिटे, गजनी गौरी अरू अब्दाली,
पश्चिम की लहरें लौट गई ले ले अपनी झोली खाली,
पूंजीशाही बर्बरता सब, ये धरती उदर समायेगी,
पतवार चलाते जायेंगे, मंजिल आयेगी-आयेगी ॥ ये उथल-पुथल, उत्ताल लहर..... ॥ ५ ॥

१८४) दसों दिशाओ में जायें

दसों दिशाओ में जायें, दल बादल से छा जायें,
उमड-घुमड हर धरती को, नन्दन बन सा लहरायें ॥ दसों
ये मत समझो किसी क्षेत्र को खाली रह जाने देंगे,
दानवता की बेल विषैली कहीं नही छाने देंगें,
जहाँ कहीं तू झुलसाती अमृत रिमझिम बरसायें...दसों
फूल सुकोमल खेती पर हम बिजली नही गिराते हैं,
किन्तु अडीले बालू टीले वर्षा में ढह जाते हैं,

ध्वंस हमारा काम नही–अविरत जीवन सरसायें...दसों
मानव जीवन की स्वतंत्रता नष्ट नहीं होने पायें,
यन्त्र–व्यवस्था हृदयहीन में स्वत्व नही खोने पायें,
जीवन–स्तर का अर्थ न हम–भोग डगर में भरमायें..दसों
अमरिका या रूस किसी में जीवन दर्शन सिध्दि नही,
आदि सृष्टी से हिन्दु जाती की पूर्ण–धर्म उपलब्धि रही,
ज्ञान किरण फिर प्रकटायें–शान्ति व्यवस्था समझायें...दसों

१८५) हम शीत गया है बीत

हम शीत गया है बीत–किन्तु ऋतुराज रिझाना शेष अभी ।
उन्मुक्त हुए नव–जीवन में, जन ज्वार जगाना शेष अभी ॥
उल्लास उठाना शेष अभी ।
अँगडाई लेती तरूणाई :
व्याकुल है आगे बढने को ।
धरती का भाग्य बदलने को ताकत अजमाना शेष अभी ।
दुःशासन चीर उतार रहाः
बूढे सब बैठे देख रहे,
पर, भीम व्रती का क्रोधित हो, कसमें है खाना शेष अभी ।
संभ्रम में अब भी अर्जुन :
अपना है, कौन पराया है,
नूतन परिवेश दिया करके, गीता समझाना शेष अभी ।
फल की जिनको चाह नही !
अभिमन्यु अनेकों प्रस्तुत है,
अनगिन इन उर्जा–स्त्रोतों के है तार मिलाना शेष अभी ।
जय का पथ दर्शन करने की :
सागर लाँघे है, लाँघेंगे,
हम कौन ? हमारा दर्शन क्या––
यह याद दिलाना शेष अभी ।

१८६) आज यही युग धर्म हमारा

देव–दुर्लभा भरत–भूमि का पितृभूमि का पुण्यभूमि का ।
पूज्य पूर्वजों द्वारा निर्मित पावन मन्दिर मातृभूमि का ॥
नष्ट, भ्रष्ट, खण्डित होता वह तन–मन–धन भी सबकुछ खोकर
गौरव रक्षा करें आज हम हो विरूध्द चाहे जग सारा... आज यही युग धर्म हमारा... ॥ १ ॥

जिसके कण, कण में अंकित है रामकृष्ण विक्रमादित्य सम ।
माता के अगणित सपूत वे जिनके कारण जीवित है हम ॥
वंशज उनके कहलाकर क्या इसको यूँही मिटने देंगे ।
नहीं नहीं, चमकायेंगे फिर से सारे जग में न्यारा.... आज यही युग धर्म हमारा.. ॥ २ ॥
जिस माता के प्रेम स्नेह से पोषित है हम सब के तन ।
करती आज करूण आक्रंदन धिक् हम सबका है यह यौवन ।
वह जीवन भी क्या जीवन है जो माता के काम न आये ।
उठो, मिटा दें दुःख माता के ! होवे जीवन सफल हमारा...आज यही युग धर्म हमारा... ॥ ३ ॥

१८७) माँग रही है माँ बलिदान

माँ ! माँग रही है माँ बलिदान,
माँ ! माँग रही है माँ बलिदान ॥
जागो-जागो सोनो वालो, धन यश गौरव खोने वालो ।
अबलाओं से रोने वालो,
करो-करो प्राप्त यश गौरव गान ॥
कोटि-कोटि हाथों में चमके,
अग्नि चपला सी चम-चक चमके ।
तुम प्रलयंकर गण हो यम के,
करो-करो रक्त गंगा में स्नान ॥
पूजा करने को मत जाओ ।
फूल चढाने भी मत जाओ ।
कहती आज भवानी गाओ,
दो रण में दो जीवन दान ॥
मातृ-भूमि के हृदय दुलारो,
अरि को भैरव बन ललकारो ।
युग की माँग यही है प्यारो,
यही आज जप तप व्रत ध्यान ॥

१८८) राष्ट्र भक्ति के अमर सिपाही

राष्ट्र भक्ति के अमर सिपाही, हमको देश निहार रहा है ।
हमको देश पुकार रहा है ।
अब भी बहुत घना अंधियारा आँधी गरज-गरज कर चलती,
कूल कगारे चाट चाट कर मदमाती है नदी उछलती,
साहस करके आगे आओ, जन जीवन हार रहा है, हमको देश पुकार रहा है । ॥ १ ॥
ढहते पर्वत मिटती झीले, चटटानें अब टूट रही है,
जीवन की हरियाली नीचे विष की लपटे फूट रही है,
महानाश के रंगमंच पर मानव को आधार कहाँ है, हमको देश पुकार रहा है । ॥ २ ॥

कुरूक्षेत्र में खडी हुई है तीर चढायें सब सेनायें,
पाञ्चजन्य भू गूँज उठा है सहमी सहमी हुई दिशाएँ,
बढो भरत-भू के सेनानी गांडीव टंकार रहा है, हमको देश पुकार रहा है । ॥ ३ ॥
जीवन मृत्यु लडे है जब जब विजयी सदा हुआ है जीवन,
चाहे धूल रुधिर से लथ पथ चाहे घावों से जर्जर तन,
अंतिम विजय हमारी होगी, रोम रोम हुँकार रहा है, हमको देश पुकार रहा है । ॥ ४ ॥

१८९) माता ने हमें पुकारा है

माता ने हमें पुकारा है !
जन्म-मरण, क्षण-क्षण जीवन, लौकिक उत्कर्ष, परम साधन,
पुत्रों का एक सहारा है--
उस माँ ने हमें पुकारा है ! माता ने हमें पुकारा है ॥
जिसका गायन सुनते आये, गंगा सागर की लहरों में,
मारूति के शीतल झोकों में, उषा के मुखरित प्रहरों में,
उस ही की आर्त पुकार लिए ! चीखी लोहित की धारा है ।
जननी ने हमें पुकारा है ? माता ने हमें पुकारा है ॥
हमने है आज पुकार सुनी, नाडी में एक हिलोर उठी,
गंगोत्री से रामेश्वर तक, भावों की आँधी घोर उठी,
गूँजा घर-घर जयकारा है ! यह भारतवर्ष हमारा है ! !
हिमगिरी ने आज पुकारा है, माता ने हमें पुकारा है ॥
राघव का शरसंधान लिये, शिव दुर्गा का वरदान लिये,
हम कार्तिकेय की आन लिये, विजयी पुरखों का मान लिये,
युग-युग से गर्व भरे उध्दत अरियों का शीश उतारा है !
फिर माँ ने हमे पुकारा है ! जननी ने हमें पुकारा है ॥
गौरव अतीत के रक्षक हम; हम वर्तमान के प्रहरी है;
भावी का स्वर्ण विहान लिये, धरती के स्वप्न सुनहरे है;
हम केशव की रश्मी प्रखर, हारा जग का अंधियारा है !
प्राची ने हमें पुकारा है, जननी ने हमें पुकारा है ॥

१९०) न हो साथ कोई

न हो साथ कोई, अकेले बढो तुम,
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी ।
सदा जो जगाये बिना ही जगा है,
अंधेरा उसे देखकर ही भगा है ।
वही बीज पनपा पनपना जिसे था,

घुना क्या किसी के उगाये उगा है ।
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम,
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ।
सही राह को छोडकर जो मुडे,
वही देखकर दुसरों को कुढे हैं ।
बिना पंख तौले उडे जो गगन में,
न सम्बन्ध उनके गगन से जुडे है ।
अगर बन सको तो पखेरू बनो तुम,
प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ।
न जो बर्फ की आँधियों से लडे हैं,
कभी पग न उसके शिखर पर पडे हैं ।
जिन्हें लक्ष से कम अधिक प्यार खुद से,
वही जी चुरा कर तरसते खडे हैं ।
अगर जी सको तो जियो झूमकर तुम,
अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

१९१) एक बार करवट तो बदलें

एक बार करवट तो बदलें, सारा जग जयकार करेगा,
एक बार करवट तो बदलें ॥
जड चटटानें करवट लेतीं, नग उपत्यका हिल जाती है,
लहरों की ठण्डी करवट में, प्रलय प्रभीषा घहराती है,
हम चेतन अंगडाई ले लें सब जग हाहाकार करेगा, एक बार करवट तो बदलें... ॥ १ ॥
सुधा कुण्ड दानवी नाभी के, सोखें शोषक बाण चलाकर,
चामुण्डा का भरें कलेवर, रक्तबीज का रक्त पिलाकर,
पौण्ड्र शंख दे फूँक भीम का, कौरव दल चित्कार करेगा, एक बार करवट तो बदलें... ॥ २ ॥
हमें सरल प्रल्हाद समझकर, सतत तर्जना जो देते हैं,
नित्य हमारी मृदु ऋगुता पर हँस-हँस कर जो रस लेते है,
खम्भे से फट पडे नृसिंह से, महादैत्य चीत्कार करेगा, एक बार करवट तो बदलें... ॥ ३ ॥
हम हिंसा के नही पुजारी, जन-जन में यह प्रण भी भर दें,
'भय बिन होय न प्रीति' मंत्र को, किन्तु विश्व में मुखरित कर दें,
विष्णुगुप्त की शिखा खोल दें, कौन छली प्रतिकार करेगा, एक बार करवट तो बदलें... ॥ ४ ॥

१९२) प्रलय की कर गर्जना

प्रलय की कर गर्जना हिमवान ।
चूर कर दे शत्रू का अभिमान.... ॥ १ ॥
शत्रू का आघात सह ले ढाल बनकर,
माँ मिटा दे आज रिपु को काल बनकर,
जाग प्रहरी फिर विदेशी जाल बुनकर,
कर रहे आघात तेरी हरित भू पर, धर्म रक्षण हेतू बन भगवान..... ॥ २ ॥
दे उठा तू शम्भू शिव को आज फिर से,
दे निकलने प्रबल विष की धार शिर से,
चक्षु अपना खोल दे वह शत्रू जिनसे,
भस्म होवे, धरा काँपे, गगन भय से, लोकहित में फिर करे विषपान.... ॥ ३ ॥
दे भवानी शक्ति अक्षय, ओ विजयवर,
हो सबल हम, ध्येय निष्ठित, ध्येय लेकर,
केसरी बाना सजाये ध्वजा लेकर,
कर रहे रण-गान कर में खडग् धर कर, भरत-भू पर हुआ स्वर्ण-विहान... ॥ ४ ॥

१९३) सतंत्रता को सार्थक करने

सतंत्रता को सार्थक करने, शक्ति का आधार चाहिये । भक्ति का आधार चाहिये ॥
स्वर्गंगा भी अरे भगीरथ, यत्नों से भूतल पर आती,
किन्तु शीश पर धारण करने, शिवशंकर की शक्ति चाहिये... ॥ १ ॥
अमृत को भी लज्जित करती, समर्थ होकर प्राकृत वाणी,
उन्मेषित करने सौरभ को, तुलसी की रे भक्ति चाहिये... ॥ २ ॥
शीश कटाकर देह लडी थी, कोंडाणा पर गाज गिरी थी,
कण-कण में चेतनता भरने, छत्रपति की स्फूर्ति चाहिये... ॥३ ॥
हिमगिरी शिखरों के कन्दर में, घुसे पडे जो नगभूमि में,
उन सर्पों का मर्दन करने, कालियान्य की नीति चाहिये... ॥ ४ ॥

१९४) प्रगति-पथ पर रे तरूण

प्रगति-पथ पर रे तरूण ! तेरा सफल अभियान होगा !
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा ।
खोद कटुता कूप उसमें भर रहे संघर्ष ज्वाला ।
मनुजता को निगलता है विषमता को व्याल काला ॥
आज प्राची के क्षितीज पर दीखता है लाल तारा ।
दहकती चिनगारियों से जल रहा है विश्व सारा,
भव्य भारत भूमि पर क्या प्रलय की बिजली गिरेगी ?

दिव्य सात्विक वृत्तियों पर स्वार्थ की छाया फिरेगी ?
सृजन का संदेश देकर, प्रलय का आव्हान होगा....
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा ।... ॥ १ ॥
मातृ मंदिर का पुजारी जाग ! स्वर्णिम प्राप्त आया,
अरूण रवि निज प्रखरता जागरण सन्देश लाया ।
बढ तपस्वी कंटकों में खिल उठेंगे सुमन सुन्दर ।
दूर मंजिल, हो रहा क्यों त्रस्त आकुल छाँह लखकर,
बाँट तेरी जोहते हैं, विश्व के ये नयन सारे,
त्राण पाना चाहते है, साधना के ही सहारे ॥
देखने आलोक स्वर्गिक विकल कवि का गान होगा ।
भावना जब साधना होगी, तभी कल्याण होगा... ॥ २ ॥

प्रासंगिक

१९५) शपथ लेना तो सरल है

शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना तो कठिन है ।
साधना का पथ कठिन है, साधना का पथ कठिन है ।
शलभ बन जलना सरल है, प्रेम की जलती शिखा पर ।
स्वयं को तिल-तिल जलाकर, दीप बनना ही कठिन है..... ॥ १ ॥
है अचेतन जो युगों से, लहर के अनुकूल बहते !
साथ बहना है सरल, प्रतिकूल बहना ही कठिन है..... ॥ २ ॥
ठोकरें खा कर नियति की, युगों से जी रहा मानव ।
है सरल आँसू बहाना, मुस्कराना ही कठिन है.... ॥ ३ ॥
तप-तपस्या के सहारे, इन्द्र बनना तो सरल है ।
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर, मद भुलाना ही कठिन है... ॥ ४ ॥

१९६) अभिनन्दन ! जन-मन रञ्जन

अभिनन्दन ! जन-मन रंजन ! वंदन ! तरूण-हृदय-धन, धन ! वंदन !
ओ राष्ट्र-पुरूष ऋतुराज सरिस, तब स्वागत में खिल उठे सुमन !
जब श्वेत शैत्य स शिथिल सुजन-मन कम्पित थे, धुंधले लोचन;
जब निष्क्रीयता नैराश्य निशा, नव-मुक्ति निगलने को तन्मन,
तब अरूण-ध्वजा लेकर कर में, तब तेज उदित कर उठा गगन ! अभिनन्दन ! ! !
जब विच्छुंखलता फण फैला, विष-वमन कर रही है प्रतिक्षण--
जीवन में तीक्ष्ण हलाहल भर, जब ऐक्य सुधा-कर हुआ ग्रहण,
तब मानवता प्रतिरक्षण-हित तुमने खेला कालिया-मर्दन ! ! अभिनन्दन ! ! !

जब आत्म मोह के पर्दे ने, निर्माण किया जन-भ्रम भीषण,
जब स्वार्थ-लालसा-लिप्सा से, उत्पन्न हुआ कटु संघर्षण,
तब राष्ट्र-दृष्टी दे संघ-मयी करते जाते तुम जन जीवन ! अभिनन्दन ! ! !

१९७) आज कैसी शुभ घडी है

आज कैसी शुभ घडी है !
शौर्यमय आनन्द छाया, त्याग का है रंग लाया,
प्रिय सुखद अनुराग छाया, नव उषा की लालिमा में-किरण भी इसकी पडी है.... ॥ १ ॥
अग्निमय है शांत धारा, चिन्ह शुभ प्रिय ध्वज हमारा,
गा रहा इतिहास सारा, देख उठ आशा जगाती-द्वार पर तेरे खडी है.... ॥ २ ॥
स्नेह संचित प्राण कर ले, स्नेह से परित्राण कर ले,
जाति का सम्मान कर ले, जाति से ही मधुर जीवन, हिन्दु-जीवन की लडी है.... ॥ ३ ॥
छोड बीती सोच बाकी, कालिमा तज दे अमा की,
भूल तू गति भीरूता की ज्योति चमके पूर्णिमा की, क्या तुझे बीती पडी है.... ॥ ४ ॥

१९८) आज पूजा की घडी है

आज पूजा की घडी है ॥
साधना के शूलमय पथ पर सदा सबको बढाता,
ध्येय की धुन धमनियों में फूँकता युग-क्रांती लाता,
हर फडक में राष्ट्र के उत्थान की आशा भरी है । आज पूजा की घडी है.. ॥ १ ॥
सूर्य की पहिली छटा की अग्नि का है वास इसमें,
पूर्वजों की यह पताका, विजय का विश्वास इसमें,
कोटि हृदयों के मिलन की, भावना इसमें जडी है । आज पूजा की घडी है... ॥ २ ॥
राष्ट्र का निर्माण, पोषण, वृध्दी है इसकी कहानी,
आन पर बलिदान की है प्रेरणामय यह निशानी,
राष्ट्र-पुरूषों की चिरंतन कल्पनाओं की कडी है । आज पूजा की घडी है... ॥ ३ ॥
इस ध्वजा से श्रेष्ठ जीवन का अमर संदेश पायें,
और लाखों प्राण इंगित मात्र पर इसके चढायें,
फिर सफलता हाथ जोडे सामने माना खडी है । आज पूजा की घडी है.... ॥ ४ ॥

१९९) आज मनाएँ रक्षाबन्धन

आज मनाएँ रक्षा-बन्धन ॥
अतीत से नव-स्फूर्ति लेकर, वर्तमान में दृढ उद्यम कर,
भविष्य में दृढ निष्ठा रखकर, कर्मशील हम रहे निरन्तर... ॥ १ ॥
बलिदानों की परम्परा है, स्वराज्य है यह पावन जिनसे,
वंदन उनको कृतज्ञता से; ध्येय-भाव का करे जागरण... ॥ २ ॥
स्वार्थ-द्वेश को आज त्याग कर, अहं-भाव का पाश काटकर,
अपना सब व्यक्तित्व भुलाकर, विराट का हम करते दर्शन... ॥ ३ ॥
अरूण-केतु को साक्षी रख कर, निश्चय वाणी आज गरजकर,
शुभ्र-कृति का यह मंगल अवसर, निष्ठा मन में रहे चिरंतन... ॥ ४ ॥

२००) राष्ट्र की ध्वजा के आधार स्तम्भ रे !

ओ राष्ट्र की ध्वजा के आधार स्तम्भ रे !
स्वातंत्र्य अर्चना के ओ मापदण्ड रे !
जब हिन्दुस्थान राष्ट्र गगनांचल, था यवन पदों से धूमिल,
कृत-कृत्य हुआ तुझसे, यह भरत-खण्ड रे ।
निज राष्ट्र-दास्य दुःख से थे, तुम दीप-शिखा सम जलते,
ओ यवन शलभ-दल के दीपक प्रचण्ड रे !
तब मातृभूमि के अरिगण, पाते थे रक्तिम-तर्पण,
अफजल प्रभूति खलों के, ओ प्राण दण्ड रे !
तब पुण्य नाम जब लेते, तब रोमाञ्चित हो जाते,
निर्जीव नर-हृदय के पीयूष-कुण्ड रे ।

२०१) ओ विजय के पर्व !

ओ विजय के पर्व ! पौरूष का प्रखर सूरज उगा दे ।
पार्थ के गाण्डिवधारी हाथ का कम्पन छुडा दे ॥
ओ विजय के पर्व पौरूष...॥
.....में स्वातंत्र्य के क्यों हिचकिचाहट आ समाई,
क्यों ...नवल तारूण्य में निर्वीयता देती दिखाई,
शत्रूओं की शक्ति क्यों हम हीन होकर आंकते है ?
आँख के आगे भला क्यों भूत भय के नाचते है ?
आज रग-रग में लहू का खौलता उफान ला दे ।
ओ विजय के पर्व पौरूष...॥
पीठ पर अरिवृन्द चढतें आ रहे है आज हँसते ।
जो ....की अहिंसा ! जा तुझे अंतिम नमस्ते ।

गिरि अरावली की शिलाओं अब हिमालय पर चलो तुम,
आज ...वक्ष पर चित्तोड के जोहर जलो तुम ।
चीन का ...पर तू टाप चेतक की अडा दे ।
ओ विजय के पर्व पौरूष...॥

२०२) चिर विजय की कामना ही

चिर विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है ॥
जागते यह भाव ले जब सुप्त मानव, भागते है हारकर तब दुष्ट दानव,
विजय इच्छा चिर सनातन नित्य अभिनव, आज की शत व्याधियों का श्रेष्ठतम उपचार है ॥... ॥ १ ॥
शान्त चिर गम्भीर और जयिष्णु राघव, क्रांतीकारी सर्वगुण सम्पन्न माधव,
कर सके जिस तत्व से अरि का पराभव, वह विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है ॥... ॥ २ ॥
दिया हमने छोड जब-जब चिर-विजय-व्रत, हुए तब पददलित,पीडित ओर श्रीहत,
छोड सम्भ्रम उसी पथ पर फिर बढे रथ, जहाँ बढते जीत होती और रूकती हार है ॥.... ॥ ३ ॥
हो यही दृढ भाव अपना श्रेष्ठतम धन, आत्मगरिमायुक्त होवे राष्ट्र जीवन,
संगठन की शक्ति का हो संघ दर्पण, निहित जिसमें राष्ट्र-पोषक भावना साकार है ॥... ॥ ४ ॥

२०३) पावन हिन्दु साम्राज्य-दिवस

पावन हिन्दु साम्राज्य-दिवस !
स्वातंत्र्य साध के ओ प्रतीक, ओ विजय-गान के भाग्य दिवस,
खण्डित कर यवनों का शासन, खण्डित कर पापी सिंहासन,
भारत को करने एक-सूत्र, गो-ब्राह्मण का करने पालन, गरजा शिव सरजा का साहस.... ॥ १ ॥
शिवराज नेत्रपति के पीछे, भारत की तरूणाई जागी,
इस अरूण-ध्वजा के नीचे आ, वीरों की अरूणाई जागी, जागा था हिन्दु तज ..वलस... ॥ २ ॥
शत्रू के सर कट मुकुट छेद, दुर्दम्य भवानी दमक उठी,
रिपुदमन पराक्रम दिखाकर, स्वातंत्र्य-मूर्ति थी चमक उठी, मस्तक नत हो जाता बरबस.... ॥ ३ ॥
उसका कर पावन नाम स्मरण, पुलकित होता तन का कण-कण,
भुजदण्ड फडक उठते क्षण-क्षण, कर याद शिवा का अद्‌भुत रण, बिजली सी भरती है नस-नस.... ॥ ४ ॥

२०४) विजय का यह पर्व आया

विजय का यह पर्व आया, विजय का वरदान बनकर ॥
शान्त जन-मन-सिन्धु में, उत्साह की लहरें उठाता,
युगों-युगों की सुप्त स्मृतियाँ, क्षुब्ध मानव में जागता,
पुण्य मातृस्तवन गूँजा फिर विजय का गान बनकर ॥ ॥ १ ॥
चतुर्दिक निज प्रखरता से, क्षात्र-बल का तेज जागा,
घमनियों में तीव्रता से, उष्ण शोणित वेग जागा,

देश का तारूण्य जागा, शक्ति का सम्मान बन कर.... ॥ २ ॥
पाप-प्रेरित पतित पशु बल, हो उठा अस्थिर विकम्पित,
भीत मानव व्यक्त भय हो, मातृपद में हुआ विनमित,
देव-भू की शक्ति जागी, चण्डिका सप्राण बन कर... ॥ ३ ॥
विश्व ने निज नेत्र खोले, और पाया एक साधक,
मोदमय मंगल महापथ, में रहा कोई न बाधक,
शक्ति अभिमन्त्रित हुई, फिर जगद्गुरू का मान बनकर... ॥ ४ ॥
विजय का वरदान बनकर ॥

२०५) संगठन सूत्र में मचल-मचल

संगठन सूत्र में मचल-मचल, हम आज पुनः बंधते जाते ।
माँ के खंडित-मंडित मन्दिर का, हम शिलान्यास करते जाते ॥
हम हिन्दुराष्ट्र के है प्रतीक, हिन्दुपन का अभिमान लिए,
उर में स्वदेश सम्मान लिए, निर्भय निरीह बलिदान लिए,
विस्तृत स्वराष्ट्र-बलवेदी पर, हम उछल-उछल चढते जाते..... ॥ १ ॥
उत्तर में हिमगिरी से लेकर, दक्षिण में रामेश्वर महान,
प्राची में ब्रह्मपुत्र-नद से, पश्चिम में सिन्धु का वितान,
ऐसे विस्तृत सुविशाल देश के, राष्ट्रीय है हम इस नाते..... ॥ २ ॥
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविण, उत्कल और, मध्यप्रदेश,
ब्रह्मा, बिहार, आसाम, बङग, कौशल, कलिंग, उत्तर-प्रदेश,
सब एक सूत्र में बंधे आज, संगठन गान मिलकर गाते.... ॥ ३ ॥
हममें अखंड सांस्कृतिक ऐक्य, हममें सदैव इतिहास साम्य,
धार्मिक विचार-धारा पुनीत, आदर्श मूल सिध्दान्त साम्य,
संगठन-भवन निर्माण हेतु, आधार-स्तम्भ मिलते जाते.... ॥ ४ ॥

२०६) संघ शक्ति दिव्य रूप

संघ शक्ति दिव्य रूप विश्व व्यापिनी,
शस्त्र-धारी काली सम असुर-मर्दिनी,
जीवन की संजीवनी प्रेम-रूपिणी,
भागीरथी मंगलमय पापनाशिनी
बोलो जय ! बोलो जय ! भय विमोचिनी,
राष्ट्र-मुक्ति दायक हो सकल स्वामिनी,
रामचन्द्र धवल यशोगान गायिनी,
शिवजी पर प्रीत करें धैर्य दायिनी,
दुर्बल की शक्ति यही तेज-धारिणी,
सबलों की ध्येयपूत रिपु-विदारिणी,

सचराचर प्राणिमात्र जीव–रक्षिणी,
पतित हिन्दु–राष्ट्र की यह धन्य तारिणी,
हिन्दु–हिन्दु एक हो घोष–कारिणी,
मधुर–मधुर प्रेमामृत सतत वर्षिणी,
बोलो जय ! बोलो जय ! सिंह वाहिनी,
अमर हिन्दु संस्कृति हो विश्वमोहिनी

२०७) दुर्दम्य होंगी जब आशा आकांक्षा

दुर्दम्य होंगी जब आशा आकांक्षा, संग्राम संगीत गाये सभी ।
देशार्थ होवेंगें त्यागी विरागी, संक्रान्ति सच्ची मनायें सभी ।।
हुआ भ्रष्ट माता का मन्दिर ये, वह छिन्न–विछिन्न सूना पडा रे,
नीचे ध्वजा हाय जो गिरपडी रे, मिलकर से उठा लें उसे हम सभी,
फहरेगी आकाश में शान से जब, संक्रान्ति सच्ची मनायें सभी ।।.. ।। १ ।।
सुवर्णादि के तोड चट्टान सारे, उन्हें क्यों न कोई भले ही जला दे,
हुई राख भारत की सुख संपदा की, रही राख बाकी बचा है न कुछ भी,
जब राख हो दूर अंगार भभके, संक्रान्ति सच्ची मनायें सभी ।।... ।। २ ।।
आकाश में जब चढेगा रवि, स्वयं नष्ट होगी निशा दानवी,
उठो ! भाई जागो ! कटिबध्द होकर, संदेश घर–घर सुनायें अभी,
जब हिन्दु सारे बने क्षात्रधर्मी, संक्रान्ति सच्ची मनायें सभी ।।... ।। ३ ।।

२०८) राष्ट्र की जय चेतना

राष्ट्र की जय चेतना आई तुम्हारा रूप लेकर,
पुण्य पावन सन्तवाणी आ गई तब मूर्ति बनकर,
सिन्धु से हिम शैख तक आक्रांत थी यह हिन्दु भूमि,
रक्त रंजित हो गई थी पुण्य पावन देव भूमि,
मिट गये थे राज दीपक और गहरा था अंधेरा,
व्यथित माता ने तभी तो, भगवती को था पुकारा,
ध्वंस के अंधेर में तुम आ गये थे भोर बनकर, पुण्य पावन सन्तवाणी... ।। १ ।।
यवन चरणों से व्यथित जब जन विजन और देवमन्दिर,
आत्म विस्मृति के भँवर में फँस गये थे श्रेष्ठ नरवर,
मत्त यवनों को हराया खड़ग की तेजस्विता ने,
दासता की वृत्ती को भी बदल डाला था तुम्ही ने,
रघुवंश का ही शौर्य मानों आ गया था रूप लेकर, पुण्य पावन सन्तवाणी.... ।। २ ।।

हिन्दु जीवन को मिटाना यवन सारा चाहता था,
किन्तु हमको तो तुम्ही नें राजसिंहासन दिया था,
ले तुम्हारा रूप लेकर देव के वरदान आये,
सब पराजय की सलिनता शुध्द करके विजय लाये,
विजय मानो आ गया था ले तुम्हारा रूप लेकर, पुण्य पावन सन्तवाणी... ॥ ३ ॥

२०९) विजिगीषा को गन्ध लेकर

विजिगीषा को गन्ध लेकर, चेतना विकसित हुई है ।
शक्ति की आराधना की भावना जगने लगी है ॥
पर्वतों ओ घाटियों में कुच्छ जगी नूतन ऋचायें,
महमहाकर फिर उठी है देश की पावन कथायें,
दे रही आव्हान कितनी पूर्व-पुरूषों की व्यथायें,
विजय का जय गान लेकर आ रही केशर हवायें,
कुच्छ नये सामर्थ्य का फिर भाव प्रकटा हर डगर में,
देखकर व्यापक उजाला सुप्त कलियाँ खिल रही है.... ॥ १ ॥
आज पौरूष के नये स्वर गुनगुनाते जा रहे है,
आज के स्वर हर हृदय को स्पर्श करते जा रहे हैं,
हर नवीन उल्लास में हम स्वर्ण-जीवन पा रहे है,
आज के हर शब्द जीवन छन्द रचते जा रहे है,
ज्योति गरिमा जग रही है हर मनुज के श्रान्त मन में,
हिन्दुता फिर विजयता की अर्चना करने लगी है... ॥ २ ॥
रामशक्ति जागृता अब वानरी अक्षोहणी,
ले चली है जय पताका कृष्ण की नारायणी,
संगठित फिर देवशक्ति असुर वंश विनाशिनी,
शक्ति की साकार यमुना, धर्म की मंदाकिनी,
ज्ञान रवि का तेज बिखरा हर्ष छाया जन हृदय में,
राष्ट्र शंभू विश्व-पूजित अस्मिता सजने लगी है... ॥ ३ ॥

२१०) बन्धनकारी पाश नही यह

बन्धनकारी पाश नही यह, अरे मुक्ति का है बंधन यह ॥
इससे गूँथे कोटि सुमन है, जोडे अगणित मानव मन है,
इसका एक मन्त्र पावन है, इनमें स्वर भी मन-भावन है,
रक्षा का लघु सूत्र, बन्धुता का है मूक । भाव का है बन्धन यह ॥
अन्तर में अनुराग बढाता, प्राणों में प्रेरणा जगाता,
आत्मयज्ञ का ज्वलित अग्निकण, राष्ट्र धर्म की सेवा का प्रण,

है स्वराज्य के सीमा-रक्षण का । संवर्धन का है साधन यह ॥
ब्रह्म ज्ञान का यह तेज प्रस्त्रर है, क्षात्र शक्ति की जय का वर है,
शास्त्र-शास्त्र का इसमें ग्रन्थन, प्रबल हृदय का सागर मन्थन,
कोटि भुजाओं ने धारण कर, किया जननी का आराधन यह ॥
इसे पुजारी ने पहना है, व्रती सैनिकों का गहना है,
अभय भाव से इसमें बंधकर, करें ध्वनित जननी का जय स्वर,
विजय लिखी जिनके ललाट में, है उन नर वीरों का धन यह ॥

२११) स्वागत है शिवराज ! तुम्हारा

स्वागत है शिवराज ! तुम्हारा !
हिन्दु राष्ट्र के प्रखर शौर्य रवि, कोटि शीर्ष से तुम हो वन्दित ।
कोटि बाहुबल से संपूजित, कोटि कण्ठ रव से आशीधृत,
युग-युग है तुम से उद्भासित, शस्त्र-शास्त्र का यह बल सारा.... ॥ १ ॥
भूत, भव्य, भवितव्य विभव के, काल जयी हो तुम रथवाहक,
भारत की आत्मा के भास्कर, साम स्वरों के तुम हो गायक,
छिन्न भिन्न तेरी किरणों से, अंधकार को हो यह कारा... ॥ २ ॥
राष्ट्र शक्ति के उन्नायक हे ! मुक्ति-मुक्ति के संघायक है,
धवल कीर्ति के अतुल तेज के, हिन्दु हृदय के राजेश्वर हे,
स्त्रवती तेरे अमित शक्ति को, अविरल शत-शत निर्मल धारा... ॥ ३ ॥
बरसाये आशिष देवगण, विजय श्री का करो वरण तुम,
प्रेरक तत्व है तपः साधना, हिन्दु राष्ट्र को दे संजीवन,
सदा तुम्हारे श्री चरणों में, अर्पित है सर्वस्व हमारा... ॥ ४ ॥

२१२) बन्धु ! रूक मत जाना

बन्धु ! रूक मत जाना मग में ! लालच लखकर मत फँस जाना,
अपना मार्ग बदल मत जाना, एक माल में मिलते जाना,
दुःख है अलग-अलग में, बन्धु रूक मत जाना मग में
जाल बिछाते पन्थ घनेरे, जिन पर स्वारथ होते पूरे,
ध्येय छोड कर किन्तु अधूरे, हँसी करा मत जग में,
बन्धु रूक मत जाना मग में...
कुछ वर्षों तक कष्ठ सहन कर, मिलजुल कर सामर्थ्य-सृजन कर-
भारत को करना शिव सुन्दर-, भर जीवन रग रग में,
बन्धु रूक मत जाना मग में...
ऐसा पथ फिर ऐसे नेता, ऐसे साथी कहीं मिले क्या ?
महा भाग रे ! बढ चल ! लेकर,
अंगद सा बल पग में, बन्धु रूक मत जाना मग में...

संचलन–गान

२१३) ओ नौजवान ! देश के उठो

ओ नौजवान ! देश के उठो, उठो, उठो !
ओ सुत महान् देश के उठो, उठो, उठा !!!
प्रभात की सुवर्ण रश्मियाँ जगा रहीं ।
विहंग टोलियाँ अरूण–विहाग गा रहीं ॥
सिमिट–सिमिट क्षितीज के पार जा रही निशा ।
उमंग से भरी जवानियाँ जग रहीं ॥
नवीन चेतना नवीन जागरण लिये––
ओ स्वाभिमान देश के उठो, उठो, उठो ! !. ॥ १ ॥
दे लोरियाँ थी गोद में सुला रही तुम्हें ।
हो त्रस्त आज मातु है बुला रही तुम्हें ॥
क्यों मोह में पडे हे पुत्र नींद ले रहें ?
ये घातिनी है राह से भुला रही तुम्हें ॥
सुनो मयुर डाल पर है बैठ गा रहे––
ओ सुप्त प्राण देश के उठो, उठो, उठो ! ! ... ॥ २ ॥
काँप रहा है आसमान काँप रही है धरा ।
है द्वेष–अग्नि में ही मानवत्व जल मरा,
कराह, आह, वेदना–भरी पुकार से ।
चतुर्दिगन्त विश्व–व्योम आज है भरा ॥
समस्त शक्तियाँ सुसंगठित किये हुए,
ओ शक्तिवान देश के उठो, उठो, उठो ! ! ! ... ॥ ३ ॥
उठो स्वतंत्र देश की लिये मशाल तुम ।
रखो समुच्च गर्व से हिमाद्री भाल तुम ॥
बनो स्वदेश–शत्रू के समक्ष काल तुम ।
रचो सुदृढ, सुसंगठित, अजय दिवाल तुम ॥
स्वराष्ट्र भाग्य–सूत्र आज हाथ में लिए,
ओ भाग्यवान देश के उठो, उठो, उठो ! ! .. ॥ ४ ॥
जगा रही तुम्हें अतीत की काहानियाँ ।
स्वतन्त्र देश–दीप पर मिटी निशानियाँ ॥
पंजाब, काश्मिर, बंग–भू जगा रही ।
जगा रही सुहाग से लुटी जवानियाँ ॥
स्वदेश हित शिवा प्रताप सा विराग ले,
व्रती महान् देश के उठो, उठो, उठो ! !... ॥ ५॥

२१४) पंथ है प्रशस्त, शूर साहसी

पंथ है प्रशस्त, शूर साहसी बढे चलो !
निशा अशेष हो रही, प्रयात मुस्करा रहा ।
हिमाद्री तुङग-श्रुङग से, प्रमाण गान आ रहा
वर-विभूति विश्व को बुला रही, बढे चलो..... ॥ १ ॥
मार्ग है वही प्रवीर, है वही वसुन्धरा ।
प्राण मातृभूमि हेतु, शौर्य है वहीं भरा ।
माँ वहीं बुला रही, बढे चलो बढे चलो ।
पंथ है प्रशस्त, शूर साहसी बढे चलो.... ॥ २ ॥
अंतरिक्ष काँपता, देख वीर वेश यह ।
आज धन्य हो रहा, पा तुम्हें स्वदेश यह ।
सत्य-धर्म की विजय सदैव है बढे चलो ।
पंथ है प्रशस्त शूर साहसी बढे चलो.... ॥ ३ ॥

२१५) नवीन पर्व के लिये,

नवीन पर्व के लिये, नवीन प्राण चाहिये, नवीन प्राण चाहिये,
स्वतंत्र देश हो गया, प्रभुत्वमय दिशामही,
निशा कराल टल चली, स्वतंत्र माँ विभामयी,
मुक्त मातृभूमि को नवीन मान चाहिये, नवीन प्राण चाहिये.... ॥ १ ॥
चढ रहा निकेत है की स्वर्ग छू गया सरल,
दिशा-दिशा पुकारती की, साधना करो सफल,
मुक्त गीत हो रहा नवीन राग चाहिये, नवीन प्राण चाहिये... ॥ २ ॥
युवक कमर कसों की कष्ट कंटकों की राह है,
प्राण दान का समय, उमंग है उछाह है,
पगों में आधियाँ भरे, प्रयाण गान चाहिये, नवीन प्राण चाहिये.... ॥ ३ ॥

२१६) हिन्दुभूमि ये वन्दनीय है

हिन्दुभूमि ये वन्दनीय है ।
समस्त विश्व में समृध्दी ये बनी रहे ॥
मातृ-भूमि ये, पितृ भूमि ये । अन्न-वस्त्र से हमें शांति-सौख्य दे ॥
पंजरस्थ था, केशरी महा । तोड-तोड श्रुंखला मुक्त हो चला ॥
वीर-गर्जना राष्ट्र है ठना । हिन्दुराष्ट्र हिन्दु का ध्येय देखना ॥
संघ कल्पना, धर्म भावना । हिन्दुराष्ट्र की करे विश्व वंदना ॥

२१७) हिमाद्री तुङग-श्रुङग से

हिमाद्री तुङग-श्रुङग से, प्रबुध्द शुध्द भारती-
स्वयं प्रभा-समुज्ज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती,
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो ।
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बडे चलो, बढे चलो ॥
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य-दाह सी,
सपूत मातृभूमि के, रूको न शूर-साहसी,
अराति सैन्य-सिन्धु में, सुवाडवाग्नि से जलो ।
प्रवीर हो जयी बनो, बढे चलो, बढे चलो ॥

२१८) ज्योति जला निज प्राण की

ज्योति जला निज प्राण की, बाती गढ बलिदान की,
आओ हम सब चलें उतारें, माँ की पावन आरती, चलें उतारें आरती ॥
यह वसुन्धरा माँ जिसकी गोद में हमने जन्म लिया,
खाकर जिसका अन्न-अमृत सम निर्मल शीतल नीर पिया,
श्वासें भरी समीर में, जिसका रक्त शरीर में,
आज उसी की व्याकुल होकर ममता हमें पुकारती.... ॥ १ ॥
जिसका मणिमय मुकुट सजाती स्वर्णमयी कंचन जंघा,
जिसके वक्षस्थल से बहती पावनतम यमुना-गंगा,
संध्या रचे महावरी, गाये गीत विभावरी,
अरूण करों से उषा सलोनी जिसकी माँग सवारती.... ॥ २ ॥
जिस धरती के अभिनन्दन को कोटि-कोटि जन साथ बढे,
जिसके चरणों के वंदन को कोटि-कोटि तन-माथ चढे,
लजा न जिसके क्षीर को, तृण सा तजा शरीर को,
अमर शहीदों की यशगाथा जिसका स्नेह दुलारती.... ॥ ३ ॥
देखो इस धरा जननी पर संकट के घन छाये है,
घनीभूत होकर सीमाओं पर फिर से घिर आये है,
शपथ तुम्हें अनुराग की, लुटते हुये सुहाग की,
पल भर की देरी न तनिक हो माता खडी निहारती.... ॥ ४॥

२१९) ज्योति ये जले

सूत्र संगठन संभाल ज्योति ये जले ।
कोटि-कोटि दीप बाल ज्योति ये जले ॥
राष्ट्र अन्धकार के विनाश के लिये,
चिर अतीत के धवल प्रकाश के लिये,

बुध्दी के, विवेक के, विकास के लिये,
त्याग की लिये, मशाल ज्योति ये जले,
कोटि-कोटि दीप बाल ज्योति ये जले ॥ ॥ १ ॥
राष्ट्र की अखण्ड साधना अमर बने,
प्राण-प्राण की समर्चना अजर बने,
राष्ट्र की नवीन कल्पना सँवारने,
योजनानुसार पुण्य सर्जना घने,
ले विमुक्ति गर्व आज ज्योति ये जले... ॥ २ ॥
कोटि-कोटि कंठ की पुकार एक हो,
कोटि-कोटि बुध्दी का विचार एक हो,
कोटि-कोटि प्राण का श्रृंगार एक हो,
एक ध्येय और जीत हार एक हो,
राष्ट्र को बना निहाल ज्योति यह जले ।
कोटि-कोटि दीप बाल ज्योति ये जले ॥... ॥ ३ ॥
एक बार दुग्ध से धरा नहा उठे,
एक बार फिर बहार लहालहा उठे,
यश सुगन्धि से स्वदेश से महामहा उठे,
जगमगा विशाल भाल ज्योति ये जले,
तोड-तोड अंधजाल ज्योति ये जले ।
कोटि-कोटि दीप बाल ज्योति ये जले ॥... ॥ ४ ॥

२२०) बढे चलो, बढे चलो,

न हाथ एक शस्त्र हो, न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो, हटो नही डटो वहीं बढे चलो, बढे चलो... ॥ १ ॥
रहे समक्ष हिमशिखर, तुम्हारा पग उठे निखर,
भले ही जाय तन बिखर, रूको नही, झुको नही बढे चलो, बढे चलो... ॥ २ ॥
घटा घिरी अटूट हो, अधर में कालकूट हो,
वहीं अमृत का घूँट हो, जिये चलो, मरे चलो, बढे चलो, बढे चलो... ॥ ३ ॥
गगन उगलता आग हो, छिडा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो, अडो वहीं, झुको नहीं, बढे चलो, बढे चलो... ॥ ४ ॥
चलो नयी मिसाल हो, चलो यहीं मशाल हो,
बढो नया कमाल हो, रूको नही, झुको नही, बढे चलो, बढे चलो... ॥ ५ ॥

२२१) पुकारता तुम्हें वतन

पुकारता तुम्हें वतन, बाँध शीश से कफन,
उठो जवान देश के, उठो गुमान देश के,
खींच लो कृपाण, सुप्त म्यान में है जो पडी,
आज आ गई है तेरे इम्तहान की घडी,
बढो प्रलय की आग बन, आँधियों का राग बन,
झनझना उठें जो आज वीरता की हथकडी,
देश के तुम्हीं रतन, ले के जीत की लगन,
उठो तुफान देश के, उठो जवान देश के,
उठो गुमान देश के, गरज रहे मेघ आज,
फिर से आसमान पर, बरस रहे है अग्निखण्ड, धर्म के जहान पर,
आज गोलियों दुनालियों की मार हो रही,
देख हिन्दु-शूर वीर तेरे ही निशान पर,
उठो ले क्रोध की तपन, उठो नवल विहान बन,
आसमान देश के, उठो जवान देश के, उठो गुमान देश के
आ न पाये आँच ऐ जवान तेरी शान पर,
बिजलियाँ न गिर पडें, वीरता की आन पर,
आज भार तेरे बाजुओं पे देश का पडा,
इसलिए जवान उठ, उठ के प्राण-दान कर,
उठो स्वदेश के पथिक, उठो श्रमिक, उठो धनिक,
उठो किसान देश के, उठो गुमान देश के

२२२) मातृभूमि गान से गूँजता रहे गगन

मातृभूमि गान से गूँजता रहे गगन ।
स्नेह-नीर से सदा, फूलते रहे सुमन ।
जन्म सिध्द भावना, स्वदेश का विचार हो,
रोम-रोम में रमा, स्वधर्म संस्कार हो,
आरती उतारते प्राण दीप हो मगन....स्नेह नीर से सदा, फूलते रहे सुमन... ॥ १ ॥
हार के सुसूत्र में मोतियों की पंक्तियाँ,
ग्राम नगर प्रांत से, संग्रहित शक्तियाँ,
लक्ष-लक्ष रूप से राष्ट्र हो विराट तन, स्नेह नीर से सदा, फूलते रहे सुमन... ॥ २ ॥
ऐक्य शक्ति देश की, प्रगति में समर्थ हो,
धर्म आसरा लिये, मोक्ष काम अर्थ हो,
पुण्य भूमि आज फिर ज्ञान का बने सदन, स्नेह नीर से सदा, फूलते रहे सुमन... ॥ ३ ॥

२२३) अनेकता में एकता

अनेकता में एकता, हिन्दु की विशेषता ।
एक राग के है गीत, मौत एक राह के ।
एक बाग के है फूल, फूल एक राग के ।
देखती है यह जमीन, आसमान देखता आसमान देखता.... ॥ १ ॥
एक देश के है अंग, रंग भिन्न भिन्न है ।
एक जननी भारत के, कोटि सुत अभिन्न है ।
कोटि जीव बालकों में, ब्रह्म एक खेलता, ब्रह्म एक खेलता... ॥ २ ॥
कर्म हैं बटे हुये पर, एक मूल मर्म है,
राष्ट्र भक्ति ही हमारा, एक मात्र धर्म है,
कण्ठ-कण्ठ देश का एक स्वर विखेरता, एक स्वर विखेरता.... ॥ ३ ॥
एक लक्ष एक प्राण, प्रण से हम जुटे हुए,
एक भारती की अर्चना में हम लगे हुए ।
कोटि-कोटि साधनों का एक राष्ट्र देवता एक राष्ट्र देवता... ॥ ४ ॥
अनेकता में एकता....

२२४) जल रही युगों से जो

जल रही युगों से जो, शहीद की समाधी पर,
न झुक सकी, न मिट सकी, ये देश की मशाल है ।
क्रूर अन्धकार था, वज्र का प्रहार था, रूद्र के विनाश में, घोर अट्टहास में,
ह्रास में, विकास में कृध्द मृत्यु पाश में, खिल रही जो राह पर; कंटकों की छाँह पर,
डर सकी, न कंप सकी ये दिव्य दीप ज्वाल है, सो रहा शहीद है, ये अनन्त नींद है,
शेष किन्तु जोश है, शेष क्रुध्द रोष है, भर चुका पराग है, शेष तप्त आग है ।
भग्न सी समाधी पर, क्षुब्ध शेष राख पर, ये शहिद के विशुध्द रक्त का उबाल है !!
एक राष्ट्र भावना, एक ध्येय कल्पना, मौन मूक वंदना, राष्ट्र की उपासना,
एक मात्र साधना, एकमेव अर्चना । एक पन्थ, एक गान, एक राष्ट्र का निशान,
आज ऐक्य भाव क्षुद्र दीप का सवाल है !! आज स्नेह ढाल दो, दीप को संभाल दो,
धर्म, कर्म, त्याग से, प्राण के पराग से, बुध्दी युक्ति, शक्ति से एक राष्ट्र-भक्ति से ।
एक दीप से अनेक राष्ट्र दीप बाल दो, जल सके विराम हीन, ये शिखा विशाल है ॥

२२५) बढ चलो जवान

बढ चलो जवान, तुम बढ चलो जवान ।
सिंह से दहाडते, शत्रूए की पछाडते,
प्राणों पर खेलते, गोलों को झेलते,
जननी जन्मभूमि की, लूट न सके आन, बढ चलो जवान... ॥ १ ॥

शूर हो, सपूत हो, राणा के पूत हो,
मौके पर जूझते, वैसे शान्ति दूत हो,
छाती फौलाद की, वज्र भरे प्राण– बढ चलो जवान... ॥ २ ॥
वीर हो, सुधीर हो, अर्जुन के तीर हो,
कभी तुम शंकर हो, कभी महावीर हो,
आन बान शान से, करो शीशदान, बढ चलो जवान... ॥ ३ ॥
आज वीर वंश है, जागा स्वदेश है,
जय हमारे साथ है, और तिलक भाल है,
करना संकल्प है, मिट न सके मान– बढ चलो जवान... ॥ ४ ॥

२२६) विस्तृत भारत सारा

हिन्दुमहोदधि से हिमगिरि तक विस्तृत भारत सारा ।
ऋषि मुनियों का तपस्वियों का प्राणों से भी प्यारा ।
उत्तर में नगराज सुशोभित, दक्षिण में सागर लहराता ।
पूरब–पश्चिम करें आरती, मलयानिल शीतलता लाता ।
गंगा यमुना सिन्धु नर्मदा ने है जिसे सँवारा, विस्तृत भारत सारा... ॥ १ ॥
जहाँ पद्मिनी सती हुई थी, जन्मी अनुसुईया और सीता ।
महावीर, गौतम, नानक ओ, शंकर की यह धरा पुनिता ।
जहाँ कृष्ण ने ग्वाल बाल संग गोवर्धन था धारा, विस्तृत भारत सारा... ॥ २ ॥
जिसने दिया विश्व को समता, स्नेह और बन्धुत्व भावना ।
जन जन सुखी, दुःखी नही कोई, जड चेतन हो पूर्ण कामना,
सर्वे भवन्तु सुखिनः जीवन का आदर्श हमारा, विस्तृत भारत सारा... ॥ ३ ॥

२२७) चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि यह ग्राम है ।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है ॥
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, जय जहाँ माँ प्यारी है ।
जहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है ॥ हर बाला की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है... ॥ १ ॥
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथायें, गती कवि की वाणी है ।
ज्ञान यहाँ का गंगा–जल सा, निर्मल है अविराम है ॥ हर बाला की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है... ॥ २ ॥
इसके सैनिक समरभूमि में, गाया करते गीता है,
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता है,
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है ॥ हर बाला की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है... ॥ ३ ॥

२२८) मुक्त हो गगन सदा

मुक्त हो गगन सदा, स्वर्ग सी बने महीं ।
संघ–साधना यही, राष्ट्र अर्चना यही ॥
व्यक्ति–व्यक्ति को जुटा, दिव्य सम्पदा बढा,
देशभक्ति ज्वार ला, लोक शक्ति आ रही ।
है स्वतन्त्रता यही, पूर्ण क्रान्ति है सही ॥ संघ–साधना यही, राष्ट्र अर्चना यही ॥... ॥ १ ॥
भरत भूमि हिन्दु भू, धर्म भूमि मोक्ष भू,
अर्थ–काम सिध्दी भू, विश्व में प्रथम रही,
संगठित प्रयत्न से हो पुनः प्रथम वही ॥ संघ–साधना यही, राष्ट्र अर्चना यही ॥.. ॥ २ ॥
जाति, मत, उपासना, प्रान्त, देश, बोलियाँ,
विविधता में एकता–, राष्ट्र मालिका बनी ।
सैंकडो सलील मिला गंग–धार ज्यों बही ॥ संघ–साधना यही, राष्ट्र अर्चना यही ॥.. ॥ ३ ॥
नगर, ग्राम बढ चलें, प्रगति पन्थ चढ चलें,
सब समाज साथ लें, कार्य–लक्ष एक ही ।
माँ बुला रही हमें, आरती बुला रही ॥ संघ–साधना यही, राष्ट्र अर्चना यही ॥... ॥ ४ ॥

२२९) संघ चाहता, कि व्यक्ति

संघ चाहता, कि व्यक्ति, व्यक्ति का विकास हो ।
राज्य, अर्थ, रूढि–शक्ति, भेद का न दास हो, संघ चाहता. की व्यक्ति... ॥ १ ॥
मुक्त हो कदम बढे, अबाध प्रगति के लिए,
समग्र का विकास हो, अभिन्न भाग से लिए,
दीन की ब बेबसी, अमीर का विलास हो, संघ चाहता. की व्यक्ति.. ॥ २ ॥
सांस्कृतिक परम्परा, सजीव शक्ति स्त्रोत हो ।
अन्धकार रात्रि में अमर हो दीप ज्योति हो,
बन्धुभाव एकता, सुबुध्दि गर्व –हास हो ॥ संघ चाहता. की व्यक्ति.. ॥ ३ ॥

२३०) अरूणोदय हो चुका वीर अब

अरूणोदय हो चुका वीर अब, कर्म–क्षेत्र में जुट जायें ।
अपने खून पसीने द्वारा नवयुग धरती पर लायें ॥
आज पुनः दानव बल नंगा धीरज को ललकार रहा ।
और उधर सीमा पर तक्षक फन फैला फूँकार रहा ॥
असह दुराग्रह दुर्योधन का कुरूक्षेत्र व्रत अपनायें ॥ ... ॥ १ ॥
सभी दिशाओं में सद्गुण की विमल ज्योति फैलानी है ।
ग्राम नगर वन पर्वत ऊपर अरूण–ध्वजा फहरानी है.... ॥ २ ॥

सागर लहरों पर विवेक सा भारत का यश लहारायें ।
केशव की किरणों ने अब तक लाखों सुमन खिलायें है ॥
माधव के वासन्तिक झोंके कली खिलाते आये है ।
मधुकर की इस फुलवारी में अनुपम वैभव विकसायें ॥... ॥ ३ ॥
अब तक अगणित बाधाओं में हमने मार्ग बनाया है ।
कालकूट का पान किया है सेवाऽमृत छलकाया है ।
भरत भूमि के पग-पग पर फिर नूतन गंगा उमगायें ॥.. ॥ ४ ॥

२३१) अनेकता में ऐक्य मंत्र

अनेकता में ऐक्य मंत्र को, जन-जन फिर अपनाता है ।
धीरे धीरे देश हमारा, आगे बढता जाता है ॥
इस धरती को स्वर्ग बनाया, ऋषियों ने देकर बलिदान ।
उन्हीं के वंशज आज चले फिर, करने को इसका निर्माण ।
कर्म पंथ पर आज सभी को गीता ज्ञान बुलाता है... ॥ १ ॥
जाति, प्रान्त और वर्ग भेद के, भ्रम को दूर भगाना है ।
भूख बिमारी और बेकारी, इनको आज मिटाना है ।
एक देश का भाव जगा दें, सबकी भारत माता है... ॥ २ ॥
हमें किसी से बैर नही है, हमे किसी से भीति नही ।
सभी से मिलकर काम करेंगे, संगठना की रीत यही ।
नील गगन पर भगव ध्वज यह, लहर लहर लहराता है । .... ॥ ३ ॥

२३२) लोकमन संस्कार करना

लोकमन संस्कार करना, यह परम गति साधना है ।
और रचना गौण है सब, यह शिखर संयोजना है ॥...लोकमन संस्कार करना
कार्यक्रम की कल्पनायें, धारणायें, योजनायें,
एक ही उद्देश्य प्रेरित, तीव्र उत्कट कामनायें,
हर सुमन को खाद जल से, पूर्ण विकसित पालना है...हर शिखर संयोजना है.... ॥ १ ॥
राष्ट्र की अट्टालिका हो, विश्व में सर्वोच्च अनुपम,
गोद में होवे क्रियान्वित प्रगति के सोपन उत्तम,
किन्तु हर निर्माण के हित, ईट पक्की ढालना है..हर शिखर संयोजना है... ॥ २ ॥
परम वैभव स्वप्न सुन्दर, क्षितीज सा है दूर दुर्लभ,
किन्तु उस नन्दन कुसुम का, पा चुके माधुर्य सौरभ,
राह काँटों से भरी है; कुशलता से लाँघना है... हर शिखर संयोजना है.... ॥ २ ॥
राष्ट्र मन्दिर में विराजी मूर्ति सुन्दर मातृ-भू की ।
अर्चना में भेंट अर्पण, पूर्वजों ने शीष की की ।
आज उनकी मालिका में, फूल अनगिन डालना है, हर शिखर संयोजना है... ॥ ३ ॥

२३३) हम आजादी के रखवाले,

हम आजादी के रखवाले, बाधाओं की परवाह नहीं,
हम भारत माँ के सुत प्यारे, पद यश की हमको चाह नही ।
हम उस कानन के वासी है, आजादी जिसमें खिलती हैं,
समरस जीवन की गंगा की, धारायें पग-पग मिलती है ।
हम शाश्वत पथ के राही है, छल कपट हमारी राह नही, हम भारत माँ के सुत प्यारे, ... ॥ १ ॥
हम शांती प्रेरणा शक्ति सुवन, सत पथ पर निशिदिन बढते है,
गिरि पर्वत नदी दरारों में, हम निर्भय होकर चलते है,
लहरों की छाती चीर चले, कुछ संकट सिन्धु अथाह नही, हम भारत माँ के सुत प्यारे.... ॥ २ ॥
मुस्काते हरदम रहते है, मन में सुलगाये चिन्गारी,
आदर्शों की भीषण ज्वाला, भस्मित करती जडता सारी,
पर अमृत हम छलकाते है, फैलाते अन्तदहि नही, हम भारत माँ के सुत प्यारे... ॥ ३ ॥

२३४) सदियों के पश्चात आज फिर

धर्म कर्म के चरण बढे है, धरती पर इन्सान के ।
सदियों के पश्चात आज फिर, स्वर गूँजे निर्माण के ॥
धरती अपनी अम्बर अपना, सूरज सा हम सबको तपना,
कर्म-पंथ पर अविरत चलना, पूरा होगा नवयुग सपना ।
मंगल घट है रखना घर घर, प्रेम ज्ञान सज्ञान के ॥ सदियों के पश्चात आज फिर.. ॥ १ ॥
संकल्पों ने ली अंगडाई, जागी आत्म ज्ञान तरूणाई,
पुरश्चरण की बेला आई, झूम उठी आशा अमराई,
खुलते जाते नये क्षितिज अब, ज्ञान और विज्ञान के ॥ सदियों के पश्चात आज फिर.. ॥ २ ॥
श्रम संयम का सौरभ उडता, दूर हुई जीवन की जडता,
लेकर ज्ञान मशाल हाथ में, मिला कदम से कदम साथ में,
परिजन बन्द कपाट खोलते, अन्धकार अज्ञान के ॥ सदियों के पश्चात आज फिर.. ॥ ३ ॥
आदर्शों की फसल ना सूखे, रहे न जन में कोई भूखे,
समता भाव हृदय में जागे, गले लगाये ये बढकर आगे,
परहित में जो अर्पित रहता, वही निकट भगवान के ॥ सदियों के पश्चात आज फिर.. ॥ ४ ॥

नवीन गीत

२३५) हे जन्म भूमि तेरे

हे जन्म भूमि तेरे, चरणों में हों समर्पित,
मेरे जनम जनम के, कर्तव्य कर्म सारे ।
तेरे लिये जिये है, तेरे लिये जियेंगे,
हों प्राण भी विसर्जित, तेरे लिये हमारे ॥
ये तन दिया है तूने, ये मन दिया है तूने,
हर साँस दी है तूने, जीवन दिया है तूने,
मेरा नही है कुछ भी, मैं पुत्र मात्र तेरा,
तेरा ही रूप मेरा, गुणधर्म सब तुम्हारे ॥ हे जन्म भूमि तेरे
कितने ही विघ्न आये, आपात काल लायें,
कारा की यातनाये, ले मृत्यु दूत आये,
पर हम अडिग रहे माँ, तेरी ही थी ये करूणा,
सन सह लिया है जननी, तेरी शक्ति के सहारे ॥ जन्म भूमि तेरे
जय का प्रभात आया, शासन का मोह लाया,
पर हमको तेरी सेवा का पन्थ ही सुहाया ।
हे माँ हमें वही दें, चरणों की धूल ही दे,
तेरी भक्ति में ही बीते, पल क्षण सभी हमारे ॥ जन्म भूमि तेरे....

२३६) मातृ चरणों में समर्पित

मातृ चरणों में समर्पित, हैं युगों की साधना ।
नित्य नूतन यश खिले तव यह अकिंचन कामना ॥
शीश तब हिमगिरि सुशोभित पग मगदधि धो रहा,
नीर पावन सरित का तब पी चराचर जी रहा,
शस्य श्यामल भूमि प्यारी, हम करें आराधना.... ॥ १ ॥
जो भी आया ले लिया, हर्षित उसे तू गोद में,
पिल कर निज क्षीर पाला है उसे आमोद में,
विश्व में बेजोड तव वैशिष्ट्य माँ है मानना... ॥ २ ॥
कठिन झंझावात में भी तू अडिग हिमवान बन,
है दिया जग को अपरिमित संस्कृति औ ज्ञान धन,
अखिल विश्वाधार औ सुख शान्ति की हो सर्जना... ॥ ३ ॥
तव चरण की धूलि पर माँ कोटिशः शिर है समर्पित,
अर्चना के दीप जननी कोटिशः है आज अर्पित,
कौन है जग में करे जो आज तब अवमानना.. ॥ ४ ॥

२३७) हम भारत माँ की सन्तान

हम भारत माँ की सन्तान,
बढे चीर कर हर तूफान ॥
शील समा है बोलों में, गिनती है अनमोलों में,
हम है जीवन का वरदान.... ॥ १ ॥
हम अनेकता में भी एक, हम संकट में ध्रुव की टेक,
हम आजादी की मुस्कान.... ॥ २ ॥
दौर प्रगति का हम आगे, साथ समय के हम भागे,
हम है बलिदानों की आन... ॥ ३ ॥
हम है सुख दुःख से ऊपर, सिर अम्बर पग है भू पर,
हम निर्भर तोडें चट्टान... ॥ ४ ॥

२३८) हम कंचन हैं काँच नही है

हम कंचन हैं काँच नही है, ले लो अग्नि परिक्षा ।
सुख की नही कष्ट सहने की, हमने ली है दीक्षा ॥
चाहे ठोक बजाकर देखो, चटके पात्र नहीं है ।
अंगारों में तपे हुए है, मिट्टी मात्र नही है ।
दृढ बनने के लिए सही है, हमने बहुत तीतीक्षा ॥ ॥ १ ॥
पथ हारे इन्सान नही है, हम है वीर विजेता ।
क्रान्ति रक्त में बहती है, हम हैं इतिहास सृजेता ।
तूफानों में पलने की, हमने पायी है शिक्षा ॥ ॥ २ ॥
श्री समृध्दी पाने की, श्रम का सागर पुनः मथेंगे ।
अगर जरूरत होगी, तारे तोड गगन से लेंगे ।
है पुरूषार्थ प्रबल, माँगेंगे कभी नही हम भिक्षा.. ॥ ३ ॥
उतरेंगे हम खरे सदा, हर एक कसौटी पर ही ।
पांचजन्य का काम करेगा, आज हमारा स्वर हो ।
युग का वेद व्यास करेगा, अपनी कार्य समीक्षा.. ॥ ४ ॥

२३९) संस्कृति सब की एक चिरंतन

संस्कृति सब की एक चिरंतन, खून रगों में हिन्दु है ।
विराट सागर, समाज अपना, हम सब इसके बिन्दु है ।
राम कृष्ण गौतम की धरती, महावीर का ज्ञान यहाँ,
वाणी खंडन मंडन करती, शंकर चारों धाम जहाँ,
जितने दर्शन राहे उतनी, चिंतन का चैतन्य भरा,
पंज खालसा गुरू-पुत्रों की, बलिदानी यह पुण्य धरा,

अक्षय वट अगणित शाखाएँ, जड में जीवन हिन्दु है ॥ संस्कृति सब की.....
कोटि हृदय है भाव एक है, इसी भूमि पर जन्म लिये,
मातृ-भूमि यह कर्म-भूमि यह, पुण्य भूमि हित मरे जिये,
हारे जीते संघर्षों में, साथ लडे बलिदान हुए ।
काल चक्र की मजबूरी में रिश्ते नाते बिखर गये,
एक बडा परिवार हमारा, पुरखे सबके हिन्दु हैं ॥ संस्कृति सब की....
सबकी रक्षा धर्म करेगा, उसकी रक्षा आज करें,
वर्ग भेद मतभेद मिटा कर, नवरचना निर्माण करें ॥
धर्म हमारा जग में अभिनव, अक्षय है अविनाशी है,
इसी कडी से जुडे हुए हम युग से भारतवासी है ॥
थाह अथाह जहाँ की महिमा गहरा जैसा सिन्धु है ॥ संस्कृति सब की...
हरिजन गिरिजन वासी बन के नगर ग्राम सब साथ चलें,
ऊँच नीच का भाव मिटाकर समता के सद्भाव बढे,
ऊपर दिखते भेद भले हों ज्यों बगियाँ में फूल खिले,
रंग बिरंगी मुस्कानों को जीवन रस पर एक मिले,
संजीवनी रस अमृत पीकर मृत्युंजय हम हिन्दु है ॥ संस्कृति सब की....

२४०) भारत एक हमारा

एक संस्कृति एक धर्म है, एक हमारा नारा,
एक भारती की सन्तती हम, भारत एक हमारा ।
दैनिक शाखा संस्कारों से, सीखे नित्य नियम अनुशासन,
मातृभूमि प्रति अक्षय निष्ठा, करें समर्पित हम तन मन धन,
भरत भूमि का कण-कण तृण-तृण, है प्राणों से प्यारा.....भारत एक हमारा.... ॥ १ ॥
रूढी कुरीति और विषमता, उच्च नीच का भाव मिटाकर,
संगठना की शंख ध्वनी से, बन्धु बन्धु का भाव जगाकर,
नव जागृति का सूर्य उगा दे, है संकल्प हमारा.....भारत एक हमारा.... ॥ २ ॥
जाति पंथ का भेद भूलकर, प्रान्त मोह का भूत भगाये,
भाषाओं का अहम् मिटाकर, एक राष्ट्र का भाव जगाये,
हिन्दु हिन्दु सब एक रहे मिल, है कर्तव्य हमारा...भारत एक हमारा.... ॥ ३ ॥
अपने शील तेज पौरूष से, करे संगठित हिन्दु सारा,
धरती से लेकर अम्बर तक, गूँज उठे जय भारत नारा,
प्रतिपल चिंतन ध्येय देव का, जीवन कार्य हमारा, भारत एक हमारा.... ॥ ४ ॥

२४१) राष्ट्र देव का ध्यान धरें

अन्तर्मन के भाव संजोकर, राष्ट्र देव का ध्यान धरें ।
अपना तन मन अपना जीवन, इस वेदी पर दान करें,
जिसकी रक्षा करने की हो, देवों के अवतार हुए,
जिसके पावन कर्म देवता, संस्कृति के आधार हुए,
पूत देववाणी कहलायी, जिनसे यह संस्कृति भाषा,
देव धरा पर कभी न पनपी, दुष्ट दानवों की आशा,
इसी राष्ट्र का निज पौरूष से, विक्रम से निर्माण करें..... ॥ १ ॥
जिसकी पूजा की वीरों ने, सदियों अपने प्राण से,
माँ बहनों ने शिशु बालों ने, निज अनुपम बलिदानों से,
जिसकी जय-जय कहते-कहते लाखों ने फाँसी पायी,
जिसके आँगन में स्वतन्त्रता, देवी ने लोरी गायी,
इसको अजर अमर करने को, फिर सशक्त बलवान बनें.... ॥ २ ॥
सबसे उर्वर इसकी धरती, सबसे शुचि इसका पानी,
अन्नपूर्णा लक्ष्मी है यह सिंहवाहिनी मर्दानी,
विविध अन्न फल-फूल यहाँ पर, उगते आये सदा अपार,
स्वर्ण रजत हीरे मोती की, यह वसुधा अक्षय आगार,
अपने श्रम, अपने उधम से, फिर इसको धनवान करें... ॥ ३ ॥
ऊँच नीच के भेद भुला दें, बंधु-बंधु सब एक रहें,
अनुशासन से हृदय सींच कर, पौरूष के अतिरेक बनें,
राष्ट्र हेतु सर्वस्व समर्पण को, जन-जन तैयार रहें,
हृदय-हृदय से राष्ट्र भक्ति की, बहती अविरल धार रहें,
संगठना से सारे जग में, फिर इसको छविमान करें.... ॥ ४ ॥

२४२) हिन्दु हम सब एक

जीना है तो गरजें जग में, हिन्दु हम सब एक ।
उलझे सुलझे प्रश्नों का है, उत्तर केवल एक ॥
केशव के चिन्तन दर्शन ने, संगठना का मंत्र सिखाया ।
आजीवन अविराम साधना, तिल-तिल कर सर्वस्व चढाया ॥
एक दीप से जला दूसरा । जलते दीप अनेक ॥ हिन्दु हम सब एक...
भागीरथ के त्याग तपों से, आई भू पर गंगाधारा ।
संघरूप में बही जान्हवी, माधव ने है सतत सँवारा ।
हुए यहीं पर विकसित कितने, तट पर तीर्थ अनेक ॥ हिन्दु हम सब एक...
मधुकर की दो टूक गर्जना, हिन्दु शक्ति ललकार खडी है,
गिरि जंगल में ग्राम नगर में, दावानल सी भडक रही है ॥

जाग रहा है आज देश का, विस्तृत सुप्त विवेक । हिन्दु हम सब एक...
भाषा भूषा मतवादों की, बहुरंगी यह परम्परा,
सर्व धर्म सम भाव सिखाती, ऋषि मुनियों की देवधरा ॥
इन्द्र धनुष की छटा श्रोत में, शुभ्र रंग है एक ॥ हिन्दु हम सब एक...
स्नेह समर्पण त्याग हृदय में, सभी दिशा में लायेंगें ।
समता की नवजीवन रचना, हम सबको अपनायेंगे ॥
आज समय की यही चुनौती । भूलें भेद अनेक ॥ हिन्दु हम सब एक...

२४३) इसी देश से हमको प्यार

इसी देश से हमको प्यार, सर्वस्वापर्ण को तैयार ।
जन जागृति को सफल बनायें, विश्व विजेता हम बन जायें ।
देव गणों का आशिष हम पर, रिपु दल को हो अब संहार ॥... ॥ १ ॥
रिपु दल है जो हिंदु विरोधक, करनी जिनकी राष्ट्र विघातक ।
कट जायें उनके सिर सत्वर, संघ शक्ति का प्रबल प्रहार ॥..... ॥ २ ॥
संगठना का मंत्र हृदय में, त्याग तपस्या स्नेह कार्य में,
गुणी जनों का जग में आदर, सगुणों का हम ले आधार ॥... ॥ ३ ॥
अपनी शक्ति बुध्दी कुशलता, विकसित बन जीवन हो समिधा,
अर्पित हो हित भारत माता, ध्येय पूर्ति तब हो साकार ॥.... ॥ ४ ॥

२४४) लक्ष्य लक्ष्य बढते चरणोंके

लक्ष्य लक्ष्य बढते चरणोंके, साथ चले है कोटी चरण ।
दूरध्येय मंदिर हो फिरभी, मन में है संकल्प सघन ॥ ध्रु ॥
व्रती भगीरथने यत्नोंसे, गंगा इस भू पर लाई ।
गंगधार सी संघधार भी, भरत भूमी पर है आयी ।
अगणित व्रती भगीरथ करते, नित्य निरंतर प्राणार्पण । मन में है संकल्प सघन ॥ १ ॥
चटटानोंसे बाधाओं पर, चलो रचे हम शिल्प नया ।
सेवा के सिंचन से मरूभू, पर विकसाए तरूच्छाया ।
सद्भावोंसे संस्कारोंसे, भर देंगे यह जनगणमन । मन में है संकल्प सघन ॥ २ ॥
जनजनही अब जगन्नाथ बन, रथको देता नयी गती ।
मार्ग विषमताका हम छोडे, प्रकटाए समरस नीती ।
हिंदू ऐक्यका सूरज चमके, भेदभावका हटे ग्रहण । मन में है संकल्प सघन ॥ ३ ॥

२४५) हिन्दु जगे तो विश्व जगेगा

हिन्दु जगे तो विश्व जगेगा, मानव का विश्वास जगेगा ।
भेद भावना तमस हटेगा, समरसता अमृत बरसेगा ।। हिन्दु जगेगा....विश्व जगेगा... ।। धृ ।।
हिन्दु सदा से विश्व बंधु है, जड चेतन अपना माना है ।
मानव पशु तरू गिरि सरिता में. एक ब्रह्म को पहचाना है ।
जो चाहे जिस पथ से आये, साधक केंद्र बिंदु पहूँचेगा ।। हिन्दु जगेगा....विश्व जगेगा... ।। १ ।।
इसी सत्य को विविध पक्ष से, वेदों में हमने गाया था ।
निकट बिठाकर उसी तत्व को, उपनिषदों में समझाया था ।
मन्दिर मठ गुरूद्वारे जाकर, यही ज्ञान सत्संग मिलेगा ।। हिन्दु जगेगा....विश्व जगेगा... ।। २ ।।
हिन्दु धर्म वह सिन्धु अतल है, जिसमें सब धारा मिलती है ।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष की, किरणें लहर-लहर खिलती है ।
इसी पूर्ण में पूर्ण जगत का, जीवन मधु संपूर्ण फलेगा ।। हिन्दु जगेगा....विश्व जगेगा... ।। ३ ।।
इस पावन हिन्दुत्व सुधा की, रक्षा प्राणों से करनी है ।
जग को आर्य शील शिक्षा, निज जीवन से सिखलानी है ।
द्वेष, त्वेष तब सभी हटायें, पाञ्चजन्य फिर से गूँजेगा ।। हिन्दु जगेगा....विश्व जगेगा... ।। ४ ।।

२४६) जय घोष संस्कृतिका

जय घोष संस्कृतिका, हम आज मिल करेंगे ।
हम धर्म के पुजारी, जग को सुखी करेंगे ।। धृ ।।
विज्ञान के परों में, दे शक्ती संस्कृती की ।
अध्यात्म नींव होगी, समृध्द हिंदू भू की ।
हम विश्व के विभव की, व्याख्या नही लिखेंगे ।। १ ।।
हम गर्व से कहेंगे, हिंदुत्व प्राण अपना ।
सहयत्न से हो पूरा, अपना महान सपना ।
यह संघशक्ती दैवी, हम साधना करेंगे ।। २ ।।
उलझे हुए हृदयका, फिर हास्य लौट आए ।
भटके हुए पथिक को, सन्मार्ग फिर दिखाए ।
सेवा स्वभाव अपना, हम नित्य स्मरेंगे ।। ३ ।।
आकाशमें निनादित, एकात्म स्वर हमारा ।
वर्षोंकी साधना का, सार्थक प्रयास सारा ।
है दृष्टी लक्ष्य पथ पर, विजयी चरण धरेंगे ।। ४ ।।

२४७) यहीं मंत्र है यही साधना

यहीं मंत्र है यही साधना, ग्राम ग्राम में जायेंगे,
हिन्दु हिन्दु जुटा जुटा कर, सबको शाखा लायेंगे, सबको शाखा लायेंगे.... ॥ धृ ॥
विस्मृति में जो दबा पडा वह, समाज हम चेतायेंगे,
मानस पर है जमी राख जो, सत्वर उसे हटायेंगे,
चिनगारी प्रकटेगी उसमें, अपने दोष जलायेंगे, सब को शाखा लायेंगे.... ॥ १ ॥
अपना देश धरित्री प्यारी, माँ का रूप निहारेंगे,
हम है सारे सपूत उसके, बन्धु भाव विकसायेंगे,
उच नीच सब भेद हटाकर, समता ममता लायेंगे, सब को शाखा लायेंगे... ॥ २ ॥
अपने पुरखों की धरती का, बीता गौरव लायेंगे,
इसी हेतु हम अपना सब कुछ, अर्पित करते जायेंगे,
केशव के चिंतन में था जो, हिन्दु राष्ट्र सरसायेंगे, सब को शाखा लायेंगे... ॥ ३ ॥

२४८) राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम्

राष्ट्र की जय चेतना का गान वन्देमातरम ।
राष्ट्र भक्ति प्रेरणा का गान वन्देमातरम् ॥
वंशी के बहते स्वरों का प्राण वन्देमातरम् ।
झल्लरी झनकार झनके नाद वन्देमातरम् ।
शंख के संघोष का सन्देश वन्देमातरम् ।... ॥ १ ॥
सृष्टी बीज मंत्र का है मर्म वन्देमातरम् ।
राम के वनवास का है काव्य वन्देमातरम् ।
दिव्य गीता ज्ञान का संगीत वन्देमातरम् ... ॥ २ ॥
हल्दीघाटी के कणों में व्याप्त वन्देमातरम् ।
दिव्य जोहर ज्वाल का है तेज वन्देमातरम् ।
वीरों की बलिदान की हुंकार वन्देमातरम् ।.. ॥ ३ ॥
जन-जन के हर कण्ठ का हो गान वन्देमातरम् ।
अरिदल थर-थर काँपे सुनकर नाद वन्देमातरम् ।
वीर पुत्रों की अमर ललकार वन्देमातरम् ॥... ॥ ४ ॥

२४९) चलें चलें ! चलें चलें हम निशि दिन अविरत

चलें चलें ! चलें चलें हम निशि दिन अविरत चलें चलें हम सतत चलें ।
कर्म करें हम निरलस पल-पल, दिनकर सम हम सदाँ चले । ॥ धृ ॥
सोते नर का भाग्य लुप्त है, जागे नर का भाग्य जागता ।
उठने पर वह झट से उठता, पग बढते ही वह भी बढता ।
आत्म वचन यह ऋषि मुनियों का, नर है नर का भाग्य विधाता ।

पुरखों की यह सीख समझकर. कर्मलीन हो सदा चलें.... ॥ १ ॥
आर्य धर्म को पुनः प्राणमय करने निकले घर से शंकर ।
केरल से केदारनाथ तक, घुमें गुमराहों पर जयकर ।
विचरे अचल वनांचल मरूथल, ऐक्य-तत्व का शंख बजाकर ।
उस दिग्विजयी की गति लेकर, सतत चलें कर्मण्य बनें.... ॥ २ ॥
गाडी मेरा घर है कहकर, जिसने की संचार तपस्या ।
मैं नही तू ही तू यह जपकर, जिसने की माँ की परिचर्या ।
जय ही जय की धुन से जिसने, पूरी की जीवन की यात्रा ।
उस माधव के अनुचर हम नित, काम करें अविराम चलें.... ॥ ३ ॥

२५०) व्यक्ति व्यक्ति में जगाये राष्ट्र चेतना

व्यक्ति व्यक्ति में जगाये राष्ट्र चेतना ।
जन मन संस्कार करें यही साधना, साधना....नित्य साधना....साधना....अखण्ड साधना.. ॥ धृ ॥
नित्य शाखा जान्हवी पुनीत जल भरा,
साधना की पुण्य भूमि शक्ति पीठ का,
रजकणों में प्रकट दिव्य दीपमालिका, हो तपस्वी के समान संघ साधना..... ॥ १ ॥
हे प्रभू तू विश्व की अजेय शक्ति दे,
जगत हो विनम्र ऐसा शील हमको दें,
कष्ट से भरा हुआ यह पंथ काटने, ज्ञान दे की हो सरल हमारी साधना..... ॥ २ ॥
विजय शालिनी संघ बध्द कार्य शक्ति दें,
दिव्य और अखण्ड ध्येय निष्ठा हमको दें,
राष्ट्र धर्म रक्षणार्थ वीरव्रत स्फुरे, तव कृपा से हो सफल हमारी साधना..... ॥ ३ ॥

२५१) इस धरती को जिसने माना

इस धरती को जिसने माना, माँ प्राणो से प्यारी,
हिन्दु वही है हिन्दुराष्ट्र का सच्चा वही पुजारी, भारत माँ जयकारी..... ॥ धृ ॥
हिम मण्डित सागर से वेष्टित, स्मित वदना मनहारी,
स्नेह पियूष बहे नद नद में, हरियाली शुभकारी,
ऐसी माँ की पीडा लखकर, माँ पुत्रों का क्रन्दन सुनकर,
मौन रहे और चुप रह जाये, यह ना हो लाचारी...भारत माँ जयकारी... ॥ १ ॥
जितने मत उतने ही पथ है, पूजा की विधी न्यारी,
खान पान भाषा अनेकता, यह पहचान हमारी,
हिन्दु भाव का यह दृढ बंधन, जन-जन को देता सुख रंजन,
इसे बचाने करें संगठन, शस्त्र शास्त्र कर धारी....भारत माँ जयकारी.... ॥ २ ॥
गिरि वन ग्राम नगर घर-घर से, जाग उठे नर नारी,
जाग उठी है हिन्दु दिव्यता, बिन से अत्याचारी,

तन–मन–धन जीवन कर अर्पण, जीवन के क्षण–क्षण का तर्पण,
भोग नही अर्पण में है सुख, सीखे दुनिया सारी, भारत माँ जयकारी.... ॥ ३ ॥

२५२) चल तू अपनी राह पथिक चल

चल तू अपनी राह पथिक चल, होने दे होता है जो कच्छ,
इस होने का, हो निर्णय क्या, तुझको.....तुझको.....तुझको.....विजय पराजय से क्या !!!!
मेघ उमडते हैं....अम्बर में.....भँवर उठ रहे हैं.....सागर में...
आँधी और तूफान डगर पर, तुझको तो केवल चलना है,
चलना ही है तो फिर क्या, तुझको.....तुझको.....तुझको.....विजय पराजय से क्या !!!!
अरे थक गया क्यूँ....बढता चल...उठ संघर्षों से....लढता चल....
जीवन विषम पंथ चलता चल, अडा हिमालय हो यदि आगे,
चढू या लौटू ? यह संशय क्या, तुझको.....तुझको.....तुझको.....विजय पराजय से क्या !!!!

२५३) आराधना, आराधना,

आराधना, आराधना, आराधना, आराधना,
मातृचरणों में समर्पित, भक्ति संकुल अर्चना ॥ ध्रु ॥
पुण्य सलिला सरित पूजित, सुरभी रज दे देह निर्मित,
मलय शीतल वायुसेवित, तेज की ध्रुव साधना.... ॥ १ ॥
मनु भरतसे, आज तक के, अगीन पुरखों के हृदय के,
रक्त के शुचि श्वेत कण से, सज्ज प्रेरित प्रेरणा... ॥ २ ॥
कर्म से रत कामना हो, ध्येय भावित भावना हो,
मरण जीवन हो निरन्तर, जननी तव पद प्रार्थना..... ॥ ३ ॥

२५४) हो जाओ तैयार साथियों हो जाओ तैयार

हो जाओ तैयार साथियों हो जाओ तैयार,
अर्पित कर दो तन मन धन, माँग रहा बलिदान वतन,
अगर देश के काम न आए, तो जीवन बेकार, तो जीवन बेकार.... ॥ १ ॥
सोचने का समय गया, उठो लिखो इतिहास नया,
बन्सी फेक उठा लो अपनी, हाथों में हथियार, हाथों में हथियार.... ॥ २ ॥
काँप उठे धरती अम्बर, और उठा लो ऊँचा स्वर,
कोटि कोटि कण्ठों से गूँजे, भारत की जयकार, भारत की जयकार.... ॥ ३ ॥
तूफानी गति रूके नही, शीश कटे पर झुके नही,
तने हुए माथे के सम्मुख, ठहर न पाती हार, ठहर न पाती हार..... ॥ ४ ॥

२५५) हर-हर बम बम, हिन्दु बाकुरें हैं हम

हर-हर बम बम, हिन्दु बाकुरें हैं हम
चिर विजय की चाह में, बढ रहें है ये कदम ।
देश को उठायेंगे, हिन्दु वीर धीर हम ॥
महान हिन्दु धर्म की, परम्परा महान है,
युगों युगों से देश की, दिव्य आन बान है ।
युध्द हो की शान्ति हो, कर्म धर्म क्रान्ति हो,
विश्व जानता है ये, हम नही किसी से कम..... ॥ १ ॥
काल चक्र वक्र है, पूर्णिमा अमा न हो,
दिशा दिशा प्रहार है, खण्ड खण्ड माँ न हो,
अब न हीन दीन हम, रह न जाये कोई भ्रम,
काल के प्रवाह को, मोडकर ही लेंगे दम... ॥ २ ॥
वंशी की तान है, गीत गीता ज्ञान है,
कदम-कदम सधा हुआ, तेज है उफान है,
आँख-आँख ज्वाल है, भुजा-भुजा कृपाण है,
शत्रू देश के सुनो हैं, जयी जवान हम... ॥ ३ ॥

२५६) भारती के चिरविजय का नाद नभ में भर रहा

भारती के चिरविजय का नाद नभ में भर रहा ॥ धृ ॥
ध्वनी पणव का धिनन धिक धिक, फिर शुभंकर बज रहा,
केसरी ध्वज की प्रभा से, नित्य अंबर सज रहा,
युवक गण कटिबध्द होकर, जलधी में बिंदुत्व खोकर,
संचलन से नभ निरन्तर, कम्प कम्पित कर रहा.... ॥ १ ॥
गर्व से जय गीत माँ का, पुत्र उसके गा रहे,
समय से संप्राप्त होकर, हर्ष से बली जा रहे,
एक इनकी विजय गीता, एक इनकी वीर गाथा,
एक कम्पन हृदय का, एक इनका स्वर रहा... ॥ २ ॥
जलधी तक फैला धरातल, सर्वदा निज तंत्र हो,
देवतात्मा गिरि हिमालय, नित्य ही भयमुक्त हो,
इस प्रतिज्ञा को लिये, दृढ भुजाओं में बल लिये,
संगठन का मन्त्र इनके, हृदय से संचर रहा... ॥ ३ ॥